# फुल बूट



मेरा मतलब फुल बूट से यह है, कि असली फुल बूट, अर्थात् वह बूट नहीं, जिसे सब लोग भूल से फुल बूट कहते हैं। बल्कि वह फुल बूट, जो घुटने तक आता है। बहुत ही मजबूत चमड़े का बना होता है। पेन्डली पर चुस्त होने के कारण उसका पहनना बहुत मुश्किल हो जाता है। क्योंकि उसमें न तो फीते होते हैं, न हुक्क होते हैं। और न घुडियाँ होती हैं। बल्कि असल में फुल बूट मोजे की तरह का होता है। फर्क यह होता है कि मोजा पहनने के समय बढ जाता है और फैलता है। मगर फुल बूट कड़े चमड़े का होने के कारण रत्ती भर भी नहीं घटता बढता। पंजे की नोक आगे करके और एँड़ी समेट कर कोशिश की जाती है कि पैर बिलकुल सीधा होजाय! फिर उसके बाद पैर फुल बूट में डाला जाता है। लेकिन अगर थोड़ा भी आगे आकर पैर सीधा न रहे और रुक जाय तो फिर समझ लीजिये, कि पूरी मुसीबत आ गई। पैर वहीं का वहीं फँस जायगा। न तो आगे बढेगा और न निकलेगा। थोड़ी सी भूल और और कशमकश मे सचमुच फँस जाता है। इस तरह कशमश से, खून के चक्कर के कारण पैर कुछ सूज जाता है या मोटा पड़ जाता है, और फिर यह हाल हो जाता है, कि उसका उस जगह से हिलना-डुलना और खिसकना मुश्किल हो जाता है। यह कोई विशेष बात नहीं है क्योंकि हर एक आदमी,

जिसने फुल बूट कभी पहना नहीं है अगर पहली बार फुल बूट पहने, तो वह पूरी तरह फँस जायगा। जब अच्छी तरह पैर फँस जाय, ऐसी हालत में अगर कोई जोर लगाता है, तो किसी-किसी समय पैर उतर जाता है, या मोच खा जाता है फिर और इसके अलावा कोई चारा नहीं रह जाता, कि जूता काटकर निकाला जाय। इसलिए मेरी विनती यह है कि फुल बूट के बारे मे इन बातों को सही बातें ही समझिये। और सच भी यह है कि इन बातों में थोड़ा सा भी कहानीपन नहीं है। इसकी सचाई को जानने का अच्छा ढङ्ग यही है कि एक बार अपने पैरों का फुल बूट पहन कर देख लीजिये।

मै एन्ट्रेन्स का इम्तहान देकर आया था, और नतीजे की बाट देख रहा था। घर पर दिन भर बेकार ही पड़ा रहता था। इन्ही दिनो एक अजीज का विवाह पड़ा। मुझे इस विवाह से दिलचस्पी हो सकती थी तो केवल इसलिए कि मेहमान आयेंगे। उनके लजीज नाश्ते तैयार होंगे, और मैं इन्तजाम करने वाला हूँगा। हुआ भी यही।

× × ×

घर में औरतों की बेहद भीड़ थी। कुछ औरतें इस बात को मानती थीं, कि मुझसे अभी पर्दा नही करना चाहिये। और कुछ पर्दा करती थीं। कुछ भी हो, मैं नाश्ते के सम्बन्ध में भीतर आ-जा रहा था। कभी-कभा किसी औरत से आँख-मिचौनी भी हो जाती थी।

बाहर मेहमानों को नाश्ता खिलाकर भीतर पहुँचा था। और खड़े-खड़े एक रकाबी की गुलाब जामुन खतम कर रहा था कि मुझे नोटिस मिली, जल्द बाहर जाओ। क्योंकि दूल्हा वालियाँ आरही हैं। नही, नहीं, बल्कि आगई। मकान का एक ही तो आम रास्ता था। दूसरा एक कमरे में होकर मरदाने कमरे में निकला था। बिलकुल साफ है कि मेरा यही रास्ता था, कि इतने में मालूम हुआ कि इधर से भी आ रही हैं। कारण यह था कि किसी नासमझ ने एक गाड़ी औरतें इस ओर भी उतार दी थीं। मै दोनो ओर से घिर गया और अपनी बचत इसी में देखी कि पास की एक कोठरी में, गुलाब जामुन की तश्तरी समेत पनाह लूँ।

बहुत जल्दी मालूम हुआ, कि सभी औरतें निकल कर मकान के बड़े कमरे में पहुँच गई। लाइन साफ होते ही मैं उस अंधेरी कोठरी मे निकला। एक बड़ी सी गुलाब जामुन मैंने सबसे अन्त मे खाने के लिए छोड रक्खी थी। मैंने देखा कि अब केवल वही बच गई है। रकाबी में शीरा भी काफी था। इसलिए मैंने बड़ी कारीगरी के साथ हाथ की गुलाब जामुन को तश्तरी में चक्कर देकर इस तरह इधर-उधर लपेटा कि तश्तरी साफ हो गई। तश्तरी रखकर शीरे को गुलाब जामुन पर सँभालता हुआ मै इस तेजी से उस कमरे की ओर लपका जिसमें से होकर मरदानी कोठी के लिए रास्ता था। कमरे के बीचो-बीच एक लडकी से मेरी टक्कर होते-होते बची। दोनों का आमना-सामना हुआ, लेकिन इसके पहले, कि वह सँभल कर मुँह छिपाकर भागे ·· समय का जरूरत समझिये, या शरारत ···मैंने बिना सोचे-समझे उसे पकड़ कर वही शीरे मे डूबी हुई गुलाब जामुन उसके मुँह में ठूँस दी। यह

काम आँखों की भूल से था, जिसका उस कशमकश में नतीजा यह निकला कि उधर मेरा सारा हाथ भर गया, और उधर उसके मुँह पर गुलाब जामुन का शीरा पुत उठा। शायद उसके जर्क-बर्क कपड़े भी खराब हो गये। वह तेजी से निकलकर जा चुकी थी, और मैं उधर भागा। उसके हाथ में एक रंग-बिरंगी तितली थी जो इस जबर्दस्ती की दावत में मारी गई। शायद वह उसी को पकड़ने मे लग गई थी, और औरतें आगे निकल गई थीं। मैंने सोचा, अब कोई नहीं रहा, इसलिये उधर चला आया।

कुछ भी हो, इस शरारत से दिल में बड़ी उमंग पैदा हुई और जान और दिल, दोनों को ही बेहद आराम मिला। क्योंकि बहुत अच्छी सूरत शकल की लड़की थी। उसे गुलाब जामुन न खिलाना असभ्यता होती। बड़ी देर तक उस घटना का ध्यान आता रहा। रह-रहकर उसका सहसा ठिठक जाना, और अपना बड़ी तेजी से शरारत कर डालना औरतों के सामने आ जाता था। वैसे तो बहुत सी शरारतें की थीं, लेकिन किसी शरारत ने ऐसी दिलचस्पी पैदा नहीं की थी और न किसी शरारत की सफलता पर दिल को इतनी खुशी हुई थी।

जब बरातियों को स्टेशन पर विदा करने गया तब उसी लड़की की एक झलक और देखी। वह गाड़ी में थी और शीशे के उस पार से शायद यह समझकर मुझे पहचानने की कोशिश कर रही हो, कि मैं उसे नहीं देख रहा हूँ। दो एक दिन उस शरारत की याद रही, फिर बात आई गई होगई। इतना तक मालूम न हो सका कि कौन थी, और किसकी लड़की थी।

---

# मिस सिंह

एन्ट्रेन्स पास करने और कालिज में दाखिल होने से पहले अर्थात् पढाई खतम करने से पहले मेरी किस्मत में नौकरी भी लिखी थी। इसके कारण बताने की जरूरत नहीं। नौकरी भी ऐसी जगह थी जो छोटा सा कसबा था और जहाँ से अस्पताल के एक डाक्टर साहब या उसी जगह के एक स्कूल के एक मास्टर साहब के अलावा मन वहलाव का कोई दूसरा साधन न था। लेकिन जिस मुहल्ले में मैं रहता था वह अच्छे लोगों की बस्ती थी। वे थे तो गरीब, पर मुहब्बत करने वाले लोग थे। सवेरे शाम मेरे कमरे में आकर बैठते और बातें करते। बहुत जल्द इन लोगों में मन लगने लगा।

× × ×

एक दिन की बात है कि शाम के वक्त अस्पताल पहुँचा। डाक्टर साहब अपने क्वार्टर के सामने बैठे थे। दूसरा कोई न था। मैं पहुँच जाता तो उनका भी मनबहलाव हो जाता था। मुझे आये अधिक समय न बीता था कि बराबर के जनाना अस्पताल की लेडी डाक्टर किसी रोगी के बारे में सलाह लेने आईं। वे बिलकुल अनुभव-हीन थीं और पास करते ही यहाँ तैनात कर दी गई थीं। इसलिये वे प्राय: डाक्टर साहब से सलाह लेती रहती थीं। डाक्टर साहब ने रस्म के तौर पर मेरा भी-उनसे परिचय करा दिया। बड़ी बड़ी चमकीली आँखें, बहुत ही हल्की सूरत थी रग साँवला था बल्कि अधिक साँवला, अर्थात् गहरा या फिर समझिये कि काला, मै पहले ही काला कह देता लेकिन इस शब्द से ...र कुछ बुराई की गंध आती है और सच बात यह है कि उसकी

सूरत शकल और उसका रङ्ग रूप बिलकुल सॉवला, दूसरे शब्दों में काला ही था। औरत की खूबसूरती इस तरह कूट-कूट कर भरी थी कि कहने मे नहीं आसकता। वह अपने मुनासिब अगों और साफ सुथरे कपड़ों में अपनी सूरत-शकल के कारण एक अनोखा खिचाव और अपने में मिला लेने का साहस रखती थी, जिसका मेरे दिल पर खास असर पड़ा। उसका नाम मिस सिंह था। बहुत अच्छी तरह मिली, लेकिन बहुत जल्दी ही डाक्टर साहब से बातें करके चली गई। चलते समय रस्मी तौर से मुझसे भी हाथ मिलाया। और कहा कि मुझे आपसे मिलकर बहुत ही खुशी हुई। मैं उसे जाती हुई देखता रहा। किस तेजी से वह जा रही थी। डाक्टर साहब ने हुक्के का धुआँ मुँह से छोड़ते हुए कहा—बड़ी अच्छी लड़की है·· अनुभवहीन है जनाब अपने दर्जे में अव्वल आती थी और हाउस सर्जन रह चुकी है·· बड़ी मिहनत से इलाज करती है पूछने में शर्म नहीं करती ·· बहुत अच्छी डाक्टर निकलेगी ··इत्यादि इत्यादि।

मानों वह खूबियो की मूर्ति थी। सूरत शकल तो भगवान ने दी ही थी, योग्यता और मनुष्यता में भी एक थी। इन सब बातों के कारण वह मुझे खूबियों का एक जीता-जागता शरीर-सा मालूम होने लगी और मेरे मन मे यह विचार आया कि ऐसी अच्छी लड़की से राह-रस्म और दोस्ती पैदा करनी चाहिए।

थोड़ी देर के बाद डाक्टर साहब के यहाँ से चला आया लेकिन बार-बार मिस सिंह याद आ रही थीं। "बहुत अच्छी लड़की है" · "बहुत अच्छी लड़की है"—मैंने अपने मन आ कहा। "भाई, बहुत ही अच्छी लड़की है" मुझे जरा जोर से कहना पड़ा।

---

# दोस्ती

मिस सिंह से मैं दोस्ती पैदा करना चाहता था। लेकिन कोई उपाय समझ में न आता था कि मिस सिंह से किस तरह दोस्ती की जाय। मैं सच कहता हूँ कि मै उससे केवल दोस्ती चाहता था। तरह-तरह के उपाय सोचता लेकिन सब बेकार। जिस दिन वह कहीं मिल जाती, अर्थात् कहीं आती-जाती दिखाई दे जाती तो उससे दोस्ती पैदा करने की और भी अधिक तबीयत बेचैन हो जाती, और घटों मैं इसी सोच-विचार मे डूबा रहता कि आखिर किस तरह दोस्ती और रस्म-राह कायम हो।

× × ×

एक दिन की बात है कि मैं इसी विचार में था कि किस तरह मिस सिंह से दोस्ती की जाय। तरह तरह के उपाय और युक्तियाँ दिमाग में आई और निकल गई। साराश यह कि मै इसी उधेड़-बुन मे था कि पड़ोस के एक नवजवान, रोज की तरह समय काटने के लिये आगये। उनकी बीबी बहुत दिनों से फसली बुखार में पड़ी थीं और आज ये जरूरत से ज्यादा परेशान दिखाई देते थे। मैंने दुआ-सलाम के बाद उनसे पूछा—खैरियत तो है? आज कुछ फिक्रमन्द मालूम होते हो।

वे बोले—"क्या बतायें? फिक्रों मे फिक्रें निकलती चली आ रही हैं। आज जोर से जाड़ा देकर बुखार चढ आया और अब मेरी समझ में नहीं आता कि क्या करूँ?

बस उनका यह कहना था कि अचानक में न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गया। दवा एक हकीम साहब की हो रही थी। हॉलाकि मै स्वय

हकीमी इलाज का कायल हूँ, लेकिन जरूरत भी तो कोई चीज है। अतः मैंने उनसे कहा—

"तुम भी तो किसकी दवा कर रहे हो! भला कोई बात भी है, कि भर-भर के काढे पिलाये जा रहे हैं हकीमों के! आखिर डाक्टरी इलाज क्यों नहीं कराते? अक्सीर है बुखार के लिये।

वह बोले—"माफ कीजिये जनाब, मेरे सिर में इतने बाल कहाँ जो डाक्टर को फीस पर फीस दूँ और बारह आने रोज की दवा पिलाऊँ। बुखार जाय तो मुफलिसी की बीमारी लग जाय।'

अब मेरी मक्कारी देखिये। मैंने कहा—"आखिर फीस की क्या जरूरत है?"

वह बोले—"और नहीं तो क्या, डाक्टरनी मुफ्त देखने आयेगी?"

मैंने कहा—"मुफ्त तो उसे एक छोड़ दस बार आना पड़ेगा।

वह आश्चर्य से बोले—"वह किस तरह?"

मैंने कहा—"जनाब, वह मेरी मिलने वाली है। देखते हो न रोज जाता हूँ डाक्टर साहब के यहाँ। वहीं से जान पहचान और दोस्ती हो गई। तो क्या तुम समझते हो कि मैं बुलाऊँगा तो वह मुझसे कोई फीस लेने बैठेगी? फिर दोस्ती ही क्या हुई? ·· और फिर दवा भी उसे अस्पताल से मुफ्त देनी पड़ेगी। अगर इतना काम भी हम तुम्हारा न करा सके तो लानत है हमारी और उसकी दोस्ती पर। बस एक्के का किराया दे देना।

साफ है कि ऐसी हालत में उन्हें क्या आसानी हो सकती थी! वे झट राजी हो गये। मैं कह नहीं सकता कि मैं अपनी इस मक्कारी पर कितना खुश हुआ! झट कपड़े पहन, सीधा मिस सिह के यहाँ

पहुँचा। सूचना दी तो उसने विना बाहर निकले हुये मतलब पूछा। मैंने बताया तो भी नहीं निकलीं और कहला दिया, कि सवारी ले आओ। मुझे बड़ी निराशा हुई। लेकिन क्या करता? कस्बे में अच्छी और बुरी सवारी, रईसों की गाड़ीयों को छोड़कर, इक्का था, वह इक्का पर जाती थी।

× × ×

इक्का आकर दरवाजे पर खड़ा रहा। कुछ देर में निकली। मैंने समझा था कि मुझसे अच्छी तरह न सही, कम से कम इस तरह से तो मिलेगी, कि जान पड़े कि डाक्टर साहब ने परिचय कराया था, लेकिन उसने तो चर्चा तक भी न की, कि डाक्टर साहब के यहाँ मुलाकात हुई भी थी या नहीं।

इक्के पर एक ओर वह बैठी और दूसरी ओर मैं बैठा। मैंने दिल में सोचा, कि कुछ बातचीत शुरू करनी चाहिये। अतः मैंने कहा, कि शायद आपको याद नहीं, मैं फलाँ-फलाँ समय आपसे डाक्टर साहब के यहाँ मिला था।

इसका जवाब उसने बहुत ही बेरहमी के साथ दिया कि 'जी हाँ मुझे याद पड़ता है, कि मैंने आपको देखा था।' इससे यह पता चल गया, कि वह मुझसे कुछ भी बात करना नही चाहती। बीमार के मकान तक फिर मैं खामोश ही आया। जब वह उतरने लगी तो मैंने धीरे से अँगरेजी में उससे कह दिया कि फीस आपकी मेरे पास है। मैंने यह रास्ते में ही कह दिया था, कि मेरे एक गरीब पड़ोसी हैं। उन्हीं के यहाँ आपको लिये चल रहा हूँ। मरीज को उसने बहुत ही अच्छी तरह से देखा। मैं स्वय दवा लेने के लिये अस्पताल तक गया। रास्ते में चार रुपये मैंने भेंट

किये। कुछ बनावट के साथ उसने कहा, कि मैं गरीबों से पूरी फीस नहीं लेती, आधी फीस अर्थात् दो रुपये लेती हूँ। मैंने कारण पूछा तो उसने कहा कि अगर-गरीबों और अमीरों से एक सी फीस ली जाय तो गरीब लोग डाक्टरी इलाज नहीं करा सकेंगे। इसलिये धन्यवाद के साथ उसने दो रुपये ले लिये और इधर मुझे उसकी तारीफों के पुल बाँधने का मानों अधिकार प्राप्त हो गया। एक खूबसूरत औरत की जितनी तारीफ की जानी चाहिये उससे चौगुनी तारीफ मैंने उसकी की और साफ-साफ कह दिया कि ऐसे ऊँचे विचार की डाक्टरनी कम से कम मैंने तो नहीं देखी।

मेरी तरफ से ऐसा खिंचाव और उसकी तरफ से ऐसा अलगाव कि उसने मेरी ओर से बिलकुल मुँह मोड़ लिया, और मुझे मालूम हो गया कि दो रुपये और मीठी-मीठी बातें सचमुच खाक में मिल गयीं।

चलते समय मैंने यहसान जनाया और मरीज का हाल कहने आने के लिए स्वीकृति चाही। अतः इस मक्कारी से मिस सिंह के यहाँ आना-जाना शुरू किया। लेकिन उसका ढग पहले ही जैसा था। बहुत ही सङ्क्षेप के साथ जो कुछ कहना हो कह लीजिये, नहीं तो यदि थोड़ी सी भी मीठी-मीठी बातें की तो वह दूसरी तरफ ही नहीं देखने लगती, बल्कि कुछ अभद्रता के साथ चली जाती थी।

× × ×

अब जरा मेरी बेवकूफी तो देखिये कि इधर रोगिणी अच्छी हो रही थी और मिस सिंह के यहाँ आने जाने का सिलसिला टूटता-सा दिखाई दे रहा था। उधर हो रहा था मुझे दुख। लेकिन यह दुख असली और बहुत दिनों तक टिकने वाला न था। मुफ्त की डाक्टर की मुफ्त

की दवा मिले तो आप ही स्वय सोचिये कि कौन न इलाज कराने लग जायेगा। मतलब यह कि इन साहब की बीबी को जब फायदा हुआ, और उन्होंने मिस सिंह की तारीफ के पुल बाँधे, तो उधर मुहल्ले भर की नई बीबियाँ बीमार पड़ गई और उनके अहमकों ने आकर मुझसे कहा। इधर मेरा यह हाल, कि "अन्धा क्या चाहे, दो आँखें .."

मेरे पड़ोसी मुझे जैसा चाहते थे, उसे देखते हुए सचमुच मेरा यह कर्तव्य था, कि हर वक्त सेवा के लिए हाजिर रहूँ। इसलिये जिस किसी ने भी मुझसे कहा, मैंने यही कह दिया कि, भाई वह मेरी मिलने वाली है, जब कहो उसे बुला दूँ। मैं तुम्हारी सेवा के लिए हमेशा तैयार हूँ, वह मेरी मिलने वाली और दोस्त है, मुझे पूरी आशा है कि यदि मैं उसे दिन में दस बार बुलाऊँ तो उसे बिना फीस लिये आना पड़ेगा। तुम शौक से इलाज कराओ, बल्कि अभी बुलाये लिये आता हूँ।

मतलब कि इस तरह एक सिलसिला शुरू हो गया, और मैंने पड़ोसियों पर एहसान पर एहसान करना शुरू किये। मेरे पड़ोसी मेरे किसी काम के लिये टाल-टूल नहीं करते थे। किसी ने कहा भी है कि ताली दोनों हाथों से बजती है। इसलिए यदि मैंने भी मिस सिंह के यहाँ चक्कर पर चक्कर लगाना शुरू कर दिये तो इसमें ताज्जुब की बात ही कौन सी है। दवा लेने के लिये जाता, रोगी का नहीं रोगियों का हाल कहने जाता। फिर जब बीमार हो गये और उन्हें फायदा हुआ तो मेरे लिये पड़ोसियों के घर से हलुवे बन-बन कर आने लगे और उसके साथ और तोहफे भी। मै इन तोहफों को अपने आदमी के साथ मिस सिंह के यहाँ कायदे से एक रुक्का में लिखकर भेजता। "फलाँ बीमार की ओर से आपकी सेवा में यह भेंट है। मैं सिफारिश करता हूँ

कि आप इसे स्वीकार कीजिये।" वह धन्यवाद के साथ मंजूर कर लेतीं लेकिन जबानी। अब मैंने तोहफों के सिलसिले में दो एक साहबों से यह कह कर उनके ध्यान को इस ओर खींचा कि जनाब कोई अच्छा तोहफा भेजवाइये। बेचारी फीस कौड़ी नहीं लेतीं। मुझे लज्जा आती है। न हो तो फिर मैं ही कोई चीज भेज दूँ।

बात चूँकी मुनासिब थी, इसलिये सुनने वालों के दिल में लगी, और उनमें से एक साहब ने हिम्मत करके बहुत सी प्रिय वस्तुयें इस तरह सजाकर भेजी कि मिस सिंह को लिखकर धन्यवाद भेजना ही पड़ा। हालाँकि इसके जवाब की कोई जरूरत न थी। लेकिन मैंने जबर्दस्ती जवाब लिख दिया कि न केवल यह तोहफा, बल्कि रोगियों के प्रति अधिक कृतज्ञ होंगे, यदि आप और भी कोई चीज उनसे माँगे। उसने और भी एहसान जताया और धन्यवाद दिया। मैं उस धन्यवाद का जवाब लिखनेवाला हुआ, लेकिन रह गया।

मतलब यह कि जहाँ तक सभव हो सका, मैंने मिस सिंह के यहाँ खूब तोहफे भेजवाये। लेकिन जनाब, फीस का खर्चा अब मुझे कुछ-कुछ महँगा मालूम हो रहा था, लेकिन लाचारी थी।

× × ×

यह सिलसिला जारी था। इधर मेरे सौ रुपये के लगभग खर्च होने पर आये। और उधर मिस सिंह समझने लगीं, कि मुझसे दोस्ती करनी पड़ेगी। भगवान जाने, वह मुझे क्या सोचती होगी! शायद रोगियों का एजेन्ट समझती होगी! उस बेचारी को क्या पता, कि फीस स्वय मैं भुगत रहा हूँ। वह देख रही थी, कि केवल मेरे कारण उसकी प्रेक्टिस जम रही है। इसलिए उसे मेरे खिंचाव का जवाब खिंचाव से

देना पड़ा। सब काम छोड़कर पहले मेरे मरीजों का हाल सुनती। जब पहुँचता तो अच्छी तरह मिलती, आव-भगत से मिलती और मैं वे सभी तारीफें उसके कानों तक पहुँचाता, जो एक रोगी डाक्टर के बारे में कह सकता। बल्कि उसमें मैं अपनी तरफ से भी कुछ जोड़ देता। चलते समय बड़ी अच्छी तरह से हाथ मिलाकर विदा देती। फिर इन बातों के अलावा मैं और भी बातें करता। उसके इलाज की तारीफ करता। मैंने उससे साफ-साफ कह दिया, कि तुम्हारे हाथ मे बहुत बड़ा यश है। और यह कि स्वय मैं उसके इलाज का किस तरह कायल हूँ, और किस तरह छोटे-बड़े सभी को यह सलाह देता हूँ कि उसका इलाज कराये और फिर इशारे से यह भी कह देता, कि लोग किस तरह मेरी राय को मान रहे हैं। अत' यह सिलसिला अच्छी तरह जारी रहा।

× × ×

लेकिन जनाब, अब मेरा बुरा हाल था। आप स्वय सोचिये कि आखिर मै कहाँ तक खर्च करता। खास कर जब कि लोग जबर्दस्ती, मामूली बीमारी तक में मिस सिंह को बुलवाना चाहते थे। अत. मैंने बहुत जल्द इस फजूलखर्ची की ओर ध्यान दिया, और बीच में चाल चलने की सूझी। जो लोग कई बार बुलवा चुके थे और फिर बुलवाना चाहते थे, उनसे गभीरता के साथ कहा, कि वैसे तो मेरे कारण वह सौ बार मुफ्त आने को तैयार है, लेकिन मुझे स्वय लज्जित होना पडता है। इसलिए अच्छा है, कि उसे कभी-कभी कुछ न कुछ देना चाहिये। वह लेगी तो बड़ी मुश्किल से, लेकिन फिर आखीर डाक्टरी ही तो उसका पेशा ठहरा। मै जोर दूँगा तो ले लेगी।

अतः कुछ लोगों को तो इस तरह अपने साथ किया और रास्ते पर लाया, और साथ ही यह पुख्ता वादा कर लिया, कि मैं स्वय ही जाकर बुला लाऊँगा और अपने सामने दिखा दूँगा, बल्कि स्वय अपने हाथ से फीस देने का जिम्मा लेता हूँ। सच मानो, वह ले लेगी। लेकिन किसी-किसी से साफ इन्कार भी कर देता, कि भाई तुम स्वय सोचो, कि आखिर हद हो गई। अब कहाँ तक उसे बुलाऊँ? मुझे बहुत लज्जित होना पड़ता है। यह सुनकर कुछ और लोग भी मेरी बात को ठीक मानते और जोर देकर कहते, कि "आप सच कहते हैं। ऐसी भी दोस्ती क्या हुई, कि मुहल्ले के मुहल्ले को मुफ्त देख रही है। फीस का नाम नहीं। हमने तो ऐसी डाक्टरनी कभी देखी ही नहीं। नहीं साहब, आप उसे मुफ्त न लाइयेगा।"

मैं बहुत ही मक्कारी से जवाब देता, कि "जनाब न मुझे बुलाने में इन्कार, और न उस बेचारी को आने में इन्कार। लेकिन आप खुद सोचिये, आखिर वह भी तो आदमी ही है।"

लोग यह सुनकर मेरा समर्थन करते और यह तै होता कि उसे फीस देकर बुलाया जाय। लेकिन साथ ही मेरी और उसकी दोस्ती का इस तरह फायदा उठाया जाय, कि मेरे ही द्वारा बुलवाया जाय। और मैं जरूर मौजूद रहूँ, जिससे अँगरेजी में बातचीत भी कर सकूँ।

अतः इस तरह धीरे-धीरे मैंने अपनी जेब बचानी शुरू की। लोग बुलवाते, और मुझे बीच में जरूर डाल लेते। अगर सयोग से मैं न रहता तो लोग कहते, कि "वैसे तो उसने बड़ी अच्छी तरह देखा, लेकिन आप होते तो बात ही कुछ और होती।" और यही बात मैं चाहता भी था।

इसके जवाब में मैं उन्हें इतमीनान दिलाता कि मैं उससे अब जाकर कह दूँगा और जाकर कह भी देता जिससे मिस सिंह को मालूम हो जाय, कि यह मरीज भी मेरे ही कारण मिला है। फिर सचमुच जो न दे सकता, और जरूरत हुई और मुहल्ले वालों ने सिफारिश भी की तो मैं गाँठ मे फीस देकर इलाज करा देता, या इस तरह कि किसी मरीज के साथ-साथ उसे भी दिखा देता।

× × ×

अत आप स्वय सोचिये, कि जब इस तरह मेरे मार्फत मुहल्ले का मुहल्ला इलाज कराने लग जाय, तोहफों का बाजार गरम रक्खा जाय, दिन में दो बार की जरूरत हो तो मै चार बार जाऊँ, शिकार करके लाऊँ तो सब के सब मिस सिंह के यहाँ भेजवा दूँ और वह भी खुशी से कबूल करलें तो दोस्ती में कसर ही क्या रह गई। इसी को दोस्ती कहते हैं। नहीं तो दोस्तों के सिर पर क्या सींग निकले रहते हैं!

फिर विचार करने लायक बात यह है कि मिस सिंह की नजरों मे मेरी कितनी इज्जत बढ गई। इस तरह वे लैस मुहल्ले भर का काम करने वाला, और स्वय कुछ लेना न देना, ऊपर से मेहरबानियाँ करने वाला उसे कोई दूसरा तो मिल न सकता था। धीरे धीरे सम्बन्ध बढता ही गया। यहाँ तक नौबत आ पहुँची कि एक दिन जब मैं पहुँचा तो चाय पर से उठकर आई और मुझे लेजाकर चाय पिलाई। यह एक ऐसी घटना थी जिसने साबित कर दिया, कि मिस सिंह का दोस्त नहीं तो कम से कम मिलनेवाला जरूर हूँ।

चाय वाले दिन से वास्तव में बनावट कुछ कम हो गई। क्योंकि चाय के सिलसिले में कुछ इधर-उधर की बातें भी हुईं।

इसके बाद मैने कुछ निजी तोहफे का जोर लगाया और फिर केवल मिलने-मिलाने की गरज से आना-जाना शुरू कर दिया। थोड़ा सा कोशिश से बनावट-हीनता भी पैदा कर ली और चालाकी मक्कारी के साथ जो चाहता था, वह मिल गई, अर्थात् मिस सिंह मुझे अपना सब से बड़ा जान-पहचानी और दोस्त समझने लगी। कुछ भी हो, मैं स्वय अपनी चालाकी का कायल होगया।

---

# मिसेज़ सिंह

मिस सिंह मेरी दोस्त थी, और मैं कह नहीं सकता कि मिस सिंह की दोस्ती मुझे कितनी प्रिय थी! वह मेरी पहली लड़की दोस्त थी, और मैं इस दोस्ती को शायद ससार की अच्छी से अच्छी नियामतो में से समझता था। वे लोग, जो आवारा समझ के हैं, या वे लोग जिनका नीची सोसायटी की लड़कियों से सपर्क पड़ा है, अपने अनुभवों के आधार पर चाहे जो कुछ कहें, लेकिन मेरा विचार यह है कि एक नौजवान के लिये उसके बराबर उम्र की लड़की की दोस्ती, और केवल दोस्ती उसके सभी गुणों को चमकाने के लिये जरूरी है। यह अपना-अपना विचार है, और उचित रूप से समर्थन पाने का हकदार भी है। खैर ये शब्द तो प्रशसा के थे। मतलब मेरा केवल यह है, कि मिस सिंह की दोस्ती की मैं बेहद इज्जत करता था और वह भी इज्जत करती थी। हम दोनों की दोस्ती की सीमा केवल यही थी, कि बिना बनावट के साथ मिलना और दस पन्द्रह मिनट या अधिक से अधिक आधे घटे इधर-उधर की बातचीत कर एक दूसरे का हाल पूछ लेना और बस खतम।

यह सब कुछ था। दोस्ती भी थी, लेकिन हम दोनों में एक अजीब तरह की बनावट अवश्य रोक की तरह थी। जो आमतौर पर दोस्तों में नहीं होती। इसका सबब शायद यही था, कि वह औरत थी और मैं मर्द। मतलब कि इस बनावट को मैं समझता था और यह किसी तरह जाती हुई न दिखाई देती थी। लेकिन इसी बीच मे एक घटना ऐसी घटी कि यह बनावट भी एक हफ्ते मे जाती रही।

× × ×

वास्तव मे बात यो हुई कि इसी बीच में, जब मै इस बनावट की तकलीफ को बहुत ज्यादा अनुभव कर रहा था, मिसेज सिंह यानी मिस सिंह की माँ आ पहुँची। मिस सिंह ने मेरा उनसे परिचय कराया। बुढ़िया बड़ी अच्छी, लेकिन बड़ी तेज बातूनी निकली। ऐसी बातूनी कि उसने मेरे भी कान कुतरने का विचार किया, लेकिन जनाब मैं स्वय एक बातूनी हूँ और फिर बातों को कुछ अधिक मनोरजक बनाने में झूठ की चाशनी से इस तरह काम लेता हूँ कि सुनने वाला मुझ पर निछावर हो जाय।

मतलब कि इन बड़ी बी ने अपने बड़े बातूनी होने का जब सबूत दिया तो यह बन्दा भी बस सरेश होकर रह गया, और ऐसी लच्छेदार बातें सुनाई, कि बुढ़िया को पहली ही मुलाकात में अपना भक्त बना लिया।

दूसरे दिन की बात है कि बुढिया को एक शेर मारने की कहानी सुना रहा था। कहानी सची भी थी, और गढी हुई भी। सची इस मानी से, कि यह शेर वास्तव में भाई साहब ने मारा था, और मैं स्वय जान बूझ कर मुर्गियाँ मारने के लिये पीछे ही रह गया था। सच में

बात यह है कि शेर के हमले का विचार जरा मुझे बोझ-सा मालूम होता है, बल्कि कहना चाहिये कि मुझे नापसन्द है। इस कहानी में मिसेज सिंह और मिस सिंह, अर्थात् माँ-बेटी दोनो बड़ी दिलचस्पी ले रही थीं। किस तरह मिस सिंह अपनी ठोड़ी के नीचे अपना हाथ रक्खे हुये मन लगाकर कहानी सुन रही थीं। खास-खास मौके पर मिस सिंह की चमकती हुई आँखें आश्चर्य से चमकने लगती थीं। बडी बी भी अपने होठों से अपनी तन्मयता प्रगट करती थीं। मिस सिंह इस कहानी में जो दिलचस्पी ले रही थीं, और बड़ी बी इस ध्यान से सुन रही थी, उसका कारण यह था, कि भाई साहब की जगह पर जब मैंने अपने को रखकर कहानी सुनाई तो वह अधिक दिलचस्प होगई और मैंने जगह जगह उसमें इतना नमक मिर्च लगाया, कि वह कहानी ऐसी बन गई, कि लम्बी हो जाने के भय से मैं उसे यहाँ नहीं लिखता, नहीं तो वह लिखने के लायक तो जरूर थी।

इस मनोरंजक कहानी के उस स्थल पर पहुँचा, कि मैंने शेर पर गोली छोड़ी है और वह घायल होकर दहाड़ उठा है, कि इतने में खानसामा ने आकर सूचना दी कि खाना मेज पर लग गया। मैंने फौरन बीच मे ही कहानी को छोड़कर घर जाने के लिये कहा। बल्कि दो ही शब्दों मे कहानी खतम कर दी और बडे ही सरसरी ढंग से अपने घायल होने तथा शेर के मारे जाने का हाल कहना चाहा, तो बड़ी बी ने मुझे पकड़ लिया और कहा, कि पूरी कहानी सुनाये बिना मैं नहीं जा सकता और मुझे खाना यहीं खाना पड़ेगा। मैंने और भी बहाना करना चाहा, और कहानी को खतम करने के लिये उठने को वह चोट भी दिखाने के तैयार हुआ, जो शेर ने मुझे पहुँचाई

थी लेकिन माँ-बेटी, दोनों की दोनों मुझे सचमुच जबर्दस्ती पकड कर घसीट ले गई। यह कह कर कि पूरी कहानी विस्तृत रूप से खाने की मेज पर सुनेंगे। हालाँकि दिल से चहाता तो मैं भी यही था, पर प्रगट रूप से लाचारी दिखाते हुये खाना पड़ा।

खाने पर जाता हा न था, हीला-हवाला खतम ही न होता था। सचमुच एक ओर से मिस सिंह, और दूसरी ओर से उनकी माँ ने मुझे पकड़ कर खींचा। अब प्रगट है, कि इस खींचातानी में भला बनावट कहाँ भाग गई होगी। मेज पर जाकर हम तीनों बैठे हैं, तो मैने अनुभव किया, कि वह बनावट और वह तकलीफ अब नहीं है।

खाने की मेज पर बड़े मजे रहे। बड़े मजे से मैने अपनी कहानी को पूरी की। दोनों ने मेरी बहादुरी की बहुत बहुत तारीफ की। जिस जगह मेरे डर जाने का चर्चा थी, मेरा बहुत-बहुत मजाक उड़ा। जैसे जब शेर बिलकुल मर गया और मैं राइफल का घोड़ा चढाकर धीरे-धीरे शेर की तरफ बढ़ा। राइफल की नाल बिलकुल शेर की तरफ थी। अभी मैं दूर ही था, कि शेर की दुम के पास एक टिड्डा कुदा। उसका कूदना था, कि राइफल की नाल से तीन फैर, और मेरे मुँह से अपने आप एक चीख भी निकल गई। इसके बाद मुझे मालूम हुआ कि मै गिर पड़ा हूँ और उठ कर भागने में तीन बार असफल हो चुका हूँ।

खाने के बाद मैंने उन्हें वे भयानक खरोंचे दिखाये, जो शेर के पंजे मारने से लगे थे। लेकिन वास्तव मे बात यह थी, कि छुटने पर ये खरोंचे एक करौंदे कुन्ज के थे। जो उसने मुझे दौड़ा कर, गिरा

कर बदहवास करने के बाद लगाये थे। और काटने की जगह केवल सूँघ कर चलता बना था।

इसके बाद घंटे भर तक और बातें हुईं, और मैं दूसरे दिन आने के लिये पक्का वादा करके चला आया।

× × ×

लेकिन दूसरे दिन मैं जान बूझ कर तबीयत को मार कर न गया तो तीसरे दिन मिस सिंह का आदमी बुलाने आया। मैं तैयार हो ही रहा था और पहुँचा। मुझे ऐसा मालूम होता था कि बड़ी बी को शायद बातें करने का रोग था, और मै ठहरा इस रोग का डाक्टर। बस, जैसे ही मैं पहुँचा हूँ, बडी बी ने मुझे आड़े हाथों लिया। मिस सिंह ने हँसते हुये मुझसे किस अपनेपन के साथ कहा है, कि कह नहीं सकते। कहने लगी कि "आपकी ड्यूटी है, कि सुबह-शाम रोज आयें। नहीं तो यदि माँ चली गई तो जिम्मेदार आप होंगे।"

मैं हँसने लगा, और मैंने पूछा कि "खैर तो है। आखिर यह ड्यूटी मेरे ऊपर कैसी ?"

मिह सिंह ने कहा कि "उनका एक ही दिन में जी घबडा गया और जाने को कह रही हैं।"

मैने कहा—"माँ को हरगिज न जाने दो।"

यह सुनकर बड़ी बी ने ठहरने का वादा किया। लेकिन शर्त यह कि मैं रोज सवेरे उन्हें चहलकदमी करा लाऊँ। और वे जब तक यहाँ रहें, रोज खाना खाऊँ।

मैने और बातें तो मजूर कर ली, लेकिन खाने से जब इन्कार किया, तब बड़ी बी मचल गई और मैं आखिरकार राजी हो गया।

× × ×

इसके बाद मेरा यह नियम होगया, कि सुबह तड़के बड़ी बी को साथ लेकर टहलने जाता और फिर लौट कर उनसे बातें करता। इधर तीसरे पहर जल्दी ही आजाता और रात का खाना खाकर लगभग ग्यारह बजे घर लौटता। इस प्रोग्राम से माँ और बेटी दोनों ही राजी थीं।

बड़ी बी से सवेरे अकेले में खूब-खूब बातें होतीं। मुझे मालूम हुआ कि मिस सिंह ने मेरी तारीफ के साथ-साथ अपनी माँ से मेरी सारी मेहरबानियों की भी चर्चा कर दी थी। कस्बे में मिस सिंह की प्रेक्टिस बहुत अच्छी चल रही थी और मिस सिंह ने अपनी माँ से कहा था कि यह सब कुछ मेरे ही कारण हुआ और शायद यह बात कुछ अंशों में ठीक भी थी। मतलब यह कि मिस सिंह ने अपनी माँ से मेरी बहुत बहुत तारीफ की थी। अत. इसी सबब में मैंने बेटी की तारीफ माँ से खूब की। तात्पर्य कि बड़ी बी के साथ सवेरे का समय बड़े आराम से कटता था।

× × ×

कोई बीस-पचीस दिन इसी तरह बीते। और वह समय आया कि मैं और मिस सिंह बड़ी बी को बिदा करने स्टेशन पर पहुँचे।

कहने लायक बात यह है कि बड़ी बी ने यदि अपनी खूबसूरत बेटी को गले लगाकर प्यार किया, तो बहुत ही प्यार के साथ उन्होंने मेरे मस्तक को भी माता की तरह चूमा, यह मानो इस दोस्ती की पराकाष्ठा थी। विदा होते समय मैंने उनसे और उन्होंने मुझसे भूल न जाने की इच्छा प्रगट की।

इसके बाद न वह मिस सिंह थी और न मैं वह था, जो पहले था।

वह जो एक बनावट थी, खतम हो चुकी थी, इसके बाद ही मेरा यह नियम होगया कि मिस सिंह के यहाँ बिना नागा रात की पहले समय खाना खाकर जाता और देर तक बैठे बातें करता रहता।

मतलब यह कि जो मैं चाहता था, और जिस बात के लिये इच्छुक था, वह अब मुझे उससे कहीं अधिक प्राप्त थी। मिस सिंह मेरी प्रिय दोस्त थीं, और सच बात है कि इससे अधिक शायद मैं कुछ चाहता भी न था। मैं तो यही चहता था, कि मै मिस सिंह का दोस्त हो जाऊँ, यह बात मैंने बहुत ही मक्कारी किन्तु नेकनियती से प्राप्त करली थी। वह मुझे अपना सबसे अच्छा बेलौस मिलने वाला और प्रिय से प्रिय दोस्त समझती थीं।

---

## मुजरिम

बेलौस और बेबनावट की दोस्ती शायद संसार की सबसे अच्छी नियामत है। मेरी और मिस सिंह की अधिक गहरी दोस्ती होगई थी, लेकिन ईश्वर के नाम पर दोनों की इस दोस्ती का कुछ और उद्देश्य न था, इसलिये दोस्ती की सीमा यहीं तक खतम हो जाती थी कि हम दोनों अपने अपने घर के हाल एक दूसरे से साफ-साफ कहें। अगर जरूरत पड़े तो धन सम्बंधी कठिनाइयों को हल करने में एक दूसरे को सलाह दें। वे लोग जो इस प्रकार आपस में मिलने जुलने के आदी नहीं, वे दो नौजवानों की बेलौस दोस्ती को केवल एक 'ख्याल करने' से अधिक नहीं समझते। अतः इसकी तो मेरे पास कोई

दवा नहीं है कि मैं ऐसे लोगों को विश्वास दिलाऊँ कि मेरी और मिस सिंह की दोस्ती केवल दोस्ती ही थी और इसके आगे कुछ नहीं। जिसका जी चाहे, माने और जिसका की चाहे, चूल्हे में जाय। मतलब यही कि हम दोनों की दोस्ती थी। मैं उसकी बातें मन लगाकर सुनता था और मेरी बातों में उसका मन लगता था। उसे मेरे साथ हमदरदी थी और वह कहती थी कि आखिर तुम इस वाहियात नौकरी में पडे हुए क्यों सड़ रहे हो ? क्यों नहीं कालिज में नाम लिखा लेते ?

मैं उसके जवाब में घर की चिट्ठियाँ दिखलाना, घर की पालिटिक्स और अपनी पालिसी पर प्रकाश डालता। वह मेरी हमजोली थी। इसवी सन के लिहाज मे मुझसे केवल डेढ साल बड़ी थी और बात बात पर मजाक मे कहती थी कि "तुम बड़ों का कहना मानों और कालिज के अपना नाम लिखा लो।"

हालाँकि यह सब कुछ था, लेकिन उसकी और मेरी दोस्ती ऐसी थी मानों एक रेल की पटरी पर मैं खड़ा हूँ और दूसरी पर वह खड़ी है। दोस्ती की नियत दूरी, जो दोनों पटरियों के बीच थी, जहाँ तक दिखाई देता था, एक समान और बराबर चली गई थी। मालूम यही होता था, कि दोस्ती की नियत दूरी मे यदि कमी या वेशी हुई तो दोस्ती का इञ्जन पटरी मे उतर कर उलट जायगा। कभी ध्यान में भी न आता था, कि दोस्ती की पटरियाँ दूरी मे कम करके किसी तरह अधिक नजदीक हो जायंगी।

× × ×

यदि एक दोस्त दूसरे से प्रति दिन मिले तो कोई अचरज की बात नहीं। और फिर रोज का नियम बाँधकर समय का पाबन्द हो जाय तो

भी अचरज की कोई बात नहीं। अगर वह उस समय के आने का बेकली से राह देखता है, कि कब समय आये और कब मैं जाऊँ तो यह भी कोई असाधारण बात नहीं। यही मेरा भी हाल था, कि मिस सिंह के यहाँ जाने का समय होता तो एक-एक मिनट भारी मालूम होता और अपने प्यारे दोस्त को देखने, उससे मिलने और उसकी प्यारी बातों को सुनने के लिए किसी किसी समय, नही बल्कि हरएक समय, जी में यही होता, कि अपनी घड़ी में अधिक बजा लूँ। फिर धीरे-धीरे इस हालत मे यहाँ तक उन्नति हुई, कि इन्तजार अखरने लगा। गर्मियों के महीने मे रोजा खोलने के समय, अजान देनेवाले की मीठी और सुरीली आवाज की प्रतीक्षा शायद केवल एक चीज है। जिससे थोड़ा बहुत अनुमान लग सकता है कि उस प्रतीक्षा से कहीं अधिक प्रतीक्षा मुझे उस समय करनी पड़ती थी। फिर जब मैं पहुँचता और वह मुझे देखते ही खिल-सी जाती, बढ़कर स्वागत करती, हँसकर मिलती, फूल की तरह खिल कर बैठने को कहती और लुभावनी बातें शुरू करती तो मैं उसके खूबसूरत चेहरे को देखता। उसकी आँखो की चमक और चेहरे की दमक को देखता और दिल मे एक सवाल पैदा होता। वह यह, कि क्या यह भी मेरी प्रतीक्षा इसी बेचैनी और इसी बेसब्री के साथ करती होगी! क्या उसे भी मेरी तरह बेचैनी और बेकरारी होती होगी? ••• कि कब मेरा प्यारा दोस्त आये और कब मै उससे मिलूँ।

मैं दिल में उन बातों पर विचार करता। दिल कहता कि जरूर जरूर वह भी मेरी तरह प्रतीक्षा मे रहती होगी। उसे भी चाह रहती होगी, कि कल मै उससे मिलने आऊँ। लेकिन फिर दिल में ही सवाल पैदा होता कि इसका सबूत! इसकी सचाई की सही! दिल ही इसका

जवाब देता कि सूरत और हालत इसका गवाह है। लेकिन यह गवाही फिर कमजोर-सी मालूम होती, और फिर मुझे उलझन सी होने लगती।

अत थोड़े ही दिनों बाद मुझे हर समय तलाश सी रहने लगी, कि किसी तरह मिस सिंह के दिल का हाल मालूम करूँ। किसी तरह मालूम हो जाय, कि मिस सिंह भी बेचैनी से मेरी प्रतीक्षा करती हैं या मै ही उससे मिलने के लिए घड़ियाँ गिनता रहता हूँ।

× × ×

एक दिन की बात है कि मै देर से पहुँचा। मुझे सचमुच काफी देर हो गई थी। मैं तेजी से पहुँचा। मिस सिंह के अस्पताल की बूढी नर्स कमरे के दरवाजे पर मिली। मै चिक उठाकर कमरे में जाना ही चाहता था, कि उसने बहुत ही लापरवाही के साथ कहा—"कहाँ रह गये थे! आज मिस साहब तुम्हारा बड़ा इन्तजार करती रहीं.... तीन बार बाहर निकल कर उन्होंने देखा। अन्तिम बार तो अस्पताल के दरवाजे तक गई और देर तक खड़ी रहीं।"

आप स्वय अनुमान लगाइये, कि उन बातों को सुनकर मेरी क्या हालत हो गई होगी? वह बात, जिसे जानने के लिए मैं आठ पहर बेचैन रहता था, मै जान गया। नर्स से तो मैंने कुछ न कहा, और कमरे के भीतर गया। वैसे ही मिस सिंह भी कमरे मे आई। मैं कह नहीं सकता, कि नर्स के मुख से उन शब्दों को सुनकर मेरी क्या हालत होगई थी। लपककर पहले सुराही से पानी लेकर पिया। फिर साहब-सलामत की। नर्स के मुख से उन बातों को सुनने के बाद जब मै मिस सिंह को देखता हूँ तो उसका चेहरा मुझे बिलकुल विपरीत विचारों का आइना-सा जान पड़ा। मै उसे विभिन्न तरह से देख रहा था। शायद वह समझ

गई। क्योंकि उसने नर्स की बातें, जो वह मुझसे कह रही थी, सुननी थी। मैंने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—

"मिस सिंह"

उसने मेरी ओर देखा और मेरी आवाज और मेरे चेहरे से शायद उसने मेरे दिल की हालत का पता लगाया। अतः उसने एक असाधारण बनावट और मौन के साथ मेरी ओर देखा। मैंने उसकी ओर देखकर पूछा—

"मिस सिंह, तुम मेरी प्रतीक्षा कर रही थी मुझे बार बार देखने गई।" इतना कहने के बाद मुझे सहसा रुक जाना पड़ा। क्योंकि उसने सिर नीचा कर लिया था। मैंने फिर बातों का क्रम जारी किया, और कहा—

"... और जब प्रतीक्षा करते करते थक गई तो फाटक तक गई और फिर वहाँ मेरी प्रतीक्षा में खड़ी रही।"

मैंने दो शब्द पूरे किये, और ध्यान से मिस सिंह की ओर देखा। उसने कोई जवाब न दिया। केवल मुझे देखा। लेकिन किस तरह? बिल्कुल उसी तरह जिस तरह एक अपराधी मजिस्ट्रेट देखता है। जिसने उस पर झूठी, और अयोग्य गवाहियों के आधार पर फर्द जुर्म लगा दिया हो। जरा विचार तो कीजिये, कि न तो मैंने कोई असाधारण शब्द कहे थे, और न उसने कोई अपराध ही किया था ··लेकिन वह बहुत ही लज्जित थी। और उधर मेरी हालत! बस यही समझिये कि मेरी वह हालत थी, जो एक ऐसे कोतवाल की हो, कि चोर पकड़ा है और सामने खड़ा है। मैं बहुत दिनों से इसी चिन्ता में था। इसी

ताक में था। आखिर आज बड़े चोर को पकडा। मैंने कुछ प्रसन्न होकर सफलता के स्वर मे कहा—

"सच मानो, मेरा भी वही हाल हुआ। इतनी तेजी से यहाँ आया हूँ कि मोड़ पर एक साहब से टक्कर हो गई और उनके दूध की कुल्हिया मेरे कोट पर गिर गई। उसे पोंछता चला आ रहा था, कि एक सोते हुए कुत्ते पर पैर पड़ गया और मैं किस तरफ कूद पड़ा?"

म स्वय हँस रहा था, और वह भी हँस रही थी। मैंने अपने कोट पर दूध के धब्बे दिखाये, और उसने जोर से हँसते हुये पूछा—"कुत्ते ने काटा तो नहीं।"

मैंने मजाक के रूप में कहा—कुशल हुई, काटा तो नहीं, लेकिन बिगड़ा अधिक था।

वह सुनते ही खिला-खिलाकर हँसी पड़ी और फिर उसने कुत्ते पर रिश्ते की एक अपनी घटना ऐसी दिलचस्पी के साथ कही, कि स्वय हँसते हँसते लोट पोट होगई और मैं भी खूब हँसा। और वह हालत जाती रही। देर तक बैठा, और इधर-उधर की बातें की। चलते समय देर के लिए माफी माँगी और यह भी कह दिया कि तुम्हारे यहाँ आने के लिए मुझे स्वय बड़ी जल्दी रहती है।

जब लौट कर घर आया, तो विचित्र प्रकार की निश्चितता का अनुभव हुआ था। जिस बात की अधिक छानबीन थी, उसे अब जान लिया था। इसके बाद, फिर जब मुझे जाने की जल्दी होती तो अनुपम आनन्द आता। यह सोच करके कि मिस सिंह भी बेचैनी से मेरी प्रतीक्षा करती होगी।

लेकिन यह बात मैं बिलकुल सही-सही बता देना चाहता हूँ कि

हम दोनों की दोस्ती में किसी खास दिशा की ओर उठते हुये पैर बिल्कुल न मालूम हुये। हालाँ कि बात कुछ दूसरी ही थी।

इसके बाद दोनों तरफों की सचाई के लिए एक दूसरे के दिल में और भी अधिक इज्जत हो गई। मालूम होगया, कि वह दिल से मेरी दोस्ती की इज्जत करती है, और मेरी उसकी दोस्ती में बनावटी शब्दों के लिए जगह नहीं,'कि वह कहे,"कहाँ थे ··बड़ा इन्तजार करना पड़ा।"

---

# बेतुकी बातें

इस बात को जान लेना कि एक को दूसरे की प्रतीक्षा रहती है, और वह भी बेचैनी से, सचमुच आपस की दोस्ती की, न केवल स्थिरता बल्कि मजबूती को भी बता रहा था। बल्कि बता चुका था। उसके बाद मैं जहाँ तक हो सकता है, या यों कहिये कि अनुभवहीनता के कारण, बिलकुल बेखबर था। अगर दुनियाँ की सबसे प्यारी चीज की कीमत मालूम हो जाय, तो उसकी कदर और इज्जत अधिक हो जाय, लेकिन चीजों की तोल रहती है, इसी तरह इस घटना के बाद हम दोनों की दोस्ती का हाल भी ज्यों का त्यों था, अलावा इसके कि एक फर्क मालूम हुआ, और वह यह कि हम दोनों बेतुकी बातें करने लगे।

बाते तो भगवान की दया से, वैसे ही क्या कम होती थीं, फिर बेतुकी भी होती थीं। लेकिन कम से कम इतना बेतुकीपन तो नहीं होता था, कि यह तक न मालूम हो, कि बात क्या थी, और क्या मामिला था। असल में बेतुकी बाते एक मुसीबत सी होकर रह गई।

किस तरह हम दोनों झूठ और निरर्थक बातें करते थे, और फिर

बातें करने मे यह नहीं देखते थे, कि आखिर कैसी बातें हैं, और उनका उद्देश्य क्या है ? उससे कुछ मतलब नहीं। बस, होती चली जा रही है। परिणाम यह कि कहाँ तक एक दूसरे की बातों पर विचार करे ! मजबूरी के कारण बातों को सुनने के अलावा आवाज को केवल सुनना शुरू किया। और हरकतों तथा प्रेम-सूचक सकेतों से आनन्द लेना शुरू !

मैं इसलिए न हँसता, कि मिस सिंह ने कोई बात हँसी की कही है, बल्कि केवल इसलिए कि मिस सिंह को स्वय हँसी आती है। और हो न हो यह बात जरूर हँसी की थी। कुछ पता नहीं, कि बात क्या थी ? और किधर निकल गई ? यही उसका हाल होता।

लेकिन असली बेवकूफी उस समय मालूम होती, जब बात करने वाला सवाल कर बैठता, या बयान करने वाला किसी बात का हवाला देकर कुछ पूछ बैठता। साथ ही यह मालूम हो जाता, कि बात करने वाले को पता चल गया, कि मैं बात ध्यान से न सुनकर वास्तव में बात करने वाले के व्यक्तित्व में डूबा हुआ था। उस बात से कुछ लज्जा-सी मालूम होती और परिणाम मौन, या फिर एक बेवकूफी का सन्नाटा !

फिर उस बेवकूफी के सन्नाटे को भग करने के लिए नया सिलसिला शुरू होता और वह भी भगवान की दया से बिलकुल ही अलग रहा। जैसे यह कि जरा गला साफ करके ऐसे मौके पर कहा—'यह ' यह मेज ( मेज पर उँगली दिखाते हुये ) रङ्ग उड़ गया इसका।"

मिस सिंह ने कहा—"मैं तो इन रङ्गसाजों से परेशान हूँ। नटर से मजूरी आये डेढ़ महीना होगया, और कोई रङ्गसाज ही नहीं आता। अब कोई रङ्गसाज बीमार पड़े तो देखा जायगा !'

वह भी हँस रही है, और मै भी हँस रहा हूँ। अब रङ्गसाजों और साथ ही साथ इसी तरह के दूसरे लोगों की चर्चा शुरू हो गई और समझा गया, कि वेवकूफी के सन्नाटे की मुसीबत मे खूब निकले !'

---

# पैर का नाप

बहुत दिन तक कोई खास बात न हुई। लेकिन एक दिन की बात है कि मिस सिंह की मौजूदगी मे मै उससे कुछ कहते-कहते रुक गया। कुछ ऐसा मालूम हुआ, कि जैसे मिस सिंह से मैं कुछ कहना चाहता हूँ। बात आई, गई होगई। लेकिन दूसरे दिन मुझे इसका अनुभव हुआ, कि वेशक मै कुछ कहना चाहता हूँ, और साथ ही मिस सिंह कुछ सुनना चाहती है। मे कुछ कहूँ तो जरूर वह मन लगाकर सुनेगी? मैं क्या कहना चाहता हूँ? वह क्या सुनना चाहती थी? बस, यही समझ मे न आया। सोचना था कि क्या कहूँ उससे? मेरी उसकी बड़ी गहरी दोस्ती थी, और डर न लगे तो उसे मुहब्बत कह लीजिये, जैसी कि दोस्तों में सभव है। अब उसे दुहराने से न तो कोई फल निकलेगा, और न लाभ ही होगा। क्योंकि वह स्वय जानती है, कि दोस्ती बड़ी गहरी है। अब रह गया प्रेम तो मेरा स्वय यह बिलकुल विचार था, कि पहले तो यह है नहीं, और फिर अगर मै एक अक्षर भी जबान पर लाया तो ' ! फिर ठहरी वह एक तरह की अगरेज, इस दोस्ती के भी लाले पड़ जायँगे ! इसलिए यह तो असम्भव था, और स्वय मुझे भी पता न था, कि म उस रोग मे गिरफ्तार भी हूँ या नहीं। फिर ऐसी

हालत में प्रेम प्रगट करने में एक ओर पिट जाने का डर था तो दूसरी ओर वह केवल "स्वरहीन और फरमाइशी" चीज मालूम हुआ।

× × ×

मिस सिंह ने मुझसे कहा था, कि अपने दोस्त के कारखाने से एक जोड़ी फुल बूट की बनवा देना। मिस सिंह को फुल बूट का बहुत शौक था। और बहुत दिन से तकाजा था। कारखाने वालों ने पैर का नाप माँगा था। उसका नाप विचित्र होता है। पहले नीचे का नाप, फिर एँड़ी का नाप और फिर पेन्डुली का दो जगह से नाप। मिस सिंह ने मुझे पैर का नाप दे दिया था। और मैं कारखानों वालों को भेजकर जूते की फरमाइश भी कर चुका था, बल्कि जूते की प्रतीक्षा थी कि इसी बीच में नाप लौट आया। कारखाने वालों ने नाप लौटा-लते हुये लिखा था, कि आप किसी लड़की के लिए जूता बनवा रहे हैं, या स्वयं अपने लिए। क्योंकि खास पर के नकशे को देखने से एक ही दृष्टि से मालूम हो गया, कि यह मिस सिंह के पैर का नकशा नहीं हो सकता। भेजते समय मैंने उस पर ध्यान ही नहीं दिया था।

मिस सिंह के यहाँ गया तो नाप और चिट्ठी लेकर गया। वहाँ जाकर मैं ऐसा [illegible] गया, कि भूल ही गया। यहाँ तक कि वहीं बेतुकी बातें हुईं और यह बेवकूफी से भरा हुआ सनाटा भी छा गया।

इतने में [illegible] रूमाल जेब से निकाला तो उसके साथ पैर का नाप और वह चिट्ठी भी निकल पड़ी। वहाँ उस मौन और सनाटे को भंग [illegible] [illegible] अधिक चीज थी। बातचीत करने [illegible] सिलसिला [illegible]! फौरन मैंने नाप उठाकर कहा—

"यह लो जी! [illegible] फुलबूट का नाप वापस आ गया।"

"हैं" उसने जैसे चौंककर कहा, और उदासीनता के साथ हाथ बढ़ा लिया।

मैंने कागज खोलकर मिस सिंह को अच्छी तरह समझाया। उसने पैर रखकर देखा तो अपनी भूल कुबूल की। क्योंकि पेन्सिल को पैर से दूर रक्खा था, इसलिए पैर का नाप बहुत बड़ा बन गया था। लेकिन मजा तो यह कि पैर का नकशा तो इतना बड़ा हो गया, और नीचे और एँड़ी तथा पिन्डली के नाप चूँकि ठीक थे, इसलिए कारखाने वालों की समझ में न आया, कि पैर तो इतना बड़ा और बाकी नाप इतने छोटे। अगर यह फर्म न होता अर्थात् दूसरे नाप भी उचित रूप से बड़े होते तो बिलकुल बड़ा-सा जूता बनाकर भेज देते।

मेरी आपत्तियों पर वह हँस रही थी। मैंने कहा—"तुमने यह न देखा, कि इतना बड़ा पैर तुम्हारा कहाँ से आया? पूरे अस्पताल के बराबर नाप का जूता बनवाने चली हो!"

वह बोली कि "और तुमने भी उस समय कुछ न कहा।"

मैंने कहा, कि "जनाब मुझे मालूम न था कि आप अपनी सारी अकल डाक्टरी में खर्च कर चुकी हैं और अब इञ्जिनियरी और पैमाइश के लिए कुछ भी नहीं है।"

वह यह सुनकर हँसती हुई उठी। किस प्रकार अपनी बेवकूफी पर उसकी आँखों में प्रसन्नता की झलक थी कि कह नहीं सकता। दौड़ी हुई गई और एक चार अगुल ऊँचा पैर रखने का स्टूल ले आई। उस पर वही नाप रखकर बीचो बीच में अपना पैर रक्खा। और देखा, कि कितना अधिक बड़ा है।"

मैंने भी ध्यान से देखा, और कहा—"अब तुम अक्ल की इञ्जेक-

शन लो, नहीं डर है कि इन काले बालों के नीचे कमरा खाली न हो जायगा ! वह खूब हँसी, और कहने लगी कि—

"मालूम भी है ! डाक्टरी में अव्वल आई हूँ। तुमसे तो अक्ल ज्यादह है ही !"

मैंने कहा—"तुम सच कहती हो। जूता बनवाने के लिए तुमने शायद पैर का नाप न भेजकर अकल का नाप भेज दिया। अब लाओ दूसरा कागज, पेन्सिल और पैर का नाप लो।'

वह हँसती हुई उठी, कागज और पेन्सिल लाई और स्टूल पर अपना पैर जमाकर रक्खा और पेन्सिल से नकशा बनाना शुरू किया। फिर वही हरकत कर रही थी। मैंने कहा—"लगे लट्ठ।"

वह मारे हँसी के बेहाल हो गई। क्योंकि जब कभी वह बेवकूफी की बात करती थी, या गलती करती थी तो मैं यही कहता था, कि अक्ल के पीछे लट्ठ लिए फिरती हो या यह कि "लगे लट्ठ।" वह इस समय जिन्दादिली और प्रसन्नता की तस्वीर हो रही थी। खूब हँसी और फिर पेन्सिल से नक्शा बनाना शुरू किया। अब भी उसकी समझ में न आता था, कि क्या करना चाहिये। मैंने फिर हँसते हुये कहा—'मैं पहले से ही जानता हूँ कि तुम बिलकुल बेवकूफ हो।'

"क्यों ?" उसने हँसते हुये कहा—"तुम खुद बेवकूफ हो। आखिर मैं क्यों बेवकूफ हूँ ?"

मैंने उसकी बेवकूफी को समझाया कि तुम पेन्सिल को पैरों की [illegible]र से इतनी दूर क्यों रखती हो ! और फिर उसे बनाना शुरू किया। बिलकुल उसी तरह झुककर, जिस तरह कोई बहनी गाहक हलवाई की दुकान की कचौड़ियों को पता-लताकर अपनी देख-रेख में

ै

तलवाता है। लेकिन उसे हँसने से छुट्टी न थी। मेरे बताने पर वह बेतरह हँस रही थी और सचमुच अधिक बेढंगेपन का सबूत दे रही थी। उसने तीन कागज बरबाद किये। जब मेरी तबियत खीझ गई और वह आखिरी कागज बरबाद करने लगी तो मैंने परीशान होकर कहा—"मालूम होता है कि अब तुम्हारा मार खाने का विचार है, और बिना कुटे-पिटे तुम ठीक न होगी। बेवकूफ कहीं की।"

मेरा यह कहना था, कि वह हँसी के मारे लोट-पोट होकर शोफे पर जा पड़ी। "इधर आओ" मैंने डॉट कर कहा, और स्टूल को अपनी ओर खींचकर कहा—"इधर आओ।"

वह जब अच्छी तरह हँस चुकी तो बैठ कर मुझे देखने लगी। और फिर वही हँसी। मैं उठा और हाथ पकड़ कर स्टूल के पास लाकर खड़ा किया। और मैंने कुछ गभीर होकर कहा—पहले पैर का नकशा ले लो, फिर पीछे हँसना। अब स्टूल पर सीधी तरह पैर रक्खो, और मैं नकशा खींचता हूँ।

यह कह कर मैंने पेन्सिल की नोक उसके पैर के अँगूठों से लगा कर पेन्सिल आगे बढ़ाई। उसने मेरा सिर पकड रक्खा था। दूसरा हाथ वह मेज पर रक्खे थी। जरा झुककर उसने ऐसी लापरवाही से देखा कि पजा जगह से हट गया, और मैंने कहा—"हैं! यह क्या किया?"

"क्या हुआ?" उसने बड़े भोलेपन के साथ कहा।

मैंने कहा—"पगली नहीं तो! तुम बिलकुल बेवकूफ हो। न मालूम तुम्हें किस बेवकूफ ने डाक्टरी में प्रथम श्रेणी में पास किया।"

मेरा यह कहना था कि फिर मानो उस पर हँसी का एक दौरा-सा हो गया। सचमुच मैंने कुछ परीशान होकर कहा—"तुम्हें आज क्या

हो गया है ? क्या बिलकुल दिमाग खराब हो गया ? आखिर यह बला क्या है ?'

लेकिन इस बार सचमुच उसे इतनी हँसी आई कि इतनी बिना किसी कारण के हँसी न तो मैंने देखी थी, और न सुनी थी। वहाँ से हँसी को रोकती हुई आई तो फिर मैंने कहा—"बिलकुल तेरा दिमाग खराब होगया अब जो हँसी तो पिटना पड़ेगा तुम्हें!"

यह कह मैंने उसे फिर लाकर खड़ा किया। उसने फिर उसी तरह मेरा सिर पकड़ लिया और मैंने पेन्सिल पैर से लगाकर चलाई। उसने फिर पैर को हिलाया, और बताया कि गुदगुदी मालूम होती है। हालाँकि मोटा सा मोजा पहने हुई थी। मैंने यकीन दिलाया कि गुदगुदी नहीं मालूम होगी। सीधी खड़ी रहो और अगर तुमने इसको भी बिगाड़ दिया तो समझ लो फिर हफ्ते भर तुम्हारा नाप नहीं भेजूँगा। मैं धीरे-धीरे नकशा खींचने लगा। जब उसे गुदगुदी मालूम होती तो मैं हाथ रोक लेता और एक झिड़की देता। मैं इसी तरह नक्शा बनाने में लगा था, और वह अब पैर भी नहीं हिला रही थी। दूसरी तरफ से जो मैंने शुरू किया, तो चूँकि वह ध्यान से देख रही थी इसलिए पैर का नक्शा मेरे हाथ की आड़ में आ गया। वह अब तक मेरा सिर पकड़े हुये थी। जब वह देखने को जरा झुकी, तब उसने अपना हाथ मेरे कन्धे पर रक्खा और गर्दन टेढ़ी करके देखना चाहा।

उसका हाथ रखना था कि मुझे साथ ही यह मालूम हुआ कि जैसे मेरे कन्धे पर किसी ने दहकता हुआ अंगारा रख दिया। हाथ की इतनी खूबसूरत कलाई मेरे कान से छू गई। नक्शा बनाने में ध्यान

बेचैनी के कारण मेरा हाथ अपने-आप रुक गया। हाथ रुकते ही जो यह परिवर्तन सहसा हुआ, तो शायद मिस सिंह ने अपनी गलती अनुभव की और साथ ही मैंने विवश होकर और हाथ रोककर सिर ऊपर करके मिस सिंह की खूबसूरत और सुरमई आँखों मे आँख डाल कर देखा। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि जैसे मैं उन आँखों में डूब-सा गया। दिल तक में एक खटका सा होगया · · पेन्सिल मेरे हाथ में और मैं हक्का-बक्का-सा होकर उसको देखता का देखता रह गया।

उसने इस असाधारण परिवर्तन को देखा। लाज और लिहाज की एक झपकी-सी उसके चेहरे पर आई। उसके सुन्दर चेहरे पर सहसा एक सन्नाटा-सा छा गया। खूबसूरती और सलोनापन जैसे बल खाकर उसके चेहरे पर चमक उठा। मैं आँख गड़ाये हुये उसकी तरफ देख रहा था। वह मुझे देख रही थी और मैं उसे।

देखते देखते उसका चेहरा जैसे मुझे डगमगाता-सा मालूम हुआ। मुझे खबर न थी, और वह अपना हाथ मेरे कन्धे पर से हटा चुकी थी। लेकिन किस बला का उसका चेहरा था ? कह नहीं सकता। उस का चेहरा फिर मुझे डगमगाता मालूम हुआ और इधर मैंने अधिक परेशानी और बेचैनी की हालत मे कुछ कमजोरी-सी अनुभव की। इसके पहले कि मैं कुछ सोचूँ, मेरे हाथ से सहसा पेन्सिल अपने आप छूट गई और फिर मैं जो उठकर, बिना सलाम या किसी बात-चीत के, वहाँ से भागा हूँ तो सीधा घर आकर मैंने साँस ली। वह भी इस तरह सुनसान गलियों से उड़ा हुआ आया, कि घर पहुँचकर यह मालूम हुआ, कि अभी अभी यह सब कुछ जो हुआ, सचमुच एक स्वप्न था।

घर पहुँचा तो नौकर ने एक तार दिया। फौरन होश दुरुस्त हो गये। तार इतमिनान से पढ़ा। घड़ी का अलार्म लगाया और नौकर से कहा—"दो बजे वाली गाड़ी मे जाने के लिए इक्के वाले से कह दे।" सोचा था कि नींद न आयेगी, लेकिन लेटा तो बेखबर हो गया।

---

## सपना

नींद में एक बड़ा अनोखा सपना देखा। क्या देखता हूँ, कि मिस सिंह के कमरे में बैठा हूँ। उसी जगह, जहाँ बैठकर उसके पैर का नक्शा बना रहा था। मिस सिंह की प्रतीक्षा कर रहा हूँ और वह बराबर वाले कमरे से आने ही वाली है। मैं उसी तरफ देख रहा हूँ। पर्दा हिला, और वह आई लेकिन मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। जब मैंने देखा, कि बजाय मिस सिंह के एक बहुत बड़ी गुलाब जामुन है। आधी वह पर्दे में थी, आधी बाहर, और मैंने परीशानी से देखा, बिल्कुल गुलाब जामुन है। मुहर्रम के ढोल से उसकी तुलना करना बहुत ठीक होगा, जहाँ तक उसके डीलडौल का सम्बन्ध है। लेकिन जहाँ तक असलियत का सम्बन्ध है, सचमुच वह एक बहुत ही मीठी गुलाब जामुन मालूम हो रही थी। सचाई में ऐसी डूबी हुई थी, कि उस देखने से ही सन्देह होता था, कि उसकी रग-रग में शहद भरा हुआ है।

मेरे देखते ही देखते यह गुलाब जामुन सहसा दो टुकड़े में हो गई और मैंने देखा कि एक हवाई की तरह पूरी मिस सिंह बल्कि सचमुच

मिस सिह। उसमें से हवाई की तरह तड़प कर निकली, और प्रकाश की एक रंगीन चिनगारी के साथ, जैसे आसमान पर तारा हो, चमकी। कहाँ तो मैं कमरे मे था, और कहाँ अब खड़ा होकर आसमान की ओर देख रहा हूँ, कि मिस सिंह जैसे तारा बनकर चमक रही है, जैसे आसमान में डूबी चली जा रही है ··चली जा रही है। उस डूबती हुई छटा से, सचमुच मानों एक बहुत ही चमकता हुआ विन्दु-सा रह गया ··और यह विन्दु भी अब डूबता चला जा रहा है··डूबता चला जा रहा है ! लेकिन साथ ही प्रकाश की तेजी मे कुछ अन्तर नहीं। बस, प्रकाश की एक बरछी है, इतनी ऊँचाई और दूर पर होने भी मेरी आँखों में चुभी जा रही है।

देखते ही देखते सोचने के समय का-सा एक सन्नाटा चारों ओर छा गया। मेरी आँखें उसी प्रकाश-विन्दु पर थीं। लेकिन सामने और तारों का दृश्य पाया खामोशी। कह नहीं सकता उसे। जैसे मैं किसी चमकते हुये जगल में खड़ा हूँ, और सामने तथा चारों ओर, जहाँ तक दृष्टि जाती है, नहीं, बल्कि जहाँ तक कल्पना पहुँच सकती है, भय का एक ससार-सा दिखाई देता है !

आसमान धुँधला, जैसे गर्द का एक भडार-सा मालूम हो रहा था, जिसमें वह प्रकाश-विन्दु बस डूबता चला जा रहा था। न सूरज था, न चाँद था और न तारे। एक अजीव सन्नाटा और मौन चारों ओर बरस रहा था।

मेरे देखते देखते वह ज्योति और चमकदार विन्दु सहसा चीख कर चिनगारी बन गया ··· उस समय ऐसा मालूम हुआ, कि जैसे दुनियाँ में रङ्ग-विरंगी आग लगी हुई है। मेरी आँखें परीशान हुई जा

रही थीं। क्योंकि सतरङ्गी रोशनी थी, जो पूर्व मे लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक फैली हुई थी। सहसा जैसे तड़पकर एक बहुत ही अच्छे रङ्ग की और सुनहरी चिनगारी निकली। साथ ही मालूम हुआ, कि हजारों मील तक एक सुनहला समुद्र लहरें मार रहा है। साथ ही एक और कँपकँपी हुई और मैंने देखा कि उस सुनहले समुद्र में एक हवा का चक्कर उठा, और बीचोबीच में एक जबर्दस्त सुनहली गुलाब जामुन बन गई। एक चक्कर देकर जो यह गुलाब जामुन फूटी तो सुनहले रङ्ग में जगह-जगह सालवाँ रङ्गों मे भरी हुई चिन गारियाँ निकलीं और देखने में ये चिनगारियाँ सैकड़ों मील लम्बी, रङ्ग-बिरङ्गी नदी की तरह बहती हुई मालूम हुईं बीच में एक झटका-सा लगा। गुलाब जामुन गल गई, और अब बहुत ही शोख रङ्ग के सोते थे, जो लहरें मार रहे थे और तरह-तरह के रङ्ग बदल रहे थे इस तरह कि मालूम होता था, कि रङ्ग-बिरङ्गी बिजलियाँ चमक रही हैं।

दायें, बायें—ऊपर नीचे, मतलब कि चारों तरफ मालूम होने लगा कि रङ्गीन बिजलियाँ चमक रही हैं। फिर साथ ही ऊपर और नीचे की तरफ हजारों मील लम्बी सुनहले रङ्ग की तलवारें-सी तड़प-तड़पकर गिर रही हैं। फिर तारीफ तो यह कि एक-एक क्षण में दस-दस रङ्ग बदलती थीं और प्रत्येक रङ्ग इस तरह सुंदर और इस तरह आकर्षक, कि मैं देखता था और आश्चर्य में था।

देखते-देखते जैसे एक प्रकाश के समुद्र में काँपती और उछलती हुई मिस सिंह की झलक-सी दिखाई पड़ी, और तो मैंने कुछ न देखा, लेकिन हाँ, यह देखा कि उसके पैरों में फुल बूट की जोड़ी है। बिल-कुल उसी नाप की, जैसी कि वह बनवाना चाहती थी। देखने में एक

कपन के साथ वह प्रकाश का एक सागर था, जिसमें वह गायब होगई।

अब मैं देख रहा था, इस कहने न योग्य दृश्य को, किस प्रकार हजारों मील रङ्ग-विरगी रोशनी की चमकदार नदियाँ बह रही हैं और उफान मार रही हैं। सहसा ऐसा मालूम हुआ, कि जैसे रङ्ग-बिरगे रेशम के लच्छों को किसी ने मोड़ कर झटक दिया, और साँप की तरह बल खाकर उनमें से सुनहले और तरह तरह के रङ्गीन तथा चमकदार फौवारे से छूटने लगे।

फिर सहसा रङ्ग-बिरङ्गी रोशनी की पेटियाँ-सी तड़पती हुई निकलीं। साथ ही एक एक पेटी की हजारों पेटियाँ बन गईं और हर रङ्ग में हजारों रङ्ग चमकने लगे। लच्छियाँ की लच्छियाँ चक्कर खा-खा कर बनने लगीं। घूम-घूमकर रङ्ग बदलती थीं, बनती थीं। और फिर खुलती थीं। फिर एक तेज कँपकँपी के साथ एक गुलाब जामुन सी बन गई और साथ ही एक झरने से रङ्ग-बिरङ्गे चोत्रों में एक सुन्दर चेहरा पैदा हुआ··· · कि मैं जैसे चौंक पड़ा। 'हैं, इसे तो मैंने देखा है।' लेकिन वह गायब भी हो गया।

तड़प-तड़प कर रेशम की-सी लच्छियाँ खुलने और बिखरने लगीं और फिर उलझ गईं। खुलती थी, बनती थीं, और फिर बिगड़ जाती थीं, और उनसे भी अधिक चमकदार, तेजी के साथ दूसरी प्रकट हो जाती थी।

साथ ही एक कँपकँपी-सी आसमान पर हुई और मालूम हुआ कि रङ्ग-बिरङ्गी रोशनी के साँप हैं, जो बल खा रहे हैं, और एक दूसरे से लड़ रहे हैं। एक जबर्दस्त तड़प के साथ एक बड़ा-सा घेरा बन गया।

इसमें हरकत पैदा हो गई, और वह तेजी से घूमने लगा। और घूमते घूमते फिर एक बहुत बड़ी गुलाब जामुन बन गई।

लेकिन देखने में इसमें एक रङ्गीन चिनगारी थी, जो इतने जोर से भड़क कर निकली, कि मालूम हुआ कि रोशनी की चादरें की चादरें ऊपर उठी जा रही हैं। जिस तेजी से ये चादरें उठती थीं, कि आँख काम नहीं करती थी, और देखते-देखते मैंने देखा कि प्रत्येक चादर पर मिस सिंह की एक बड़ी-सी तसवीर है। जिस तेजी के साथ ये चादरें एक क्रम से उठ रही हैं, जितनी मिटती हैं उनसे कहीं ज्यादा फिर बनकर उठ रहा है। लेकिन एक अजीब मामला है। हर चादर पर मिस सिंह की तसवीर तो मौजूद है, लेकिन यह तसवीर मिस सिंह की है भी। न वह सूरत, न वह शकल। लेकिन फिर भी वेश-भूषा ढङ्ग इत्यादि सब वही। फिर मिस सिंह होने का सबसे बड़ा सबूत यह मौजूद कि एक विचित्र प्राकृतिक अनुभव या ज्ञान कि यह मिस सिंह है। इन कारणों से तो मिस सिंह की तसवीर है, लेकिन सूरत, शक्ल और चेहरे मोहरे का जहाँ तक सम्बन्ध है, तसवीर का चेहरा ही दूसरा है। वह चेहरा, जिसे थोड़ी देर हुई मैं देखकर परेशान हो गया था, और जो प्रगट होकर शीघ्र ही गायब हो गया था और मेरा देखा हुआ था। चेहरे से जैसे प्याजी रङ्ग की एक आभा निकल रही थी या हलका-हलकी गुलाबी रङ्ग की छाया थी। प्रत्येक चादर पर यही मालूम होता था, कि तसवीर के खूबसूरत और लाल सफेद चेहरे का पता है। साँवले के बजाए बिलकुल गोरा चिट्टा, लाल, सफेद, खूबसूरत और [illegible] किसी एक का चेहरा था। रोशनी की तेजी से यह मालूम होता था, कि [illegible] खूबसूरती का [illegible] है, कि चेहरा जैसे भड़क रहा है। इस

शकल मेरी देखी हुई थी, और मै झट पहचान गया, यह मिस सिंह
वेश में वास्तव मे उस खूबसूरत लड़की का तसवीर थी, जिसे मे
शादी की गड़बड़ी म जबर्दस्ती गुलाब जामुन खिलाने की कोशिश की
और में देख रहा था कि किस तेजी मे यह तसवीर और चादरें मे
सामने से उठ रही थीं, कि मेरी आँखों म जैसे खूबसूरती की ए
शृंखला सी बस गई। लेकिन जैसा कि मै कह चुका हूँ, बालों का ढ
वेश भूषा और कद मिस सिंह का था। वही फुल बूट पहने हुये थ
जिसे मिस सिंह अपने लिये बनवाने वाली था।

× × ×

यह खूबसूरत समा और यह दृश्य! मैं इसे एक सलग्नता औ
अर्द्ध मदहोशी की दशा में देख रहा था। तसवीरों की लगातार हरक
जैसे मेरी आँखों में बस-सी गई थी। इसी समय बड़े जोर से एक कॅ
कॅपी हुई। सभी चादरें रोशनी के साथ ही टुकड़े-टुकड़े हो गई, औ
उनसे रग-बिरगी चिनगारियाँ भड़क कर निकलीं। आसमान से ले
जमीन तक चिनगारियाँ फैल गई। हर चिनगारी में से हजारों र
फूटकर निकले। एक धीरे से धमाका-सा हुआ, और सभी रोशनि
काँपकर सर्दी से जमती हुई सी मालूम हुई और मैंने आकाश से, ध
से, छाया की तरह कोई चीज उतरती-सी देखी।·· ·एक धुँधला-
हो गया। मैंने आँखें फाड़कर ध्यान से देखा। ··कोई चीज-
मालूम पड़ी ·· जैसे पर्दा-सा हिलता है · बिलकुल साफ दिख
पड़ा कि पर्दा है। · ··मिस सिंह के कमरे में जहाँ बैठा था, वहीं बै
हूँ और सामने वही पर्दा हिला। साथ ही उसमें से मुसकुराती हुई मि

लिए आई और आकर बैठ गई। बातें शुरू हो गईं, लेकिन मुझे याद नहीं, कि क्या बातें हुईं।

अब आश्चर्य की बात तो देखिये! सूरत, शक्ल अर्थात् चेहरा और रङ्ग-रूप का जहाँ तक सम्बन्ध है, वही गुलाब जामुन वाली लड़की मुझसे बातें कर रही थी, और वही थी, लेकिन जहाँ तक वेश-भूषा और बातचीत के ढंग का सम्बन्ध है, वह मिस लिह थी। कमरा वही, बातचीत वही। आज और कल, अर्थात् प्रतिदिन की बातचीत भी वही। मतलब कि सब वही। वही बेबनावटपन, वही उसकी तेजी, और वही उसकी हँसी। इन कारणों से वह मिस लिह थी, नहीं तो वही गुलाब जामुन वाली लड़की।

मैंने मानों निश्चिन्तता से अब उस लड़की को देखा। ईश्वर की शान दिखाई दे रही थी। मैं न जाने क्या बातें कर रहा था, और मिस लिह भी बनावटीपन से हँस हँस कर जवाब दे रही थी। मैं देखता था, और इस असाधारण तथा अनोखे परिवर्तन पर आश्चर्य न करके मन ही मन मस्त-सा हो रहा था। एक तसवीर थी, जो मेरी आँखों में अपनी विशेषताओं के साथ छिपी जा रही थी। मैं उसकी तरफ एक [illegible] ढङ्ग से चुम्बकीय शक्ति से खिंचा जा रहा था। नहीं, बल्कि वह मेरे प्राणों को खींचे लेती थी। क्योंकि उसकी सूरत-शक्ल और उसकी आँखें [illegible] रहा था। तेज और चञ्चलता थी, और इस [illegible] से भरी हुई दिखाई दे रही थी। उसने मुझको [illegible] हँस रही थी और मुस्कराने के लिए मेरे [illegible] हो रहा था।

[illegible] मैंने आँख हटाकर कुछ दूर का ओर देखा, [illegible]

आँखे लौटा लीं तो दृश्य ही कुछ दूसरा था। न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गया, और साथ ही मालूम हुआ कि मैं दूर से चिल्ला रहा हूँ, और बहा जा रहा हूँ। · एक गली में पहुँचा बिलकुल सन्नाटा है एक सीढ़ी दिखाई पड़ी और सहमा जैसे ऊपर था ··छोटा-सा आँगन था। सामने तीन खिड़कियों का बरामदा था। भीतर कमरा था, जिसमें दरवाजे थे। मैं एक दरवाजे के सामने आया। भीतर अँधेरा-सा मालूम हुआ। मैंने आँखें फाड़कर देखा वही लड़की जिसे मैंने जबर्दस्ती गुलाब जामुन खिलाई थी। विचित्र दशा में। · उसके चेहरे और कुल बूटा की एक झलक-सी दिखाई पड़ी। मैंने देखा कि वह लड़खड़ाकर गिरी, उठी, और फिर गिरी—मैं आगे बढ़ा ही था, कि घड़ी का जोरदार अलार्म बजा और मैं विवश हो गया।

× × ×

जल्दी से उठा और कपड़े पहने। जल्दी सामान ठीक किया, और सोचा कि मिस सिंह को कुछ लिखूँ, लेकिन फिर बेकार समझा। इक्का आया और झटके तथा झकोले खाता हुआ स्टेशन पहुँचा।

---

## सच्ची बातें

यह कहने की कोई खास जरूरत नहीं है, कि तार के द्वारा घर पर क्यों बुलाव हुआ था। घर पहुँचते ही एक महीने की छुट्टी की दरख्वास्त भेज दी। क्योंकि चला था तो दफ्तर में केवल एक नोट छोड़ गया था। मिस सिंह को एक बहुत ही सच्चेप में चिट्ठी लिखी, कि किस तरह अचानक मेरा आना हुआ। इसके बाद बीती हुई बातों पर एकान्त में

आँखें लौटा लीं तो दृश्य ही कुछ दूसरा था। न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गया, और साथ ही मालूम हुआ कि मैं दूर से चिल्ला रहा हूँ, और वहा जा रहा हूँ। · एक गली में पहुँचा बिलकुल सन्नाटा है एक सीढ़ी दिखाई पड़ी और सहसा जैसे ऊपर था · छोटा-सा आँगन था। सामने तीन खिड़कियों का बरामदा था। भीतर कमरा था, जिसमें दरवाजे थे। मैं एक दरवाजे में सामने आया। भीतर अँधेरा-सा मालूम हुआ। मैंने आँखें फाड़कर देखा वही लड़की जिसे मैंने जबर्दस्ती गुलाब जामुन खिलाई थी। विचित्र दशा में! · उसके चेहरे और फुल बूटों की एक झलक-सी दिखाई पड़ी। मैंने देखा कि वह लड़खड़ाकर गिरी, उठी, और फिर गिरी—मैं आगे बढ़ा ही था, कि घड़ी का जोरदार अलार्म बजा और मैं विवश हो गया।

× × ×

जल्दी से उठा और कपड़े पहने। जल्दी सामान ठीक किया, और सोचा कि मिस सिंह को कुछ लिखूँ, लेकिन फिर बेकार समझा। इक्का आया और झटके तथा झकोले खाता हुआ स्टेशन पहुँचा।

---

# सच्ची बातें

यह कहने की कोई खास जरूरत नहीं है, कि तार के द्वारा घर पर क्यों बुलाव हुआ था। घर पहुँचते ही एक महीने की छुट्टी की दरख्वास्त भेज दी। क्योंकि चला था तो दफ्तर में केवल एक नोट छोड़ गया था। मिस सिंह को एक बहुत ही सन्क्षेप में चिट्ठी लिखी, कि किस तरह अचानक मेरा आना हुआ। इसके बाद बीती हुई बातों पर एकान्त में

बैठकर विचार किया। दिन भर गुमसुम रहा। दो दिन इसी तरह बीते। परिणाम यह हुआ, कि तीसरे दिन मिस सिंह को न जाने क्या-क्या लिख मारा। यह चिट्ठी लगभग दो पेज की थी।

इस चिट्ठी में दिल का पूरा-पूरा हाल लिख मारा लेकिन अन्त में जाकर कलम रोक लिया और फिर दूसरे दिन जवाब का इन्तजार किये बिना दूसरी चिट्ठी लिखी। इस चिट्ठी में अपने आप को बड़े अदब और बड़े ढङ्ग के साथ उनकी सेवा में पेश कर दिया। उसी दिन शाम को एक दूसरी चिट्ठी अपील के तौर पर रवाना की। फिर दूसरी अपील दूसरे दिन सवेरे, और तीसरी अपील शाम को। यहाँ तक, कि उन अपीलों का सिलसिला जारी ही था, कि मिस सिंह का जवाब आया। एक चिट्ठी में जूते का नाप था, और मेरे सहसा चले जाने पर आश्चर्य प्रकट किया गया था, ( यह नहीं लिखा कि कमरे से या कसबे से ) इसके बाद दूसरी चिट्ठी लिखी। वह लम्बी-चौड़ी थी और बिना किसी खास हुज्जत और हीले के मुख्त्सर से मेरे 'सवाल' का जवाब था। मैं इस दिलचस्प चिट्ठी को ढाई घंटे तक लेकर और बार-बार पढ़ता रहा।

इसके बाद दूसरे दिन असली जवाब आया अर्थात् उस चिट्ठी का जिसमें मैंने अपने आप को उनकी सेवा में पेश किया था। मेरी दर-ख्वास्त मंजूर कर ली गई। मेरी किस्मत के तारे जड़ दिये गये। कोई हीला-हवाला न था। लेकिन सक्षेप में लिखा था। पूर्ण आशा प्रगट की गई थी कि मैं शीघ्र से शीघ्र उनके पिता को चिट्ठी लिखूँगा और यह कि मजहब तो अपना बदलने के लिए तैयार ही हूँगा।

[illegible] चिट्ठी अधिक सन्देह में थी "जवाब मन" [illegible]

अतः उसी से मिलता-जुलता मैंने अपना जवाब भी संक्षेप में लिखा। वह यह, कि मजहबों में न तो मेरी कोई दिलचस्पी है, और न यहाँ कोई मजहबी मसला ही उपस्थित है। रह गया उनके पिता को लिखना तो मेरी समझ में शादी की रस्म के बाद उन्हें सूचित करना अधिक उचित है। यह मैंने इसलिये लिखा, कि हो सकता है कि उनके पिता जी इस बात को नापसन्द करें, और इसमें बाधा डालें।

वास्तव में मिस सिंह के पास से दो तरह की चिट्ठियाँ अलग-अलग लिफाफों मे आ रही थीं। एक तरह की तो वे थीं, जिनमें वही पुरानी दोस्ती, मजाक, और बेबनावटपन की चाशनी थी, और दूसरी प्रकार की रस्मी चिट्ठियाँ, जिनमें केवल इस मामिले पर ही गभीरता के साथ गिने चुने शब्द होते थे। रह गई प्रेम की चिट्ठियाँ, तो इस तरह की न तो मैंने अपनी समझ में कोई चिट्ठी भेजी, और न उसने भेजी। यह दूसरी बात है, कि चिट्ठियों में स्वाभाविक झलक हो। नहीं तो प्रतिज्ञा पूर्वक न तो इस तरफ से कुछ था न तो उस तरफ से।

शादी के मामिले पर बहुत-बहुत बहस हुई और मामिले में जीत मेरी ही हुई। उसने मेरी हर बात मान ली। वह इस पर भी तैयार होगई, कि मैं मजहब न बदलूँ, और माँ को भी सूचना न दूँ। न अपने और न उसके। लेकिन अच्छा होता जो उनके बूढे पिता को सन्देश के ढङ्ग पर क़ायदे की एक चिट्ठी भेज देता। उसके जवाब में उसने मुझे लिखा था, कि वे इसके आलावा और कुछ न करेंगे, कि आशीर्वादात्मक शब्दों के साथ अपनी मजूरी दे देंगे। मुझे इस बात का यकीन दिलाया था, कि वे इस मामिले में हरगिज-हरगिज दखल न देंगे।

लेकिन चूँकि मुझे उनके पिता जी को सूचना देने की बिलकुल

जरूरत न थी, इसलिए मैंने जवाब में लिखा, कि अब इन बनावटों को जाने भी दो। शादी के बाद ही सूचना देना ठीक और उचित है। अत वह इस पर भी राजी होगई।

इस सारी बातचीत के तै होने के बाद चिट्ठियों में उन विचारों की झलक अवश्य आगई, जो दोनों पक्षों की ओर से होंगे। मैंने मिस सिंह को लिखा कि हम दोनों खुदा के सामने अब मियाँ-बीबी हैं और हम दोनों के दिल पवित्र प्रेम तथा विचारों से भरे हुए हैं। तुम मेरी हो, और मैं तुम्हारा हूं। बहुत शीघ्र ये बातें सब पर प्रगट भी हो जायँगी। अत इसके बाद हम दोनो में जो पत्र व्यवहार हुआ, वह वैसा ही था, जैसा कि एक मियाँ और बीबी में होना चाहिए। इस सबन्ध में अधिक लिखना फजूल है, अलावा इस बात के कि दिन में दो बार डाक आती है, और दो छोड़ तीन चिट्ठियाँ इधर से, और उतनी ही उधर से आती-जाती थी।

× × ×

अब कुछ और सुनिये। इधर तो मिस सिंह से बहुत ही मनोरंजक पत्र-व्यवहार का काम जारी था, और उधर एक दूसरी दिलचस्पी शुरू नहीं, बल्कि मौजूद थी। वैसे तो न जाने मैं किस धुन में और न जाने अपने किन विचारों में रहता था। लेकिन जिस समय भी दो चार घड़ी बहनों या दूसरी लड़कियों के साथ बोलता तो मेरी शादी का सवाल जरूर सामने आ जाता।

इन लड़कियों का कायदा है कि कोई भाई भतीजा नौकर हो, तो यह नहीं देखेंगी कि उसकी नौकरी कैसी है और आमदनी क्या है? बस, उन्हें तो इससे मतलब है, कि शादी हो जाय। 'शादी कब

करोगे? यह एक सवाल था, जो कई प्रकार से किया जाता था। चूँकि मेरी तबीयत जरा तेजी पर थी, इसलिये मैं झट कहता, कि बिल्कुल करूँगा, और अभी, यदि कोई मिल जाय! अतः घटों बहस होती, बीसियों लड़कियाँ विचार में सामने लाई जातीं! आपस में एतराज होते, बहस होती, और फिर उसके बाद यदि कहीं सब की राय एक हो जाती तो मैं यह कह कर उड़ा देता कि लड़की मुझे दिखाओ। मतलब यह, कि खूब मनोरञ्जन रहता। कई एक लड़कियों की तसवीरें भी देखने में आईं, लेकिन यहाँ तो दिल में दूसरी तसवीर मौजूद थी। ये सभी बातें तो केवल आनन्द के लिये थीं, नहीं तो जो संकल्प हो चुका था, वह तो हो ही चुका था। बातचीत के अलावा न तो कोई नतीजा निकल सकता था, और न मैं निकालना चाहता था।

---

# इश्क का मतलब

चला था। अर्थात् नाश्तादान, एक सूटकेस, एक बिस्तर और एक पोटली मिस सिंह के फुल बूट की।

× × ×

इन बहन के यहाँ रात को बारह बजे के बाद उनको लेकर पहुँचा। एक अँधेरी-सी गली में मकान था। इनको उतरवाया और मैं मकान की छत पर टहराया गया। सड़क के पास ही सीढ़ी थी। सीढ़ी पर चढ़ कर जाने के बाद एक छोटा सा आँगन था और दालान तथा कमरा। मैंने कमरे में अपना सामान रख दिया और बरामदे में पड़कर सो गया।

दिन चढ़े सोकर उठा। बहन साहिबा आईं। मालूम हुआ कि यह इसके बाद अपने पति के पास जायँगी, जो नौकरी पर थे। वास्तव में वह घर आई थी।

मैंने इधर-उधर देखा तो मुझे ऐसा मालूम हुआ, जैसे मैं इस जगह कभी पहले आया था। विचार हुआ और फिर चला गया। नाश्ता मैंने नहीं किया। क्योंकि मालूम हुआ, कि खाना बहुत जल्द मिल जायगा। नहा-धोकर बैठा ही था, कि दस बज गये। खाना खाया और यह सोचकर कि अभी से न सोना चाहिये, बाहर घूमने चला गया। पर मैं मर्द कोई था ही नहीं, अतः मैं अकेला ही शहर में इधर-उधर घूमा फिर और दिन के शायद बारह बजे होंगे, या बजने वाले होंगे तो लौट कर आया।

मौसम हालाँकि अच्छा था, पर साफ-सुथरे और नीले आसमान पर सूर्य अपनी पूर्ण रोशनी के साथ चमक रहा था। धूप में तेज़ी थी। मैं घर आने पर चढ़ा तो फिर मुझे इसका सन्देह हुआ कि जैसे

इस जगह को पहले मैंने कभी देखा है। सहसा पैर रुक-सा गया। मैं अधिक आश्चर्य में था। यही मालूम होता था कि मैंने इस जगह को कभी न कभो जरूर देखा है। पर असल में मैं इस शहर में इसके पहले कभी न आया था।

ऊपर आया, और इधर-उधर जिस जगह दृष्टि पड़ी, यही धोखा हुआ कि जरूर इस जगह को पहले देखा है। तेज धूप से चला आ रहा था। बरामदे में पहुँचा तो खिड़की के फूल पर नजर पड़ी, और भी यकीन हो गया कि मैंने इस जगह को कभी देखा है। इतने में कमरे में नजर पड़ी। परीशानी और आश्चर्य की सीमा न रही। मै कुछ देर के लिये खड़ा का खड़ा ही रह गया। निस्सन्देह यह जगह मैने स्वप्न में देखी थी, आश्चर्य पर आश्चर्य, कि वह सूरत भी मौजूद थी। वही लड़की, जिसे मैने गुलाब जामुन खिलाई थी। बिल्कुल उसी तरह फुल बूट पहने हुये, जैसा मैंने स्वप्न में देखा था, हूबहू वही दृश्य मेरी आँखो के सामने आ गया और मैने देखा, कि वह गिरी, और उठी, और फिर गिरी।

कूद फाँद के साथ ही उसकी सूरत आँखों के सामने आ गई। इसके पहले, कि वह गिरती, पड़ती भीतर जाने वाले दरवाजे तक पहुँच सके, मैने दौड़कर उसे घेर लिया। मैने यह क्यो किया? शायद बीती हुई घटनाओ के आधार पर? क्योंकि इसी रात में उसे फिर एक क्षण के लिए देखा था। इस समय सूरत देखते ही मैने पहचान लिया। वैसे भी मेरी तबीयत कुछ बदहोश सी थी। शायद यही कारण हो। कुछ भी हो, लेकिन सच बात यही है कि असली कारण वह गुलाब जामुन वाली घटना ही थी, जिसके कारण मुझे हँसी आई और दिल

ने नहीं चाहा, कि इसे कुछ तङ्ग किया जाय। मैंने झपटकर दरवाजे के पास पहुँचने के पहले ही, उसे घेर लिया। जनाब, यह था उस रङ्गीन और अनोखे स्वप्न का मतलब, जो इस प्रकार मेरे सामने अपने आप आन पहुँचा।

---

## दूसरा भाग

# फुल कूट की मुश्किल

## बाकी कहानी खुद गुलाब जामुन की जबानी

मैं बेखबर पड़ी सो रही थी, कि भाभी साहबा ने मुझे सोते से जगाया, और मुझसे जल्दी करने को कह कर कहा, खाने इत्यादि की फिक्र करो। मैंने उनसे नाश्ते के लिए पूछा तो उन्होंने मना कर दिया कि अब खाने की फिक्र करो। जब कुछ खास प्रबन्ध के लिए पूछा, तो उसे भी मना कर दिया। अम्माजान ने भाभी साहबा से कहा कि "दुलहन, तुम्हारे साथ जब भाई आया है, तब ऐसा भी क्या, कि कुछ खास इन्तजाम न किया जाय।" लेकिन भाभी साहबा ने मना कर दिया। मैं यही समझी थी कि भाभी साहबा के सगे भाई आये होंगे। मतलब यह, कि मैं खाना बनाने में लग गई।

शायद आप पता होता होगा, कि अम्माजान मरदाने कमरे की तरफ देखने गईं और थोड़ी देर बाद मुसकराती हुई आयीं, और भाभी साहबा से उन्होंने पूछा, "दुल्हन, यह लम्बी-लम्बी कौन सी [illegible] साथ रक्खा हुआ है।"

भाभी साहबा ने मुसकुरा कर कहा—"यह फुल बूट है—जूते हैं —घुटनों तक के।"

अम्माजान ने अचरज से भौंहें सिकोड़ लीं और मुसकुरा कर अनोखे ढङ्ग से बोली—"या मेरे अल्लाह, यह जूते न हुये, मुसीबत हो गये! भला इन्हें पहनते कैसे होंगे।"

मैंने काम करने से हाथ रोककर जो अम्माजान से विवरण पूछा, तो उन्होंने कहा कि मैं तो यह समझी थी कि काली काली मुगदर की जोड़ी रक्खी हुई है।

मुझे इस अनोखे जूते का हाल सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। भाभी साहबा से अम्माजान ने और मैंने पूछा, कि कैसे पहने जाते हैं, तो उन्होंने सक्षेप में बताया, और फिर उसके फायदे भी बताये कि बरसात में साँप-बिच्छू से या कीचड़ से बचे रहने के लिए लोग पहनते हैं।

मैंने बड़ी देर तक इन अनोखे जूते के बारे में सोचा, क्योंकि ऐसे जूते न मैंने कभी देखे थे, और न सुने थे।

× × ×

जब खाने-पीने से छुट्टी हो गई तो भाभी साहबा के भाई घूमने के लिए बाहर चले गये, और अम्माजान ने भाभी साहबा से कहा, कि "दुलहन, चलकर उन निगोड़े जूतों को तो मुझे दिखा दो।"

यह सुनकर मैं भी उठी तो अम्माजान ने कहा—"लड़की, होश में आ। खाना समेट रही है। हाथ खाली होने पर तू भी देख लेना। मुर्गियों और कौवों को खाना खिलाना हो तो यों ही फेंक दे।"

मे यह सुनकर रुक गई, क्योंकि सचमुच मैं काम से घिरी हुई थी।

मतलब यह, कि भाभी साहबा और अम्मीजान सीढ़ियों पर चढ़ती हुई चली गईं और थोड़ी देर बाद देख-भालकर लौट आईं। अम्माजान ने जूते में दो-चार नगाबियाँ निकालीं, कुछ एतराज किये, फिर बाद में खूब हँसी, और कहने लगीं कि "मुझे तो पैर डालते ही डर मालूम हुआ।" मतलब यह, कि वहाँ जाकर जूते को पहन कर देखना चाहती थी, लेकिन जूते के भीतर झाँककर और थोड़ा-सा पैर डाल करके ही रह गईं, और खूब हँसी।

खाना पीना तो हो ही चुका था, और अब मुझे भी घर के धन्धे से छुट्टी मिल गई। कोई बारह बजने के करीब थे। भाभी साहबा सोने के विचार से कमरे में चली गईं और अम्माजान दालान के पास वाले कमरे में सीने पिरोने में लग गईं। अब मैंने सोचा कि लाओ, जरा मैं भी जरा देख आऊँ।

भी पहनने की कोशिश की। आधी दूर से ज्यादा तो पैर चला गया, लेकिन भीतर जाकर शायद पञ्जा फैल गया और मैंने बहुत कुछ जोर मारा, लेकिन आगे न गया। जब मै थक गई और देखा, कि जूता न चढेगा, तो मैने उसे उतारना चाहा। थोड़ा-सा तो पैर बाहर आया, लेकिन फिर ऐसा मालूम हुआ, कि जैसे फँस गया हो। पहले तो धीरे से जोर लगाया फिर बहुत बहुत जोर लगाया, लेकिन पैर न निकला। मैंने जितना ही जोर लगाया, पैर उतना ही उसमें और जम गया। यहाँ तक कि एँड़ी में जोर का दर्द भी मालूम हुआ। मैंने और जोर लगाया तो और भी दर्द हुआ। यहाँ तक, कि खींचातानी करते-करते में थक गई और दर्द के मारे पैरों का यह हाल, कि जैसे फटा जा रहा है। अब मैं कुछ घबड़ा रही थी और रह-रहकर जोर लगा रही थी। मेरा पैर जैसे टूटा-सा जा रहा था। मैं इसी कोशिश में लगी थी कि सहसा पैर की आहट से जो मैंने सिर उठाकर दरवाजे की ओर देखा, तो कह नहीं सकती, कि मेरा कौन सा हाल हो गया • •••सामने मेरी भाभी साहबा के रिश्ते के वह भाई खड़े थे, जिन्होंने शादी के अवसर पर मुझे जबर्दस्ती गुलाब जामुन खिलाने की कोशिश की थी और मेरा मुँह तथा मेरे कपड़े, सभी गुलाब जामुन के रस से तर हो गये थे।

अब ऐसे मौके पर भला मैं क्या करती ? सिवाय इसके कि उठकर भागी। लेकिन मेरा पैर ऐसी बुरी तरह फँसा हुआ था, और ऐसा सख्त दर्द हो रहा था, कि पैर धरते ही मैं मुँह के बल गिरी। फिर उठी और फिर गिरी। चाहती थी, कि रेंग कर किसी तरह दरवाजे तक पहुँच जाऊँ, कि उन्होंने लपककर मेरा रास्ता रोक लिया। मैं जमीन पर तो पड़ी ही थी, वहीं की वहीं सिमट कर रह गई। मेरे मुँह से, बल्कि

चीख निकलते-निकलते रह गई। मैंने अपने कपड़ों में मुँह छिपा लिया और हिल-डुलकर दरवाजे की तरफ बढ़ने की कोशिश की कि वे यह कहते हुये सामने ही बैठ गये —"तुम बड़ी नटखट लड़की हो।" यह कहकर उन्होंने जूते को एँड़ी के पास से पकड़ा और कहा—

"शायद तुम वही हो · तुमने मुझसे गुलाब जामुन छीन कर खाई थी।" यह कहकर बायाँ जूता छोड़कर दाहिने जूते की एँड़ी पकड़ कर उन्होंने मुझसे कहा—"पैर खींचो अपना।"

अब मैं क्या करती ? सिवाय इसके कि जिस तरह बना, मैंने जोर लगाकर अपनी तरफ खींचा। उधर से उन्होंने खींचा, और जूता उतार कर अलग रख दिया। फिर मजा यह, कि मेरा जूता स्वयं उठाकर मेरे पैर में पहना दिया। इस बीच में मेरा यह हाल बयान करने के बाहर था और मैं बेतरह अपना मुँह छिपाये हुये थी।

इसके बाद बाँये पैर के बूट की एँड़ी पेन्डुली से पकड़ कर देखा। जरा-सा हिलाया कि मैं दर्द से बेचैन हो गई। यहाँ तक कि मैंने अपने हाथ से, विवश होकर उनका हाथ तो नहीं किन्तु जूता पकड़ लिया, जिससे दूसरी ओर वह उसको घुमा न सकें। मैंने जो यह किया, तो वह बोले—

"तो क्या नहीं उतारने दोगी! आखिर क्यों पहना था ?"

यह कहकर उन्होंने मेरा हाथ हटाया और जूते को पेन्डली तथा पंजे के पास से पकड़ कर मुझसे कहा, कि जोर से खींचो। लेकिन सोचिये कि मैं क्या खाकर खींचती ? मेरी तो जान निकली जा रही था। उन्होंने अपनी तरफ जो जरा-सा खींचा, तो मैं दर्द के मारे बेचैन हो गई और अब यह मालूम हुआ, कि जमीन पर बैठकर यह जूता ऐसे नहीं उतर सकता। अब उन्होंने मुझसे कहा कि [illegible]

बैठो, नहीं तो जूता नहीं उतरेगा। मैंने जो कहा माना, तो उन्होंने मेरा हाथ पकड कर उठाया और मैं पलङ्ग पर बैठ गई। खुदा की मेहरबानी है, कि यहाँ बड़ी तौलिया जो उनकी पड़ी थी, उसे उठाकर मैंने चादर की तरह इस प्रकार ओढ लिया, कि मेरी वह घबडाहट जाती रही। अब उन्होंने मुझसे कहा, कि चारपाई की पाटी पकड़ो। फिर जोर जो लगाया, तो मेरा जैसे दम निकल गया। मुँह से तो उफ न निकली, मगर बस खा गई। उन्हें मालूम हुआ, कि अब यह इस तरह न उतरेगा, तो वे बैठ गये, और अब मेरे ऊपर बहुत बुरा समय बीता। उन्होंने मेरी पेन्डुली दबाई, और मेरी तरफ जोर किया। जूते को जगह-जगह से दबाया, फिर बड़ी कठिनाई से धीरे-धीरे, थोडा-थोडा करके उतारना शुरू किया। मैंने इतमीनान की साँस ली, जब उन्होंने जूता उतारकर अलग फेंका। लेकिन मै बहुत व्याकुल हो उठी, जब उन्होंने मेरे पैर के पजे तथा ऐंडी को अपने दोनों हाथों से मजबूती से पकड़ कर दबाना शुरू किया। बोले—"लाल हो गया है ·· टूट जाता पैर।" उन्होंने जोर से पैर को ऐंड़ी के पास से दबाया, और फिर मेरा दूसरा जूता भी उठाकर मेरे पैर में पहना दिया। इसके बाद जूता पहन कर मैं जो उठने लगी, तो बैठे तो थे ही, मेरा पैर पेन्डुली पर से जोर से पकड़ लिया और पूछा—'गुलाब जामुन खाओगी?··· ··· याद है वह घटना?······गुलाब जामुन वाली वह घटना याद है नहीं? पहचाना मुझे?"

मैंने जोर लगाकर पैर छुड़ाते हुये जाने की कोशिश की, तो उन्होंने मजबूती से पैर पकड़कर जैसे मुझे वहीं का वहीं रोक दिया,

और कहा—"जब तक यह न बताओगी कि मुझे पहचाना या नहीं, मैं न छोड़ूँगा !"

यह सोचकर, कि किसी तरह इस आफत से जल्दी से छूटूँ, मैंने सिर हिलाकर संकेत में जवाब दिया और वे मेरा पैर छोड़कर खड़े हो गये। मैं एक दम से खड़ी होकर जो चली हूँ तो उन्होंने मुझे पकड़ लिया, और कहा—"मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगा !"

मैंने जोर लगाकर, जैसे छुडाकर भागना चाहा तो उन्होंने मजबूती से अपनी पकड़ मे लेकर पकड लिया और पूरी तरह अपने वश में करते हुए कहा—"तुमने मेरी बीबी का जूता क्यों पहना ?"

अब मैं जोर कर रही थी छुडाने के लिये, और वे मुझे रोक रहे थे तथा वश मे कर रहे थे और कह रहे थे—"तुमने मेरी बीबी का जूता तोड़ डाला ? · तुमने जूता क्यों खराब किया ? बिना तुम्हे अच्छी तरह देखे हुये नही · · · नहीं जाने दूँगा · चाहे जितना जोर लगाओ। नहीं छोड़ूँगा। जी में आये तो चीखो, चिल्लाओ, लेकिन मैं तुम्हें न · · · · छोड़ूँगा।"

आखिरी शब्द कहते हुये मेरा चेहरा जबर्दस्ती खोल दिया और बड़ी शरारत के साथ कहा—"इसी चाँद को तो हम देखना चाहते थे लेकिन अब तुम खोलो आँखें · · खोलो · खोलो ... जल्दी खोलो !"

मैं अब बुरी तरह पकड़ में थी। सोचती थी कि अगर मान लो चीखती भी हूँ तो अम्माजान यदि सुन पायेंगी तो न जाने कौन-सी आफत आयेगी ? मैं बड़ी मुसीबत और कठिनाई की हालत में थी। आँखें भी बिल्कुल बन्द थीं। उन्होंने अब मेरे मुँह पर फूँकना शुरू

किया। क्योंकि उनके हाथ तो मुझे अपने वश में करने के लिये घेरे हुये थे। इसलिये अब उन्होंने मेरे मुँह पर फूँकें मारते हुये कहा—"जल्दी खोलो आँखें जल्दी ·· ··नहीं तो मेरा क्या है, अब कोई आ जायगा··· · मैं हरगिज न छोड़ूँगा ·· ··।"

साथ ही कुछ खटका-सा हुआ। यह सारी बातें सिर्फ एक क्षण में ही हुई थी। मैंने लाचार होकर, घबड़ाकर पलकें हिलाईं और हारकर, परीशान होकर आँखें जो खोली हैं, तो बस ·· ··लोट मोट कर छूटते ही आँखें पोंछती हुई भागी। बेहोशी में पर्दा उठाने की मुहलत किसे? तोप के गोले की तरह पर्दे पर गिरी और उधर में आवाज आई—"है" · ·? भाभी साहबा से टक्कर हुई और झट उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर हैरान और परीशान आँखों से देखती हुई कहा—"कमबख्त!" उँगुली ओठों पर रखकर नीचे इशारा किया और मैंने सुना, कि अम्माजान ने सचमुच घर सिर पर उठा रक्खा है। या मेरे खुदा, अब क्या करूँ? मुझे वहीं खड़ी करके, पर्दा उठा कर भाभी साहबा अपने भाई साहब के पास गईं। मैं वहीं खड़ी की खड़ी रह गई। हिम्मत नहीं होती थी, कि नीचे जाऊँ। क्योंकि मेरे ही ऊपर गालियाँ पड़ रही थीं। अम्माजान मुझे, और अपने को तथा अपनी किस्मत को बुरी तरह कोस रही थीं।

भाभी साहबा के भाई अपनी बहन से बोले—अनोखी बात हो गई!

भाभी साहबा बोली—जी हाँ। उनके कहने के ढङ्ग में एक भेद-सा छिपा था, जिससे पता चलता था, कि वे सब जानती थीं।

उनके भाई ने हकलाते हुये कहा—"यह कौन···।"

भाभी साहबा बोलीं—बल्कि कुछ ताज्जुब के से स्वर में उन्होंने कहा—"यह वही लड़की है, जिसके बारे में मैं तुमसे बराबर कह रही हूँ। बोलो, कैसी ·· मगर यह यह आखिर तुम्हें क्या ·· ·· सूझी · हुआ ?"

वे बोले—"इस जूते में फँस गई थी। इसमें पैर फँस गया था। ये जूते वास्तव में ऐसे होते हैं, कि ·।"

भाभी साहबा बोलीं—"तो फिर ···फिर क्या हुआ ?"

वे बोले—"मैने उसका पैर निकाल दिया। कोई दूसरी सूरत ही सभव न थी। ये जूते वास्तव में—

भाभी साहबा बात काटकर बोलीं—"तो फिर तुमने उसे अच्छी तरह देख तो लिया · लेकिन आखिर यह तो बताओ कि कैसी है ?"

उनके भाई कुछ रुक कर बोले—अच्छी है।

भाभी साहबा कुछ खुश होकर बोलीं—"तो फिर मैं अब घर तार दिये देती हूं ···मतलब यह, कि निकाह करके जाना तब ?"

"हं !"—वे चौंककर बोले—"वाह खूब।"

खूब नहीं—भाभी साहबा ने जरा जोर देकर मजबूती के साथ कहा—यह खूब · ·बस अब चुप हो जाओ—लो और सुनो · आये वहाँ से कहते हैं खूब !

वे कुछ तेज होकर बोले—क्यों ! आखिर क्यों ? यह भी कोई जबर्दस्ती है !

दाँत पीसकर कुछ धीमे स्वर में भाभी साहबा ने कहा—क्या मेरी

नाक चोटी कटवाओगे ? ·· ·विधवा बहन है, भाई जान देते हैं—बेहद चाहते हैं।

वे बोले—तो मैं क्या करूँ ?

भाभी साहबा फिर दाँत पीसकर बोलीं—अब क्यों मुझसे कहलवाते हो साफ-साफ ·· ··बस रहने दो, चलो · ··आये वहाँ से! किसी के यहाँ मेहमान आते हैं, तो यही होता है।

वे तेज होकर बोले—जी हाँ! कोई मेहमान आता है, तो उसकी चीजें बिगाड़ी जाती होंगी और · ···।

भाभी साहबा बिगड कर बोलीं—"उसकी माँ बैठी रो रही हैं। सिर पीट रही हैं उसी तरह ··वे यहाँ खड़ी सब देख रही थीं, जब तुम उसको ··· ·उसका · · उसे जूता ·जूते से · · तो तुम्हें नही मालूम, कि ये लोग कैसे हैं। वे अपनी जान देने को कह रही हैं तुमने गजब कर दिया ·· समझ लो कि मैं कहीं की न रह जाऊँगी · अभी वे प्रलय मचा ही रही हैं · । मेरी पीठ पर दो हत्थड मार कर उन्होंने अपना सिर पीट लिया, कि तुम्हारे भाई ने · मैं खुद यहाँ आई तो · ·पहुँची तो · फिर समझ लो, अब मेरी इज्जत तुम्हारे हाथ है · मैं तार देती हूँ घर।'

वे बोले—"लेकिन मैं शादी नही कर सकता।"

"वह कैसे, और क्यों ?"—भाभी साहबा तेज होकर बोलीं।

उन्होंने कहा—"मुझे लडकी पसन्द नहीं है।"

भाभी साहबा बोलीं—"अभी अभी तो तुमने कहा कि अच्छी सूरत-शकल की है और अब यह कहते हो! हजारों में एक लडकी है।"

वे बोले—वह और बात है। यह कोई जरूरी नही कि अच्छी सूरत

की सभी लडकियाँ पसन्द कर ली जायँ ! हाँ, मैं मानता हूँ, अच्छी सूरत शकल है, लेकिन मुझे पसन्द नहीं।

भाभी साहबा बोलीं—"लेकिन अब तो तुम्हे करनी ही पड़ेगी · तुमने ( कुछ धीरे से ) मेरी जान के पीछे · · तुम मेरी जान के पीछे पड़े हो ·· गजब हो जायगा।"

वे बोले—मैं शादी नहीं कर सकता।

भाभी साहबा बिगड कर बोलीं—तुम्हें करनी पड़ेगी करनी पड़ेगी। क्या तुमने गरीबों की इज्जत का गलत अनुमान लगाया है · क्या तुम मुझे बेइज्जत ।

इतना कहने पाई थीं, कि भाभी साहबा रोने लगीं और चुप हो गईं।

वे कुछ गम्भीरता से बोले, कि "मुझे मार डालो, मै हरगिज नहीं करूँगा। नहीं कर सकता।"

भाभी साहबा की सिसकियाँ लेकर रोने की आवाज आ रही थी या नीचे से अम्माजान के गरजने की। मै सहमी हुई दरवाजे की आड़ मे छिपी हुई खड़ी थी और सोच रही थी कि या खुदा, अब क्या होगा ? मै जबर्दस्ती एक आदमी के सिर मढी जा रही हूँ, और वह है, कि मानता ही नहीं है।

× × ×

फिर इसके बाद बहन भाइयों में बातें हुईं। पहले तो भाभी जान ने मेरी खूबसूरती को बहुत चढ़ा-बढ़ाकर सामने रक्खा। फिर यह कहा कि अगर तुम शादी न करोगे तो मेरी जान मुसीबत मे पड़ जायगी। फिर तरह-तरह की खुशामदें कीं। लेकिन उन्होंने सिर्फ एक

ही जवाब था और वह यह, कि "मै नहीं कर सकता। चाहे मुझे मार डालो। लेकिन मैं नहीं कर सकता।"

यह सब बातें सुनकर भाभी साहबा थोड़ी देर तक चुप रहीं। फिर बोली—तो साफ-साफ क्यों नहीं कहते, कि दिल में कुछ और है। इस लड़की को कोई नवजवान नापसन्द नहीं कर सकता। जरूर कोई बात है। कुछ दाल में काला जरूर है...जो न बहन की इज्जत का ख्याल है, और न यह सोचते हो, कि इस पर ससुराल वाले क्या गजब ढायेंगे? जरूर दाल में काला है। आखिर क्या बात है! साफ-साफ बताओ बोलो' चुप क्यों हो? कहते क्यों नहीं, कि है कुछ!

"क्या कह रही हैं आप"—वे बोले—"कैसा दाल में काला और पीला! कह दिया मैंने, कि मैं शादी नहीं कर सकता! यह मेरा अन्तिम निर्णय है! इधर की दुनियाँ उधर हो जाये, लेकिन मैं शादी ही नहीं करूँगा। बल्कि आज ही शाम को जा रहा हूँ।"

भाभी साहबा जब हर तरह से थक गई, तो उन्होंने अपने भाई से एक दिन और रुक जाने के लिए कहा। यह कहा, कि कल शाम को जाना। उन्होंने कहा कि "मुझे वेकार रोकती हो। मैं बिलकुल जवाब दे चुका।" इस पर भाभी जान ने वादा किया, कि शादी की कोई बात न होगी, चर्चा तक उसकी न की जायेगी। तुम्हारा जवाब और निर्णय मालूम हो गया, अब तुम केवल इतना मान लो! अतः वे राजी हो गये और भाभी साहबा दरवाजे से निकलीं। मुझे एक कोने में सिमटी खड़ी देखा। हाथ से मुझे आने का सकेत किया। मैंने झाँककर देखा कि अम्माजान किधर हैं? एक बार वे स्वय आकर देख गई थीं। मैंने देखा कि मौका है, और तेजी से उतरती हुई अपने कमरे में चली गई।

---

# आखिरी फाँसा

मैं तो अपनी कोठरी में घुस गई और भाभी साहबा को देखिये कि उन्होंने अम्माजान को जाकर दिलासा दिया। हाथ जोड़े, खुशामद की, और मज़ा तो देखिये, कि कहने लगीं, "कि कल तार देती हूँ और निकाह हो जाता है।" यह कह कर उनसे खुशामद की, कि चुप रहें। अम्मीजान कहती थीं, कि "बहन, तुम्हारे भाई ने मेरी बच्ची को कहीं का न रक्खा। भाभी साहबा ने अम्माजान को जब अच्छी तरह तसल्ली दी, तब कहीं जाकर वे चुप हुईं। बात वास्तव में यह थी, कि हम गरीब आदमी, और अम्माजान सचमुच मेरी शादी को लेकर बड़ी चिन्तित थीं। वे कई बार भाभी साहबा से कह भी चुकी थीं, जिसका यही मतलब हो सकता था, कि अपने भाइयों में से किसी के साथ मेरी शादी कर दें। लेकिन प्रकट रूप से यह सम्भव नहीं मालूम होता था, अतः वे यह सुन कर बेफिक्र हो गईं।

अब मैं सोच रही थी कि भाभी साहबा क्या करेंगी? उधर से तो साफ इन्कार है। और इधर अम्माजान को वे धीरज और यकीन दिला रही हैं। अन्ततः मैंने यही समझा, कि रोष थाम कर रही हैं।

× × ×

शाम को भाभी साहबा ने मुझे अकेले में ले जाकर इस घटना के बारे में समझाया। मैं क्या कहती भला? मैं स्वयं जानती थी। मैंने कहा, कि मेरा इसमें कुछ भी कुसूर न था। और मैंने इसलिए नहीं बताया, कि किसी को मालूम न हो जाय! भाभी साहबा ने कहा, कि

अच्छा हुआ, जो तुमने शोर नहीं मचाया। इस सक्षेप पछतावे के बाद उन्होंने अपनी सलाह से मुझे सतर्क किया।

उनकी सलाह यह थी, कि कल सवेरे अम्माजान को तो वे दूसरे सम्बन्धियों के यहाँ इस रिश्ते के बारे में भेज दें, और मुझे अपने अच्छे भाई के पास भेजें, कि मै जाकर उन्हे राजी करलूँ।

या मेरे खुदा ! मै यह सुनकर हक्का बक्का रह गई ! भला मैं एक गैर आदमी के पास जाकर उससे यह कहूँ, कि तुम मेरे साथ शादी कर लो। ना बाबा, यह मुझसे न हो सकेगा। मैंने साफ-साफ भाभी साहबा से कह दिया, कि मुझे मार डालो, तब भी मे न जाऊँगी। यह क्या गजब कर रही हो ? वे बिगड़ कर बोली—क्या तुम्हे वह खा जायगा।

मैने कहा— खा-वा तो क्या जायेंगे, लेकिन मैं कहूँगी क्या ?

वे बोलीं—"मेरी बला जाने तू क्या कहेगी, जैसे बन पड़े, राजी कर लीजियो "कहो कि तुमने जो बातें की थीं, तो अब करो मुझसे शादी ! मे कहीं की न रही।"

इसका मै क्या जवाब देती ? दिल में सोच रही थी, कि जो कुछ भी उन्होंने शरारत की है, उसकी जानकारी घर की घर ही में है। और अगर सब लोग चुप रहें, तो कुछ भी नहीं है। मामिला दब जाय ! जब मै चुप रही, तो वे फिर बोलीं—"अच्छी तरह समझ लो, कि मै तुम्हें घसीट के ले जाकर बन्द कर दूँगी उसके पास !"

अरे !— मेरे मुंह से निकला—गैर आदमी के पास ! आप क्या कह रही हैं ?

अरी कम्बख्त !—वे बिगड़ कर बोलीं—"क्या तुम्हें वह खा जायगा ? [illegible] ? आखिर क्यों मेरा दम निकला जाता है ? [illegible]

बेगार ! आखिर किस बात का डर है तुझे !...बड़ा अच्छा लड़का है। बड़ी अच्छी तरह रक्खेगा तुझे ..तेरे ही राजी करने से होगा . आखिर तू डर क्यों रही है ! मुझे बता तो सही, आखिर क्यों शरमा रही है ? कुछ निगल तो जायगा नहीं तुझे एक दम से · मार तो डालेगा नहीं तुझे और फिर मैं तो दरवाजे से लगी खड़ी रहूँगी... नहीं तो याद रख, कि फिर तू कुमारी की कुमारी ही रहेगी—आगे तू जान !"

मैंने कहा—भाभी साहबा, आप कैसी बातें कर रही हैं ? मुझसे एक अक्षर न बोला जायगा !

वे बोलीं—अच्छा तो पैर पकड़ लीजियो उसके।

मैं चुप हो रही और फिर उन्होंने तकाजा किया तो मैंने कहा—मुझसे न तो कुछ कहा जायगा, और न हाथ-पैर जोड़े जायँगे और न जाऊँगी मैं उनके पास।

भाभी साहबा ने तेज होकर कहा—"नहीं जायगी तो मैं उसे यहाँ बुला लूँगी।" यह कहकर वह चली गई।

× × ×

दूसरा दिन आया, और मैंने देखा, कि भाभी साहबा ऊपर गईं और भाई से कुछ कह कर आईं और मुझसे सिर हिलाकर मुसकरा कर कहा—मैं कह आई हूँ उससे, कि दोपहर को जीने का दरवाजा बन्द करके लेटा करो · कहीं तो जाव, और कोई आकर कोई चीज उठा ले जाय ..और ऊपर से मैं बन्द कर दूँगी।

मैं मतलब समझ गई। मैंने कहा—मैं नहीं जाऊँगी।

नहीं कैसे जायगी !—उन्होंने कुछ खुशी के स्वर में कहा—[illegible],

तुझे मै भावन बना रही हूँ। देखती तो जा ! तू उसकी बातों पर मत जाइयो। जरा मुँह खोल के और डाँटकर बातचीत कीजियो। जहाँ तुमसे चार बाते हुई, बस तेरा ही हो जायगा। कोई तुझे खा थोडे ही जायगा।

क्यों नही खा जायगा !—मैंने कहा—खाने को क्या हुआ ? बल्कि खा लेने से बदतर हुआ कल ! और किसे कहते हैं खा लेना ! मैं नही जाऊँगी !

नहीं कैसे जायगी !—भाभी साहबा बोलीं—मरी जाती है मारे डर के—ज्यादा से ज्यादा तुझे जोरू बनायेगा। और क्या करेगा ? चल छुट्टी हुई ? फिर तुम्हें हाथ-पैर भी जोड़ने नहीं पड़ेंगे। यह तो मतलब है हमारा।

यह तो कहकर वे हँसती हुई चली गईं और मैं चिन्ता में डूब गई। क्योंकि मैंने देखा, कि अम्माजान ने सचमुच नौकर से डोली लाने लिए कहा।

× × ×

कोई बारह बजे होंगे कि दबे पैर भाभी साहबा कोठे पर गई और धीरे से झाँककर अपने भाई को देखा। उसी तरह चुपके चुपके मुसकुराती हुई उतरीं और गर्दन तथा हाथ के इशारे से मुझे बताया, कि सो रहे हैं। मैं अपनी कोठरी मे घुस गई और वे आई सीधी मेरी तरफ !

"अरी कम्बख्त, न तो कघी की तूने, न चोटी बाँधी और न जा रही है मियाँ के पास !" मैंने कुछ जवाब न दिया, सिवाय गम्भीरता से इन्कार कर देने के। इसके बाद एक तूफान से भरा हुआ विवाद और

बहुत बड़ा झगड़ा खडा हो गया। मेरी खुशामद की, डराया, धमकाया और तरह-तरह की बातें की, लेकिन मैं तैयार न हुई तो सचमुच पकड कर घसीटा। मतलब यह, कि खुशामद करती, चुमकारती, बहलाती, फुसलाती, ढकेलती, घसीटती, वे मुझे आखिरकार ले ही गई। अब मैं आने को तो दरवाजे तक आई, लेकिन मुझसे कदम न उठाया जाता था। जैसे किसी ने मेरे पैर थाम लिये। बोल सकती न थी, अतः हाथ जोड़ रही थी कि उन्होंने मुझे घसीट कर एक दम से भीतर ढकेल कर एक धडाके के साथ दरवाजा बन्द कर लिया।

मुझे भाभी साहबा ने कमरे के भीतर ढकेला, और दरवाजा जो जोर से बन्द हुआ तो मैं सामने के पर्दे और दरवाजों के बीच में खड़ी थी। आवाज आई "कौन है?" मैंने बेहद मुसीबत की हालत में दरवाजे को अपनी उँगलियों से खोलने की कोशिश की! मेरा बस न था, कि किस तरह दरवाजे से चिपक कर रह जाऊँ, कि मालूम न हो सके, कि कोई पर्दा और दरवाजे के बीच में खडा है। फिर आवाज आई, "आया!" मैने बेहद तकलीफ उठाते हुये, बेचैन होकर दरवाजे को जैसे नोचने की कोशिश की—हाय, मै क्यों आ गई?

इतने में वे उठकर आये और उन्होंने एक हाथ से पर्दा उठाकर मुझे देखा। मेरा मुँह दरवाजे की तरफ अपनी कुहनी से छिपा हुआ था। उनके मुँह से निकला—अरे!

इतना कहकर उन्होंने पर्दा हटा दिया। वे एक क्षण तक खड़े रहे, फिर उन्होंने पूछा—तुम क्यों आई हो?

मेरे पास भला इसका जवाब ही क्या था? मै मुँह छिपाये, चुपचाप खड़ी, दूसरे हाथ से खिसियानी बिल्ली की तरह दरवाजा नोच

रही थी और वे पर्दा उठाये खड़े [illegible] थे। एक दम से उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और "इधर आओ" कहकर मुझे घसीट कर लाये और चारपाई पर जबर्दस्ती बैठा दिया—"बैठो सीधी तरह।"

मेरी उस समय की हालत बयान से बाहर थी। "[illegible] न करता" वाली कहावत थी। मुझसे फिर उन्होंने पूछा, कि क्यों आई थी? लेकिन मैंने कुछ जवाब न दिया।

मेरा हाथ चेहरे पर से हटाकर उन्होंने कहा—सीधी बैठो! जबान दो सीधी तरह। आखिर यह मामिला क्या है? अब शायद उन्हें पता चल गया कि क्या बात है? लौट कर पलंग बैठे और फिर कुछ गम्भीरता के साथ बोले—तुम्हें आपा ने भेज दिया है?

मैं कुछ न बोली, तो जैसे कुछ झटके के साथ कहा—"आखिर यह क्या मामिला है? बोलती नहीं तुम · · यह कहकर मेरे दोनों हाथ पकड़कर खींचे—"सीधा करो मुँह" · सीधा बिलकुल·· नहीं तो वही उपाय करूँगा · हूँ, नहीं मानोगी · · तू·· ·"

यह कह कर उठे और जो मेरे हाथ कुछ बढ़ाई से पकड़े तो मैं घबड़ाई और लाचार होकर सीधी बैठी, लेकिन फिर भी हद से ज्यादा झुकी जा रही थी।

"अब तो तुम न मानोगी" यह कहकर सचमुच मुझे उसी दिन की तरह पकड़ लिया, और फिर अब मैं क्या बताऊँ, कि किस तरह मुझे लाचार होकर अपनी हिफाजत के लिये अपने आप आँखें खोल कर बैठना पड़ा है।

उन्होंने जरा डाँटकर कहा—"अच्छी तरह समझ लो, कि अगर तुम नहीं मानोगी तो फिर······।" इतना कहकर मुझे और भी

ज्यादा बेबनावट के साथ बैठाया और कहा—"अब की बार अगर तुम सीधी न बैठीं, तो फिर यह समझ लो, कि रक्खा है यह तुम्हारे कन्धे पर हाथ।" यह कहकर मेरे बाँये कन्धे पर हाथ रक्खा, और मैं सीधी आँखें नीची करके बैठ गई! फिर उन्होंने नरमी से पूछा—तुम्हें आपा ने बन्द कर दिया है?

मैंने सिर हिलाकर जवाब दिया तो वे बोले, कि मुँह से बोलो। मैंने लाचार होकर कहा—'जी'

वे बोले—क्यों?

मैंने कुछ जवाब न दिया तो उन्होंने अपने हाथ को जो मेरे कन्धे पर था, हिलाया तो मैं एक दम से बोल उठी, कि "मुझे नहीं मालूम।"

झूटी कहीं की—उन्होंने अनोखे ढङ्ग से कहा।

× × ×

अब इसके बाद का विवरण कठिनाई से दिया जा सकता है और समझा आसानी के साथ जा सकता है। क्या बातें हुईं, और किस मुसीबत के सवालों के जवाब मैंने, किस तरह दिये, बस मैं ही जानती हूँ। बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा, लेकिन जवाब देने वाले से सवाल करने वाला अधिक सख्त था। अतः सभी सवालों के जवाब देने पड़े, बल्कि जबर्दस्ती, झटक-झटक कर, खोद-खोद कर। कुछ "हूँ" के साथ, कुछ 'हाँ' के साथ, कुछ सिर हिला कर, और कुछ इशारों से, मतलब यह; कि इन सभी सवालों के जवाब देने पड़े—जैसे तुम किस लिये आई हो? ···राजी करने के लिये आई हो तो कैसे राजी कर सकती हो?··· ···क्या खुशामद करके राजी करना चाहती हो? ··· तुम्हें कुछ नहीं पता कि कैसे राजी करते हैं? ··· जानती

हो मुझे राजी करना ?... गुलाब जामुन वाली घटना के बाद कभी मेरा ख्याल भी आया ... अच्छा क्या ख्याल था मेरा आया ?...... यह नहीं तो बताओ के बार ख्याल आया मेरा ?... मेरी कल की बातों से तुम कुछ खफा तो नहीं हुई ?

इस आखिरी सवाल का जवाब जो मैंने इन्कार में दिया, तो बस खुदा की पनाह ... । मे हैरान, परीशान हो गई, यह देखकर, कि किस तरह एक कमजोर लड़की के आगे उसके मौन की स्वीकृति से हारकर एक जिद्दी आदमी कहता है—आये हैं तेरे द्वार पर गर्दन झुकी हुई !

× × ×

मैंने सच्ची मुहब्बत के कायदे पर अपने आप दिल में फरमा-बरदारी की चर्चा की और एक हँसी-दिल्लगी के सवाल पर इन्कार में सिर हिला कर जवाब दिया, कि तुम्हें कभी न भूलूँगी।

अतः इस बात और प्रतिज्ञा को मजबूत करके जो मुझे विदा देने के लिये उठे हैं, तो पर्दे तक पहुँचा कर किवाड से मुझे चिपकाकर खड़ा करके चलते-चलते किस मुहब्बत से मेरे कान के पास मुँह लाकर पूछा—"भूलोगी तो नहीं !" सिर हिलाकर मैंने इन्कार में जवाब दिया, कि "नहीं भूलूँगी।" मेरे जवाब के साथ ही जैसे उनका सिर ढुलककर मेरे कन्धे पर आ गया और देखते ही देखते वे मुझे छोड़कर, जैसे कराहने की-सी आवाज निकालकर, पर्दा छोडकर चारपाई पर जा पड़े, और मैंने सुना, कि इस प्रकार कराह रहे हैं, जैसे कि सचमुच कोई प्राण लेवा कष्ट में फँसा हुआ हो। "या मेरे खुदा !" मैंने दिल में कहा—यह किस पीडा में फँसे हैं ?

मैंने धीरे से दरवाजे को खटखटाया और भाभी साहबा ने धीरे से दरवाजा खोल दिया। किस तरह उत्सुक हुई आँखों से मुसुकुराती हुई उन्होंने चुपके से पूछा—"कम्बख्त बोल तो सही डस आई मेरे भइया को!"

कम्बख्ती मेरी, कि मैं वाक्य पूरा होने के पहले ही, यह समझकर कि पूछती हैं, कि "राजी कर लिया, या नहीं" मैंने उत्तर में जवाब दिया कि "हाँ" अर्थात् यह कि डस आई। इसके जवाब में किस तरह उन्होंने मुझे चिपटाकर मेरे मस्तक पर बोसा दिया है, कि मैं झेंप गई और एक चुटकी लेकर कहा—ले, अब देख तमाशा लेकिन बता दे, कि मामला पक्का है, या कच्चा!

मैंने मुसुकुराकर कहा—पक्का।

खुश होकर वे मुझे दरवाजे पर खड़ी करके मुसुकराती हुई भीतर गई और मैंने कान लगा लिया दरवाजे पर। वे बोली—तो फिर बताओ, तार दे दूँ या नहीं?

उन्होंने जवाब दिया—जैसा आप मुनासिब समझें?

भाभी साहबा बड़े मजे से बोलीं—कोई जबर्दस्ती तो है नहीं भैया! तुम कहो तो दूँ तार, और कहो तो न दूँ!

वे बोले—न दीजिये।

भाभी साहबा ने कहा—जैसी तुम्हारी मरजी हो। लो अब सिधारो रात को! मैं जाकर सामान करूँ तुम्हारे खाने का!

यह कहकर भाभी साहबा आती हुई मालूम पड़ीं, और उधर मेरे दिल का हाल यह, कि जैसे मौन-सी ठडक मेरे दिल में बैठ गई, कि या खुदा, इस आदमी ने यह सब झूठी मुहब्बत के वायदे किये और

लिए थे। लेकिन कठिनाई से भाभी साहबा के पैर दरवाजे तक पहुँचे थे, कि भीतर से वे पुकारे—सुनो तो!

भाभी साहबा बोलीं—"क्या है?" यह कहकर जो भीतर की तरफ मुड़ी तो उन्हें हँसकर कहना पड़ा—"चल झूठे!" दोनों के हँसने की आवाज से कमरा गूँज उठा, और हँसने के बाद भाभी साहबा ने कहा —"बोलो, हारे कि जीते!"

भीतर से आवाज आई—"हारे।"

मैंने इस आवाज को सुना तो मेरा दिल अपने काबू में आया। भाभी साहबा मेरे साथ हँसती हुई नीचे आई और पहला काम उन्होंने यह किया, कि वापसी तार तो उन्होंने घर दिलवाया और दूसरा उनसे कहकर छुट्टी के लिए दिलवाया।

× × ×

अब जरा मजा तो देखिये कि दूसरे दिन भाभी साहबा ने चुपके से मुझसे आकर कहा—"तुझे बुला रहे हैं।"

मैंने साफ इन्कार कर दिया, कि मैं नहीं जाऊँगी। भला कोई बात भी है। मैं हरगिज न जाऊँगी। उन्होंने बहुत कुछ कहा, लेकिन मैंने इन्कार कर दिया। क्योंकि अम्माजान भी अब आगई थीं और यह भी मैंने उज्र किया। इसका जवाब उन्होंने यह दिया, कि मैं उनसे भी पूछे लेती हूँ। मैंने खुदा की कसम दिलाकर उन्हें हाथ पकड़ कर रोका। लेकिन किसी तरह भी जाने पर तैयार न हुई। आखिरकार उन्होंने जाकर कह दिया। लेकिन वहाँ तो हालत ही दूसरी थी। भाभी साहबा के सिर होगये। शाम तक तकाजों और खुशामदों के मारे भाभी साहबा ने मेरे नाक में दम कर दिया, लेकिन मैं न जाना चाहती थी, और न गई।"

दूसरे दिन तकाजा और भी कड़ा हुआ। भाभी साहबा ने कुछ गम्भीर होकर कहा—क्या बना बनाया खेल बिगाड़ेगी मैं उसे बिना निकाह के घर भी तो न जाने दूँगी · तू नहीं गई और वह भाग खड़ा हुआ तो 'उखड़ गया जमा जमाया, तब कैसी होगी!

कहने को तो मैंने कह दिया, कि अब मामिला पुख्ता है, लेकिन मैं कुछ चिन्ता में पड़ गई। नतीजा यह कि गई दूसरे पहर को। किस तरह सलाम करके मेरा स्वागत किया है, कि कह नहीं सकती। मुझसे कहा—अब शरमाती क्यों हो? क्या कसम नहीं खा चुका हूँ। पक्की मुहब्बत की!

यह कह कर मेरा दाहिना हाथ अपनी आँखों से लगाया और मेरे देखते-देखते गरम गरम आँसू उस पर से ढुलकने लगे·· मैं अधिक प्रभावित हुई और मैंने घबड़ा कर कहा—आप क्यों परीशान हैं?

"तुम मुझे छोड़ तो नहीं दोगी? · यह दुनिया बड़ी धोखेबाज है किसी की बात का विश्वास नहीं · ·· !"

इतना कहा और रूमाल में मुँह छिपा लिया। मैं परीशान होगई। समझ में न आया, कि क्या करना चाहिये! मूर्त्ति की तरह बैठी रही। बल्कि मेरा अपना दिल भर आया। एकदम से रूमाल से मुँह पोंछ कर कहा कि मैं बड़ा दगाबाज और झूठा हूँ। लेकिन कसम खाकर कहता हूँ, कि उमर भर ·· और मरते दम तक मैं तुमसे धोखा और छल न करूँगा · और खुदा के लिए अगर तुमने धोखा दिया तो मैं मर जाऊँगा।

इन इन बातों ने इस तरह गभीरता पैदा होगई, कि शरम और

तीसरा भाग

# अब मैं क्या करूँ

## शेष कहानी, स्वयं मेरी जवानी

### हार

खुदा की पनाह!

उस समय मेरी क्या हालत थी, जब बहन जी ने ठीक समय पर मुझे पकड़ा था और अपनी इज्जत तथा आबरू की कसम दिलाकर कहा था, कि खुदा के वास्ते मान जाओ, और शादी करलो। लेकिन मैंने जवाब दिया था, कि हरगिज नहीं! हरगिज नहीं।

मैंने यह जवाब क्यों दिया था? प्रगट है, कि मिस सिंह के प्रेम में भूला हुआ था। वे बैठी रो रही थीं, और खुशामद कर रही थीं, कि खुदा के लिए मेरा ख्याल करो, और मैं कह रहा था कि लाचार हूँ। दिल में कह रहा था, कि अब तो एक का हो चुका। मर जाऊँगा तो भी मिस सिंह को न छोड़ूँगा। वह मेरी है, और मैं उसका हूँ। वह पहली लड़की है, जिसे देखते ही मैं बेचैन हो गया था। वह पहली लड़की है, जिसे देखते ही मे उसकी तरफ स्वाभाविक ढङ्ग से खिचने लगा था। वह पहली लड़की है, जिससे मेरी दोस्ती हुई और बिना किसी विचार के दोनों ओर से प्रेम सच्ची भावना के रूप में ओठों पर प्रगट होकर तक्लीफ पहुँचाता रहा। दुनिया की सभी खूबसूरत औरतें एक तरफ। मेरे लिए वह एक समझदार परी है, जिसने मेरे दिल के मकान को अपने सच्चे प्रेम की रोशनी से चमका दिया। अंत में विवश होकर टट पड़ गया, और "नहीं" जो ज़बान से निकला, तो पत्थर की लकीर

बन गया। उन्होंने बहुतेरा सिर मारा, मगर मे हिला डुला न। मतलब यह, कि वे हार कर और परीशान होकर केवल यह वादा लेकर चली गईं, कि मैं एक दिन और रुक जाऊँ।

लेकिन एक अजीब और अनोखी मुसीबत तो देखिये! उधर वे कमरे से बाहर गई हैं, और उधर मैं खड़ा हुआ दिल मे कह रहा हूँ, कि मैं मर जाऊँ तो भी मिस सिंह से वादाखिलाफी न करूँगा! लेकिन यह सोचकर जो मैं चारपाई पर बैठा हूँ तो दिल मे एक नई बात समझ पड़ी। वह यह, कि अब मिस सिंह की सूरत-शकल पर जो विचार करता हूँ,तो उसकी जगह पर इस लड़की की सूरत सामने आती है। दूसरी बार कोशिश की, तीसरी बार कोशिश की, और लगातार कोशिश की थी कि मिस सिंह का खूबसूरत और आकर्षक चेहरा सामने आ जाय, लेकिन घूम-फिर कर वही चेहरा सामने आता था। बहुत कोशिश की, बहुत सिर मारा, बहुत झल्लाया, बहुत सिर पटका, लेकिन सफलता न मिलती थी और न मिली। दिल उलझ कर रह गया, और ऐसा घबड़ाया, कि सन्देह होने लगा, कि मिस सिंह मिलेगी तो पहचान भी सकूँगा या नहीं। फिर मजा यह, कि मिस सिह तो सामने आजाती थी, लेकिन चेहरा उसी लड़की का होता था। अर्थात् वही शकल और सूरत सामने आती थी, जो मैंने स्वप्न में देखी थी, कि मिस सिंह तो है, लेकिन सूरत-शकल दूसरी, चेहरे के अलावा सभी बातें मिस सिंह-सी।

लेकिन इसका तात्कालीन परिणाम यह हुआ कि मिस सिंह के प्रेम का जादू और जोर पकड़ गया। उसका प्रेम और तेज हो गया। उसका दिल जैसे दुखता हुआ जान पड़ा। और जैसे पीड़ा से व्याकुल

होकर मैंने कहा कि मिस सिंह को छोड़कर किसी से शादी कर हो नहीं सकता। इस लड़की का चेहरा मिस सिंह के शरीर में शामिल दिखाई देने की कल्पना ने यह बताया कि मिस सिंह उसी लड़की की तरह खूबसूरत है! सचमुच मिस सिंह, रङ्ग को छोड़कर और किसी बात में इस चिनगारी से कम न थी। इसे मेरी आँखों की भूल नहीं समझना चाहिये, बल्कि यह सच बात थी, कि मिस सिंह एक खूबसूरत और बहुत खूबसूरत लड़की थी और मैं उसका सोलह आने उसका था।

× × ×

लेकिन यह जो किसी ने कहा है कि औरत साक्षात् एक जादू है, तो शायद हर औरत के बारे में कहा है। बहन साहबा ने नरमी और लापरवाही का जादू फूँककर वायदा किया, कि शादी के लिए हठ न करेंगी, और मैं मानता हूँ, कि वायदा अच्छी तरह पूरा किया गया। लेकिन सोचने के लायक बात है, कि किस तरह उन्होंने मुझे पराजय दी। खुदा की पनाह! उन्होंने कैसा पाँसा फेंका है, कि खुदा की पनाह! किस तरह उन्होंने मुझे अपनी ननँद की लड़की के साथ अकेले छोड़ दिया, और वह लड़की, जिसे मैं एक नासमझ और अनुभवहीन लड़की समझता था और जिससे मैं केवल मजाक में बातें कर रहा था, किस तरह उसने मुझे जहर दे दिया।

वह आई, मैं उससे बिना बनावट के मिला। लेकिन मैंने सवाल शुरू कर दिये। जबर्दस्ती उससे जवाब लिये, और उसके जवाबों ने मुझे कहीं का नहीं रक्खा। गुलाब जामुन वाली घटना, फिर स्वप्न वाली बात, फिर गुलाब जामुन की घटना के बाद स्वयं उन पर क्या गुजरी, उसे मेरा किस प्रकार कई बार ख्याल आया, फिर उसकी [illegible]

और शकल, और लाज और शर्म, रङ्ग-रूप तथा सभी बातें। न मालूम इन सभी बातों ने मेरे ऊपर कैसा जादू कर दिया। जालिम ने सब कुछ कह डाला, बस, मानों बरबाद कर दिया। कहाँ थी मिस सिंह और कैसा वायदा! और कैसा प्रेम! तन-बदन में एक आग-सी लगा दी! मतलब, कि थोड़ी ही देर में मुझे पागल बना गई। वह जा चुकी थी, और मैं मिस सिंह को याद करके तकलीफ से सचमुच कराह रहा था! यह सोचना ही बहुत ही कष्टकर था, कि मैंने मिस सिंह को धोखा दिया, दुख और शोक से दिल में जैसे दर्द-सा मालूम होता था। साथ ही यह डर मालूम होता था, जिस तरह मैंने मिस सिंह को धोखा दिया है, कहीं अब यह मुझे धोखा न दे। मानवी स्वभाव ही कुछ उलट-फेर प्रिय, और बात तोड़ने की आदतों से भरा हुआ मालूम हो रहा था।

जब तक घर से कोई कमाण्डर पहुँचे, मैं दो बार उससे मिला। इन मुलाकातों ने मुझे और भी डुबो दिया। मैं बिलकुल उसके काबू मे होगया। दिल और दिमाग, दोनों खो बैठा। मिस सिंह का प्रेम तो बड़ी चीज है, विचार जो बहुत ही सूक्ष्म है, उसका भी कहीं पता न था।

× × ×

शादी के बाद मुझे मालूम हुआ, कि मैंने बड़ी जबर्दस्त हार खाई। यह भी मालूम हुआ कि औरत क्या चीज है, बीबी क्या चीज है? एक मीठा जहर है, एक असफल जादू है!! फिर बीबी भी कैसी! सुन्दरता की मूर्ति, दिल को खींचने वाली, और स्वप्न जैसी मधुर! प्रेम, चाह, विश्वास और फरमाबरदारी की जीती जागती तसवीर! मैं यह था, कि मैं नौकरी पर चला जाऊँगा। और उसे घर छोड़

जाऊँगा। यह सब कुछ निश्चय था, लेकिन उसका चुपके से मेरे कान में कहना, कि मुझे साथ ले चलो ''अब सारी दुनिया एक तरफ है, लेकिन मैं नहीं मानती। सैकड़ों हीले और बहाने काट छाँट कर निकाले, लेकिन साथ ले जाने के लिए लाचार हो गया। अत. यह निश्चय हुआ, कि उस 'सद्गुणों की कणी' की एक निकटवर्ती सम्बन्धिनी को साथ लेकर नौकरी पर जाऊँगा। एक पड़ोसी को पत्र लिख दिया कि एक उचित मकान खोज कर ठीक कर लो।
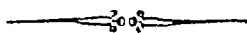
## लेकिन सबसे कड़ी मुसीबत

बीबी को लेकर नौकरी पर जो पहुँचा हूँ, तो मानों मुसीबत का मोर्चा-सा दिखाई पड़ा। मिस सिट के कितने खत इस बीच में आ चुके थे। मैं एक खत उसे संक्षेप में लिख चुका था, कि घरेलू मामलों में फँसा हुआ हूँ और कहीं बाहर जा रहा हूँ, मैं जब खुद खत लिखूँ, तब जवाब देना। लेकिन जनाब, वहाँ तो हालत ही दूसरी थी। उसने दो चार दिन प्रतीक्षा करके बहुत ही कष्ट पहुँचाने वाली चिट्ठियाँ लिखनी शुरू की, अर्थात्, जैसे कि मैं उसको लिख रहा था, या वह मुझे लिख रही थी और जैसे स्वभावत उसे लिखनी चाहिये था। मैं इन चिट्ठियों को पढ़कर बेचैन-सा हो जाता। लाचार होकर फिर यह करता कि चिट्ठी आती तो उसे पढ़ने की जगह पर उस पर एक सरसरी निगाह डाल देता और फाड़ कर फेंक देता, और फेंकने ही जैसे मेरे दिल पर एक हथौड़ा-सा लगता। लपककर चिट्ठी उठा लेता, और उसे फिर सारे टुकड़े-टुकड़े करता। बीबी मेरी यह हरकत देखतीं, मुझे

ध्यान से देखती, आँखों में आँखें डालकर देखती, और मुसुकराकर शरमाती हुई आवाज म पूछती—किसका खत था ? ·· ··बड़े नाराज हो उससे ! बस, यह सुनते ही अद्भुत हाल हो जाता । वह न मालूम क्या समझती, और विचारों की उलझन में उसे देखता का देखता रह जाता । उसे ध्यान से देखकर मुसुकुरा कर कहता—"मैं बड़ा झूठा हूँ··· · बड़ा वेवफा हूँ ·····देख लेना तुझे बड़ा धोखा दूँगा।" यह सुनकर वह हँसी क मारे खिल जाती, और उसकी हँसी ! ·· मुझे यह मालूम होता, कि उसकी गरम-गरम साँस प्रेम और चाह की महकती हुई तुफानी हवा है ।

× × ×

सत्तेपतः यह, कि नौकरी पर पहुँचा तो सोचा कि अब मिस सिंह से कैसे बनेगी ? वह एक से एक बढ़-चढ़कर खत लिख रही थी। यहाँ तक पहुँची, कि घर से चिट्ठियाँ लौटकर मेरे पास यहाँ पहुँचीं। मैं किस तरह कसबे में अपने को छिपाये रखता था, कि जैसे कोई अपराधी शहर की गलियों और बाजारों से हमेशा भयभीत रहे, कि अब पकड़ा गया। मारे डर के जी चाहता था, कि घर से निकलूँ, और हरदम खटका-सा लगा रहता था, कि अब किसी ने कहा कि मिस सिंह तुम्हें बुलाती हैं ।

एक दिन इन मामलों पर अच्छी तरह विचार किया और यह निश्चय करके कि शीघ्र मामिले को निपटाना चाहिये, अर्थात् यह, कि मिस सिंह को जल्द से जल्द सच्ची बातों से परिचित करा देना चाहिये; खूब सोचा तो मालूम हुआ, कि लाहौल बिला कूह, डर ही किस बात का है । आखिर कहना तो अच्छी तरह कहना, फिर उसमें अब सोच-

विचार क्या ? अतः यह सोचकर उसे फुल बूट भेज दिये, और नौकर को सभी बातों को अच्छी तरह समझाकर कहा कि यह खत दे देना। और कोई बात न बताना। खत में लिखा, कि मैं आज रात में ही आया हूँ और जल्द से जल्द तुमसे आकर मिलता हूँ।

× × ×

मैं दिल को खूब कड़ा करके मित सिंह के यहाँ पहुँचा। लेकिन उसे देखते ही मेरे होश उड़ गये। मुझे देखते ही, उनका चेहरा खुशी से चमकने लगा। आँखें, मानों नाचने लगीं। चेहरा जिन्दादिली, और खुशी से चमकने लगा। मतलब यह कि मुझे देखते ही उसकी विचित्र हालत हो गई। झपटी वह मुझे लेने के लिये। मैं इस तूफानी स्वागत के लिये बिलकुल तैयार न था। लेकिन जिस तरह बन पड़ा, सामना किया, किस तरह शौक से आगे बढ़कर उसने मुझसे हाथ मिलाया है और फिर दूसरे हाथ से, मिलाने वाले हाथ को पकड़कर, ले जाकर मुझे कमरे में बैठाया! अब मैंने देखा, कि परिस्थिति किस तरह नाजुक नहीं, बल्कि खतरनाक है। भला यह कैसे हो सकता था, कि वह इतने दिन बाद अपने प्यारे और चाहने वाले से मिले, और बिना किसी बनावट के नहीं, बल्कि प्रेम से न मिले! यह कैसे सम्भव था, कि उसके ओंठो और स्वर में प्रेम का पुट न हो? यह कैसे सम्भव था, कि जब दोनों ओर से सच्चे प्रेम की प्रतिज्ञा हो चुकी हो, तो वह "डियर" और "माई डियर" शब्द का प्रयोग न करे। इस शब्द के सुनते ही जैसे मेरे कान में भाला लगा। उसकी स्वाभाविकता में सच्चा प्रेम के रोम रोम प्रगट कर रहा था। और फिर सोचिये, कि आखिर उसे इन बातों को छिपाने की जरूरत ही क्या थी? यह मुझे अब

अपना समझती थी, और अपना समझकर लाई थी। अपना समझकर अब किस प्रेम से मेरी उँगुलियों में अपनी उँगुलियाँ फँसाकर दोनों हाथों को देखकर मुसकुरा रही थी, और अपना फुल बूट देख रही थी। वास्तव में फुल बूट का उसे बहुत शौक था। क्योंकि यहाँ इक्कों पर बैठने से उसके मोजे खराब हो जाते थे। लेकिन उसने उसको बिना देखे ज्यों का त्यों रक्खा रहने दिया था, कि मेरे सामने उसे ध्यान से देखे और भेट की नई चीज का आनन्द प्राप्त करे। उसने फुल बूट के बाँयें पैर को भीतर झाँककर देखा। धीरे से मेरी उँगुलियाँ छोड़कर दूसरे हाथ से जूते को सँभालकर भीतर से देखा, और अपने खूबसूरत चेहरे पर कुछ शिकन डालकर और भी ध्यान से देखा और फिर कहा—यह किसने पहना था ( मुझे दिखाते हुये ) यह देखो, ऊपर से भी किनारा मुड़ा हुआ है और यह देखो · यह देखो · अस्तर कुछ उखड़ सा गया है।

मुझे कुछ उदासीनता से उसने दिखाया और फिर पूछा, कि "यह किसने पहना था ?" अब बताइये, कि मैं इसका क्या जवाब देता ? मैं भला कैसे सच्ची बात बताता कि इसे पहन कर स्वयं मेरी बीबी कूदी-फाँदी थी, और यह उसी ने खराब किया है।

मैंने कुछ घबड़ा कर गले को साफ किया और जवाब देने की जगह पर सोचा, कि लाओ इसी सबन्ध में सच्ची बात कह देने की तकलीफ सहूँ। इस समय मेरा क्या हाल था ? शायद असीमित कष्ट और आकुलता की कठिनाइयाँ झेल रहा था। जब मैंने इस तरह जवाब देने में सुस्ती और चालाकी दिखाई तो उसने अब मानों पहली बार मेरे चेहरे को ध्यान से देखा। मेरा अवश्य बुरा हाल था,

और मुझे देखते ही वह शायद ठिठक कर रह गई। वास्तव में अब तक उसने शायद, कोशिशों में व्यस्त रहने के कारण मेरी उदासीनता और मुर्दनी का अनुभव ही नहीं किया था। लेकिन अब जो उसने सहसा मेरी हालत को ध्यान के साथ देखा, तो हालत बदली हुई तो थी ही, वह खुद चौंक-सी पड़ी।

यह क्या —उसने प्रेम से भरी हुई घबड़ाहट के साथ कहा— मेरे प्यारे, क्या तुम उदास हो? अब जनाब, एक तो मैं अपनी बीबी को छोड़कर दुनिया के सभी प्यारों और दुलारों का मारा हुआ, और फिर वहाँ मामिला ही दूसरा। अतः ये शब्द मुझे बहुत ही दुखदायी मालूम हुये और मैं बहुत ही परीशान हुआ? बल्कि बेहोशी-सी आ गई। उसने मेरी हालत देखकर प्रेम से भरी हुई सहानुभूति से मेरा हाथ पकड़ लिया, और ध्यान से मुझे देखा। उसकी आँखों से असीमित प्रेम से भरी हुई हमदर्दी प्रगट हो रही थी, जिसमें मुझे और भी तकलीफ पहुँची, और मैं बेचैन होगया। परिणाम यह कि मेरा मौन और मेरी परेशानी उसके लिये और भी अधिक उलझन का कारण बन गई। अब, गजब ही तो होगया! मेरी कमबख्ती ही आगई! इसलिए जब उसने मेरी बदली हुई हालत को देखा, तो उसने और [illegible] लगाये। उसने यह समझा कि ( [illegible] न क्यों समझा ) इतने दिन बाद, मैं उससे मिला हूँ —प्रेम के गहरे भावों में डूबा हुआ [illegible] हो रहा हूँ उसने बिलकुल यही समझा, और मैंने देखा कि [illegible] यह विचार उसके दिमाग में बिजली की तरह चमक गया। [illegible] मैंने उसके चेहरे पर [illegible] देखी।

[illegible] इस सन्देह ने मेरी हुई हालत का [illegible] तो [illegible]'

जब इसने अच्छी तरह यह जाँच-पड़ताल करली, कि मेरा हाल जो बदला हुआ है, उसका कारण प्रेम और आसक्ति के भाव हैं, तब उसका क्या हाल होना चाहिये था ? वह आदर और प्रेम जो एक अधिक प्रिय मॅंगेतर का भाग है, जिससे सारी बातें तै हो चुकी हैं। आखिर उस भाग से, खासकर ऐसे समय मुझे क्यों वञ्चित रखती ! फल यह हुआ कि उसके दिल के ऊपर पूरा असर हुआ। मैंने देखा, कि वह बहुत ही ज्यादा हमदर्दी से जैसे बेचैन सी होगई। वह मुझसे सचमुच प्रेम करती थी। और क्यों न करती, जब दोनों ओर से प्रेम और मुहब्बत की प्रतिज्ञा हो चुकी थी। अतः उसने बहुत ही ज्यादा प्रभावित होकर कहा—"मेरे प्यारे ••।"यह कहकर वह हमदर्दी और प्रेम से बेचैन होकर मेरे बिलकुल करीब झुक गई। यहाँ तक की उसकी साँसें मेरे गर्दन पर लगती हुई मुझे तकलीफ देने लगीं। उसने अपना सिर मेरे कन्धे पर रख दिया। दुनिया का तरीका है कि प्रेम का जवाब प्रेम है, और प्रणय के भावो के जवाब में प्रणय के भावों का उद्‌गार होता हे। अतः ऊपर लिखा हुआ वाक्य कहकर उसने मेरी पीठ पर अपना दाहिना हाथ रक्खा, और मैने देखा, कि अब यह पीड़क हाथ, गर्दन लटकाने की चीज बनने वाला है। मैने कुछ घबड़ा कर उसके खूबसूरत चेहरे को देखा, और जैसे मुझे गोली-सी लगी। क्योंकि मैंने देखा, कि उसका चेहरा प्रेम के भावों का केन्द्र है, और उसकी खूबसूरत पलकों मे सहानुभूति से भरी हुई नमी है। स्वय अनुमान कीजिये कि मै कैसा घबड़ाया हूँगा। अब इसे छोड़कर और क्या इलाज था, कि बौखलाकर इस मुसीबत को खतम करने के लिये मै जरा जोर से कहूँ—पानी !

यह कहकर मैं उठना ही चाहता था, कि उसने अपना सिर मेरे कन्धे पर से हटाया, और फिर अधीरता के साथ मेरी ओर देखा, कि मारे दुःख के मेरे दिल पर एक घूँसा लगा। उसकी खूबसूरत पलकों में मोती लटक रहे थे, और हर बूँद में मुझे इनकार दिखाई पड़ा।

पूर्व इसके कि मैं उठूँ, वह लपककर पानी ले आई। अब आप बताइये, कि किस तरह सम्भव था, वह अपने प्रेम के मारे मंगेतर को अपनी कुहनी से सहारा देकर या हाथ कन्धे पर रखकर स्वयं पानी न पिलाती।

लेकिन मैं कदम-कदम पर हर बात को काटना जानता हूँ। जब यहाँ मुझे विवश होकर कुल्ली करने की आवश्यकता मालूम हुई और इस तरह बचाकर, कुल्ली करके बैठकर निश्चिन्तता से पानी पिया। पानी पीने से सचमुच जैसे किसी ने दिल थाम लिया। कुछ ठंडक भी मालूम हुई। उसने पूछा—मेरे प्यारे, तुम कैसे हो?

भागने की तदबीर पर ध्यान देते हुये मैंने गम्भीरता से कहा—मैं ठीक हूँ।

कर मेरे पास ही बैठ गई। इस तरह, कि अब मैंने निश्चय कर लिया, कि अब भागूँ यहाँ से।

मैंने सहसा चौंककर कहा—माफ करना! मैं इस समय कुछ परीशान हो गया हूँ। अब मैं, खुदा चाहेगा तो शाम को आऊँगा। बहुत जरूरी काम था और मैं जल्दी में आया था। मुझे तुमसे कुछ साफ-साफ बातें करनी हैं।

मेरे आखिरी शब्दों को सुनकर जैसे वह झेंप गई। क्योंकि वह इस साफ-साफ बातचीत का वही मतलब समझी, जो समझना चाहिये था, अर्थात् शादी की तारीख वगैरह तै करना, यद्यपि मेरा यह मतलब था, कि सच्ची बातों से उसे परिचित करा दूँ! मैं उठने के लिये थोड़ा हिला।

उसने कहा—अच्छा, अच्छा, लेकिन मेरा विचार था कि थोड़ी देर तुम आराम करते! खैर · ·।

मैं भी दरवाजे की तरफ बढा और वह भी। दरवाजे तक पहुँचते-पहुँचते उसने मेरे कन्धे पर हाथ रख दिया था! और दरवाजे के बीच में मैंने कन्धे पर हाथ के दबाव का अनुभव किया—जैसे कि उसने मुझे रोका, या रोकना चाहा। बनावट फिर बनावट है और प्रेम को प्रगट करने का ढङ्ग फिर ढङ्ग है! सभ्यता और शिष्टाचार के अस्तित्व को भी दुनिया में मानना पडेगा। फिर साथ ही इसका भी कायल होना पडेगा, कि मुसीबतें भी दुनियाँ में कोई चीज हैं! अतः इन सभी बातों पर विचार कीजिये, कि दरवाजे पर बिदा होते समय मैं नहीं कह सकता, कि वह मुझसे बगलगीर हुई या मैं उससे बगलगीर हुआ। लेकिन इसे छोड़कर और कोई उपाय न था, कि जैसे किसीसे ईद नहीं

मिलना चाहते, लेकिन जबर्दस्ती मिलना पड़ता है। अपना [illegible] न दूर ही दूर से ईद मिलते हैं, लेकिन दूसरा शौक से ईद मिल लेता है। बस, यही समझिये! अत. मिस मिट् ने मगनगौर होकर [illegible] उठाकर जो भागा, तो सड़क पर पहुँच कर मुड़कर मैंने देखा, कि उसने खिड़की से सफेद रूमाल हिलाया। और मैं गर्दन नीची करके, बदहवास-सा जो भागा हूँ, तो घर ही पहुँचकर दम लिया।

× × ×

घर पहुँचा हूँ तो दया की जिन्दगी को, जीती जागती आह नहीं बल्कि बिल्कुल प्रतीक्षा-सी प्रतीक्षा करते पाया! इतनी देर की भी जुदाई जिसे कुम्हलाई बन गई थी, गले से लगा लिया। थक कर मैं चारपाई पर गिर पड़ा। आँखें बन्दकर लीं। मेरा मुँह खुला हुआ था, पर मेरे दाँतों को अपनी उँगुली के नाखून से चुपचाप "खट खट" करके बजा रही थी। मैं उसी तरह आँखें बन्द किये पड़ा रहा। अचानक आँखों से देखा। उँगुली में काट खाने वाली दिल्लगी की, तो उसने झट से उँगुली हटा ली। मैं आँखें बन्द करके फिर पड़ रहा। मैं तो किसी गहरे सोच-विचार में था, और वह मेरे दाँतों पर उँगुलियाँ मार रही थी और मैं आँखें बन्द किये हुये उँगुली में काट खाने की बनावटी कोशिश कर रहा था।

बड़ी देर तक इसी तरह गुमसुम पड़ा रहा। यहाँ तक कि दया की [illegible] में अनुभव करने पर लाचार किया, कि दुनिया में [illegible] कोई चीज है। उठा और उठकर [illegible] को [illegible] लिया। [illegible] से। वह यह, कि मैं [illegible] मजबूर [illegible] रहा है। [illegible] हालत [illegible] । [illegible]

कर मेरे पास ही बैठ गई। इस तरह, कि अब मैंने निश्चय कर लिया, कि अब भागूँ यहाँ से।

मैंने सहसा चौंककर कहा—माफ करना! मैं इस समय कुछ परीशान हो गया हूँ। अब मैं, खुदा चाहेगा तो शाम को आऊँगा। बहुत जरूरी काम था और मैं जल्दी में आया था। मुझे तुमसे कुछ साफ-साफ बातें करनी हैं।

मेरे आखिरी शब्दों को सुनकर जैसे वह झेंप गई। क्योंकि वह इस साफ-साफ बातचीत का वही मतलब समझी, जो समझना चाहिये था, अर्थात् शादी की तारीख वगैरह तै करना, यद्यपि मेरा यह मतलब था, कि सच्ची बातों से उसे परिचित करा दूँ। मैं उठने के लिये थोड़ा हिला।

उसने कहा—अच्छा, अच्छा, लेकिन मेरा विचार था कि थोड़ी देर तुम आराम करते! खैर • ।

मैं भी दरवाजे की तरफ बढा और वह भी। दरवाजे तक पहुँचते-पहुँचते उसने मेरे कन्धे पर हाथ रख दिया था! और दरवाजे के बीच में मैंने कन्धे पर हाथ के दबाव का अनुभव किया—जैसे कि उसने मुझे रोका, या रोकना चाहा। बनावट फिर बनावट है और प्रेम को प्रगट करने का ढङ्ग फिर ढङ्ग है। सभ्यता और शिष्टाचार के अस्तित्व को भी दुनिया में मानना पड़ेगा। फिर साथ ही इसका भी कायल होना पड़ेगा, कि मुसीबतें भी दुनियाँ में कोई चीज हैं। अतः इन सभी बातों पर विचार कीजिये, कि दरवाजे पर विदा होते समय मैं नहीं कह सकता, कि वह मुझसे बगलगीर हुई या मै उससे बगलगीर हुआ। लेकिन इसे छोड़कर और कोई उपाय न था, कि जैसे किसीसे ईद नहीं

मिलना चाहते, लेकिन जबर्दस्ती मिलना पड़ता है। अपनी समझ में दूर ही दूर से ईद मिलते हैं, लेकिन दूसरा शौक से ईद मिल लेता है। बस, यही समझिये! अतः मिस सिंह से बगलगीर होकर चिक उठाकर जो भागा, तो सड़क पर पहुँच कर मुड़कर मैंने देखा, कि उसने खिड़की से सफेद रूमाल हिलाया। और मैं गर्दन नीची करके, बदहवास-सा जो भागा हूँ, तो घर ही पहुँचकर दम लिया।

× × ×

घर पहुँचा हूँ तो दया की जिन्दगी को, जीती जागती आह नहीं, बल्कि बिल्कुल प्रतीक्षा-सी प्रतीक्षा करते पाया! इतनी देर की भी जुदाई बड़ी दुखदाई बन गई थी, गले से लगा लिया। थक कर जैसे चारपाई पर गिर पड़ा। आँखें बन्दकर लीं। मेरा मुँह खुला हुआ था, वह मेरे दाँतों को अपनी उँगुली के नाखून से चुपचाप "कट कट" करके बजा रही थी। मैं उसी तरह आँखें बन्द किये पड़ा रहा। अधखुली आँखों से देखा। अँगुली में काट खाने वाली दिल्लगी की, तो उसने झट से उँगुली हटा ली। मैं आँखे बन्द करके फिर पड़ रहा। मै तो किसी गहरे सोच-विचार में था, और वह मेरे दाँतों पर उँगुलियाँ मार रही थी और मैं आँखें बन्द किये हुये उँगुली में काट खाने की बनावटी कोशिश कर रहा था।

बड़ी देर तक इसी तरह गुम-सुम पड़ा रहा! यहाँ तक कि बीबी की जिन्दादिली ने अनुभव करने पर लाचार किया, कि दुनिया में बीबी भी कोई चीज है। उठा और उठकर मिस सिंह को पत्र लिखा। बहुत ही सक्षेप में। वह यह, कि मैं रात की गाड़ी से एक सप्ताह के लिये जा रहा हूँ। स्टेशन जाते समय शायद मिलूँगा। बहुत ही

व्यस्त हूँ। बहुत जल्दी में हूँ। पत्र लिखकर नौकर को समझा दिया, और यह सोच कर पड़ा रहा कि हफ्ते भर बाद देखा जायगा।

× × ×

दूसरे दिन बीवी के सिर में दर्द होगया, और हल्की-सी हरारत भी हो आई। यद्यपि कुछ नहीं था, लेकिन बहुत परीशान होगया। बीबी का अगर बाल भी दुखता तो मेरा दिल दुखता। हमेशा तीमार-दारी करने को जी चाहता। रात ही को बीबी की तबियत अधिक खराब होगई, और सबेरे तेज बुखार और बहुत ज्यादा तकलीफ भी। मैं सचमुच परीशान था। दफ्तर से दस दिन की छुट्टी लेली और वैसे भी डर लग रहा था कि दफ्तर जाते समय कहीं मिस सिंह न मिल जाय। अब इस तरफ से भी निश्चिन्तता होगई।

---

## भंडा कैसे फूटा ?

बीबी की बीमारी की उलझन में यह भी भूल गया कि मिस सिंह को किस प्रकार सच्ची बातों से परिचित कराऊँ! कई बार पत्र लिखने के लिये बैठा, लेकिन हिम्मत न पड़ी। फिर बीबी की बीमारी की परीशानी मे ध्यान ही न रहा। लेकिन इस बीमारी के सम्बन्ध में एक अद्भुत मामिला सामने आया।

मेरी बीबी की सबाधिनी, जो मेरे साथ थी, न जाने किस शक में फँसी हुई थीं। हकीम की दवा हो रही थी, और वे हठ कर रही थीं कि लेडी डाक्टर को बुलाओ? मतलब कि मिस सिंह को। पहले तो मैंने समझा नहीं, लेकिन बाद मे बीबी ने बताया, कि वह किसी

शक में फँसी हुई है। मैंने टाल दिया, लेकिन वे तो जैसे हठ पर आ गई। अब घटनाओं को देखते हुये आप स्वयं ही विचार कीजिये कि भला मिस सिंह को कैसे बुला सकता था? लेकिन वे थीं कि जैसे जिद पकड़ गई। यहाँ तक कि उन्होंने साफ-साफ कह दिया, कि अगर मैंने न बुलाया तो वे स्वयं बुलवा लेंगी।

प्रगट है कि मैं कैसा घबड़ाया हूँगा। बहुत ज्यादा परेशान हुआ। बीबी ने विवश होकर कहा, कि चूँकि लाचारी है, इसलिये हर्ज ही क्या है, बुला लो। अब मेरी जान और भी मुसीबत में पड़ी। न तो यह कह सकता हूँ कि असल में बात क्या है और न बुलवा सकता हूँ। अलावा इसके कि यही कहूँ, कि उनका बुलाना बिलकुल बेकार है। जिसका यह जवाब मिला कि होने दो बेकार! कोई नुकसान तो है नहीं। जरूर बुलवाया जायगा। आखिर यह भी कोई जिद है।

सक्षेपतः यह कि जब मैंने देखा कि अब मेरी न चलेगी तो मैंने एक नया उज्र निकाला। मैंने यह कहा कि डाक्टर साहब से मेरी बहुत ज्यादा गहरी दोस्ती है, और उनसे और यहाँ की डाक्टरनी से अस्पताल की कुछ बातों को लेकर दुश्मनी होगई है। अतः मुझे शक है, कि कहीं डाक्टरनी ठीक इलाज न करे और कोई नुकसान की हालत पैदा होजाय, लेकिन इस उज्र को भी उन्होंने न माना और कह दिया कि चाहे कुछ भी हो, हम डाक्टरनी को जरूर बुलवायेंगे। ऐसा हो है तो इलाज न करायेंगे लेकिन दिखायेंगे जरूर।

कि यह किसकी बीबी है और वह किसके यहाँ देखने आई है। जिससे उसको पता ही न चले और सन्देह जाता रहे। अतः यह सलाह मेरी बीबी की सम्बन्धिनी को पसन्द आई और उन्होंने कहा कि यही किया जायगा, बल्कि कहा कि जरूरी है। और उसे पता न चलने पायेगा। अतः यह निश्चय हुआ कि एक दूसरे आदमी से कहकर डाक्टरनी को बुलवाया जाय। मिस सिंह चूँकि यह जानती थी, कि मैंने घर बदल दिया है, अत. अब मुझे भी कोई डर न रहा, कि उसे पता चल जायगा। अतः एक दूसरे आदमी को सारी बातें समझाकर मिस सिंह को बुलाने भेज दिया।

X X X

मैं एक बराबर वाले मकान के ऊपरी कमरे से छिपकर देख रहा था। मैंने देखा कि मिस सिंह का इक्का आया। मेरा दिल जोर से धड़क रहा था, कि या खुदा कहीं भेद खुल न जाय। इधर मैं इस फिक्र में भी था, कि मिस सिंह को सच्ची बातों से सूचित भी करना है। वह इक्के पर से उतरी और मकान मे गई। इक्के वाले ने एक किनारे गली मे सामने ही इक्का खड़ा कर दिया।

अब मै हद से ज्यादा दो बातूनी साहबो से उलटी-सीधी बातों में लग गया, लेकिन ध्यान उसी तरफ था, कि मिस सिंह गई या है।

जब कुछ देर हो गई, तो मैने झाँककर इक्के को देखा। मालूम हुआ, मिस सिंह देखकर चली गई। मैं बातो में लगा हुआ था, और प्रतीक्षा म था कि नौकरानी घर से बुलाने आती होगी। बल्कि चलने के लिये तैयार ही खड़ा था। इतने मे एक आदमी, जो पानी भर कर बाहर से आ रहा था, दिखाई पड़ा, और जो सामने के कुयें

पर दो फेरे लगा चुका था। मैंने उससे पूछा, कि क्या डाक्टरनी साहिबा गईं? उसने जवाब दिया, जी हाँ गईं। कुँआ सामने ही था। और इक्का कुएँ से कुछ दूर न था, और यह आदमी आते-जाते देख ही रहा था। फिर मैं स्वयं देख चुका था, कि इक्का नहीं है, अतः मुझे सन्देह भी नहीं था, कि मिस सिंह नहीं गईं। हालाकि मिस सिंह घर में थी और इक्केवाला धूप मे घोड़े को बचाने के लिये, या गप्पें ठोंकने के लिये इक्के को बराबर वाली गली में ले गया था, और वहाँ एक दूकान पर बैठा हुआ हुक्का पी रहा था।

अब भीतर की सुनिये। मिस सिंह ने मेरी बीबी को अच्छी तरह देखा। फसली बुखार बताया। लेकिन मेरी बीबी की सम्बन्धिनी ने मिस सिंह को क्या सिखाया-पढ़ाया कि उसने मेरी बीबी से कुछ सवाल किये। और उन सवालों का जब मेरी बीबी ने कोई जवाब न दिया, तो उसने कहा, कि इनके पति को बुलवाओ, जिससे मैं उनसे कुछ पूछ सकूँ। हालाँकि यह पहले ही तै हो चुका था, कि उसको यह पता न चले कि वह मेरे घर, और वह भी मेरी बीबी को देखने आई है, लेकिन अब उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि हम इलाज वगैरह नहीं करायेंगे, और केवल दिखाना तथा राय लेना ही चाहते हैं, अतः कोई हर्ज नहीं और नौकरानी ने कह दिया कि मुझे बुला लाये।

घटना से घटना, और संयोग से संयोग भी किसी समय बड़े अद्भुत [illegible] से उलझे हैं। मैं स्वयं ही घर जाने के लिये उठ खड़ा हुआ था और जा ही रहा था लेकिन दो आदमियों ने मुझे [illegible] कर उलझा [illegible], कि इतने में नौकरानी मुझे बुलाने के लिये आई! दुर्भाग्य [illegible] नहीं [illegible] था। [illegible] ने दरवाजे पर ही खड़े [illegible] मुझे

बुलाया होगा, जिसे मैंने न सुना। यहाँ तक, कि एक दूसरे आत्मा ने कहा कि साहब नौकरानी आपको बुला रही है। मैंने नौकरानी की तरफ देखा, और कहा, तू चल, मै अभी आता। इतने मे वे हजरत जिनसे बहस हो रही थी, और जो एक किताब का हवाला ढूँढ रहे थे, उन्होंने किताब का हवाला मुझे दिखाया। मैंने पढ़ा, और यह कहकर कि आपका विचार गलत है, इसका यह मतलब नहीं है, घर पहुँचा।

× × ×

मैं बिना किसी बनावट और बिना किसी विचार के भीतर पहुँचा, जहाँ नौकरानी ने पहले ही जाकर कह दिया था, कि वे आते हैं। मतो-पतः उधर मिस सिंह अपनी रोगिणी के पति के इन्तजार मे थीं, और इधर मैं बिलकुल बेखबर होकर घर के भीतर पहुँचा।

मेरी बीवी का पलँग दालान में था। उस पर मक्खियो से बचने के लिये मच्छड़दानी लगी हुई थी। दालान के दरवाजे की बनावट भी कुछ ऐसी होती है, और मिस सिंह की कुर्सी भी कुछ आड़ में थी। नतीजा यह कि मुझे सन्देह तक न हुआ। मतलब यह, कि मैंने दालान में पहुँच कर ही मिस सिंह को एकदम देखा। मै ......मैंने उसको, और उसने मुझको।

दोनों पर जैसे अचानक आश्चर्य की बिजली-सी गिर पड़ी। लेकिन उस पर कदाचित् दुख का असर ज्यादा हुआ। इधर मे जैसे चोंककर परीशान हो गया और उधर वह मुझे देखकर कुर्सी पर उछल पडी। इधर मैं एक झटका खाकर सँभला हूँ, और उधर उसने दृढता प्रगट करते हुये अपने को सँभाला। किस तरह उसने अपने मुँह मे शब्द "अरे" को निकलने से रोका था कि कह नहीं सकते। अपने को सँभा-

नते हुये उसने निगाह तो मुझ पर डाली, और दूसरी मेरी बीवी पर और साथ ही अपने को सँभाल लेने के अलावा उसके हाथ से उसका बेग छूट पड़ा। लेकिन उसने फौरन झुककर उठा लिया। रूमाल से बड़ा दृढता के साथ मुँह पोंछा और अब उसकी ताकत और हिम्मत ना देखिये कि उसने मुझसे आँखों में आँखें डालकर, अंगरेजी में मेरी बीबी के सम्बन्ध में कुछ सवाल किये, मैंने आँखें नीची करके जवाब दिया, कि "हाँ" !

बस, इससे अधिक उसे पूछने की जरूरत न थी। उसने मेरी तरफ देखकर सिर हिलाकर कहा कि "आप फिक्र न करें।" सिर्फ फसली बुखार है। मैं अस्पताल से नुसखा के साथ दवा भेजती हूँ। मेरे साथ आदमी कर दीजिये। यह कहकर वह चलने के लिये उठी। मेरी बीबी की सम्बन्धिना ने एक थाली में चार रुपये फीस के रखकर सामने लाये तो उसने धन्यवाद के साथ एक इलायची ले ली और सलाम करके तेजी से यह जा, वह जा !

× × ×

मैं मिस शिर को जाती हुई देखता रहा। न उसने मुझे सलाम किया और न मैंने उसे सलाम किया, और न विदा करने गया बल्कि बैठा तक नहीं।

खुदा की पनाह ! मैं अपनी बीवी को कितना-कितना चाहता हूँ ! न तो शब्द मिल सकते हैं, जो बयान कर सकें और न कलम में ताकत। मेरा दिल मसल उठा। और मैं बेचैन होकर उसकी ओर बढ़ा। इस तरह, कि मेरी बीवी की सम्बन्धिनी लाचार होकर चली गई दूसरी तरफ !

"मेरी जान !" मैंने मसहरी का पर्दा उठाते हुये कहा—यह तू क्यों रोती है ? उसने रोते रोते कहा—"फुल बूट · ।"

"अरे !" मैंने घबड़ाकर कहा— "जालिम, क्या मेरी जान ले गई। मैं सब बताता हूँ। अभी · ···अभी · · ।"

यह कहकर मैंने मजूर किया कि यह वही, बेशक वही फुल बूट है, जिन्हें तुमने पहन कर यह सारी मुसीबत जोत रक्खी है ! बेशक मैंने तुम्हे टाल दिया, और तुम्हें गलत बताया, कि फुल बूट और किसी ने मँगाये हैं। यह कहकर शुरू से लेकर अन्त तक पूरा का पूरा किस्सा ज्यों का त्यों सुना दिया, और बताया, कि किस तरह यह तुमने सपनों में और उसके बाद स्वय प्रत्यक्ष होकर उसमें दखल देकर यह हाल कर दिया, और फिर अब रोती हो। असल मे रोना और सिर फोडना चाहिये मुझे !

चूँकि मैंने पूरी की पूरी कहानी स्वप्न की अनोखी घटनाओ सहित अक्षर-अक्षर सुना दी, और चूँकि दिल से दिल का सम्बन्ध होता है, और वह स्वय जानती थी कि मैं उससे किस तरह प्रेम करता हूँ, और उस पर मरा-सा जाता हूँ, इसलिये कोई कारण न था कि वह मेरी लाचारियों और कमजोरियों पर ध्यान न देती। उसे मेरी ओर से विश्वास तो होगया, लेकिन दिल को इतमिनान कैसे होता ?

इसलिये तरकीबें बताने लगी। उसके काले रंग और उसकी बदसूरती पर बेहद और गलत-सलत आपत्तियाँ बताई और अन्त में यह उपाय बताया कि नौकरी छोड़ कर जल्द से जल्द घर चला जाऊँ।

म भी इसी सोच-विचार मे डूबा हुआ था, कि मिस सिंह का बहुत ही सक्षेप में मतलब से भरा हुआ रुक्का आया, अर्थात् यह कि मुझसे अभी और जल्द आकर मिलो, नहीं तो मै स्वय आकर ले जाऊँगी।

बीवी ने जो यह देखा, तो सचमुच मुझे पकड़ लिया कि हरगिज न जाने दूँगी। अब लाख समझाता हूँ कि भले मानस, तू मुझे छोड़ और धीरज बँधाता हूँ, लेकिन उसकी समझ में नहीं आता। मैं कहता हूँ, कि वह स्वय आजायगी और पूरा झगडा खड़ा हो जायगा और वह जवाब देती है, कि वह आये तो उसे निकलवा देना। दरवाजा बन्द करवा देना, लेकिन जाओ मत! यह भला कैसे सम्भव था? जिस तरह भी हो सका, कसमें खाई, धीरज दिया, ढाढस बँधाया लेकिन फिर भी उसे "रोती-सिसकती" ही छोडकर चला! सहसा वह झपट कर उठी और उसने रोते हुये मुझे याद दिलाया, कि हम दोनों ने सच्चे प्रेम और प्रतिज्ञा पर अटल रहने की कसम खाई है। उसके सिर पर हाथ रखकर मैंने फिर कसम खाई और मिस सिंह के घर चल पड़ा!

वास्तव मे अब मुझे मालूम हुआ कि वे जो कहते हैं, कि भडा फूट गया, तो इसका क्या मतलब होता है। वास्तव में भेद खुलने और भँडा फूटने मे जमीन और आसमान का-सा अन्तर है, जिसे आपने खब देख लिया होगा!

---

# नाराज खूबसूरती

तू अगर चाहे उलट दे वह बज्म मिजाज।
कोई शै मुश्किल नहीं है हुस्न बरहम के लिये॥

मुँह से न बोलना ··· चुप्पी ··तसवीर की तरह चुपचाप··· निर्बोधता · ·गम्भीरता ·· औरत की सहनशक्ति · ये ऐसी चीजें हैं कि कम से कम असली सूरत मे बहुत कम देखने मे आती हैं, लेकिन मैंने सचमुच देखी और साथ ही नाराज खूबसूरती भी!

× × ×

काँपते हुये हाथों से मैंने मिस सिंह के कमरे की चिक उठाई। ऐसा मालूम हो रहा था कि एक अपराधी हूँ, और साक्षात जुल्म का सामना है।

मैं चिक उठाकर भीतर गया, और एक गहरी सहनशक्ति के साथ मिस सिंह खड़ी होगई। एक निगाह मैंने उसकी महारानी जैसी खूबसूरती पर डाली और देखा, कि उसके अबोध और निरपराध चेहरे पर अगर एक ओर स्त्री की सहनशक्ति दिखाई दे रही है तो दूसरी ओर उसका बुराइयों से रहित और मौन चेहरा "नाराज खूबसूरती" के पीड़क भावों को दबाये हुये है। देखते ही मुझे मालूम होगया कि इस निःशब्द पूर्ण बादल के भीतर किस तरह जोश और गजब का तूफान बन्द है। वह साक्षात् औरत की सहनशक्ति सी थी! असल में उसकी सहनशक्ति पर चोट किया गया था, और वह या तो बहुत तेज गुस्से का केन्द्र हो सकती है, या फिर भयानक शेर!

यह एक सवाल था, जो मिस मिन के सहनशक्ति से भरे हुये गभीर चेहरे को देखने के साथ ही मेरे मन में पैदा हुआ।

मुझे ऐसा मालूम हुआ कि जैसे एक तेज बर्छी थी, जब उसने मेरे सवाल का जवाब दिया। बिना किसी तरह के बनावट के वह बैठ गई और मैं भी बैठ गया और अब उसने मुझे ध्यान से देखा।

यहाँ उन लोगों की बात नहीं, जो बाजारू औरतों की जहर और शर्म से भरी हुई आँखे देखे हुये हैं, और अपनी समझ में अपने आप को एक अनुभव का संसार समझे हुये हैं, संसार की हर एक बात को समझने वाला बने हुये हैं। वास्तव में उन्होंने वे आँखे ही नहीं देखी जिसमें इज्जत और आत्म की धार सी रहती है। वे आँखें, जिसकी एक नजर से पत्थर में भी दर्द हो जाता है। वे आँखे, जिसका आँसू अगर फौलाद पर गिरता है तो उसे तोड़ता हुआ निकल जाता है। संक्षेपत मेरी आँखें ऐसी ही आँखों से जा मिलीं।

वास्तव में मैं इस ख्याल में था कि सच्ची बात ज्यों की त्यों कह दूँगा। लाचारी प्रकट कर दूँगा, अपनी गलती मान लूँगा, और साथ ही क्षमा भी।

अब न तो मैं कुछ बोला और न वह कुछ बोली। कई बार उसने आँखें उठा कर देखा फिर उन्हें नीची करली। मैं ध्यान से उसकी तरफ देख रहा था। जब उसकी आँखें मेरी तरफ उठती, तो अपने में सामना करने की हिम्मत न पाकर आखे अपने आप झुक जाती। गरज़त कई बार उसने मुझे देखा और मैं उसे ध्यान से देख रहा था कि मेरे देखते ही देखते उसका सुन्दर और खूबसूरत चेहरा कुछ [illegible] सा दिखाई पड़ा। ऐसा मालूम हुआ, कि जैसे भाव एक

बारीक पर्दे की आड़ में करवटे ले रहे हैं·· सहसा चेहरे के सुंदर आइने पर जैसे शोक की घटायें उमड़कर आगई·· एक ऐंठन-सी पैदा हुई और वे आँसू, जो जबर्दस्ती रोके जा रहे थे, ऐसे गिरे कि मालूम हुआ कि मोतियों की लड़ी टूट पड़ी · · उसने तेजी से अपना मुँह रूमाल से पोंछ लिया, बिना रोये या सिसकी लिए हुये। रो नहीं रही थी, बल्कि आँसू बहा रही थी।

मेरी हालत ईर्षा के काबिल नहीं, बल्कि दया के काबिल थी। मै घबड़ाया हुआ था कि मुझे क्या करना चाहिये। उसको धीरज बंधाने के लिये मेरा अब उससे कोई सम्बन्ध न रहा था। लाचार होकर मैं उसी तरह बैठा देखता रहा। जब उसने अपने गम का पहला बुखार निकाल लिया, तब उसने उदासीन-सी बनकर अपना चेहरा रूमाल से पोंछकर मेरी तरफ देखा·· और मैंने देखा, कि वह गम की एक तस्वीर-सी है। · · मेरा दिल कट गया। कलम में ताकत नहीं, कि लिख सके, कि उसकी हालत किस तरह दया के योग्य·· · लेकिन साथ ही।·· · एक गर्जन से भरी हुई अबोधता चेहरे पर झलक रही थी।

हिम्मत करके मैंने कहा—"मिस सिंह·· ··सचमुच मुझसे बहुत बड़ा कुसूर हुआ · ··माफ कर दो।"

जवाब में वह साक्षात् धैर्य सी बन कर अपनी जगह से उठी, और पास आकर कुर्सी पर बैठ गयी और बड़े ही इतमीनान से मुझसे पूछा —"वह तुम्हारी बीबी है?"

मैंने जवाब मे गर्दन नीची कर ली।

उसने कहा—आखिर तुमने मुझे क्यों धोखा दिया? तुमने अपना

चिट्ठियों में मुझे क्या लिखा था ? क्या तुमने मुझसे प्रेम नहीं किया था ! 'क्या तुमने नहीं लिखा, कि हमारे तुम्हारे सम्बन्ध स्वयं ईश्वर गवाह है !" यह कह कर उसने जेब से मेरी चिट्ठी निकाल कर दिखाई, जिसमें मैंने उसे लिखा था, कि "अब हम दोनों ईश्वर के सामने मियाँ बीबी हैं · तुम मेरी हो, और मैं तुम्हारा हूँ।"

मैंने मिस सिंह को अब ध्यान से देखा। अबोधता और निरपराधिता के अलावा अब उसके चेहरे पर नाराजगी झलक रही थी। अत मैंने बड़ी नरमी से कहा—"पहले मेरी भी तो सुन लो।'

मैंने सुन लिया --वह खीझ के स्वर में बोली—सब सुन लिया मैंने जानती हूँ, कि मैं बदसूरत और वह मुझसे हजार दर्जे खूबसूरत है। इसी सबब से तुमने मुझे छोड़ दिया · तुमने मुझसे प्रतीज्ञा की और अब दूसरे के हो गये "लेकिन नहीं !" उसने जैसे एक क्रियोचित खूबी के साथ पलटा खाया !—"लेकिन नहीं,·· · तुम किसी दूसरी के नहीं हो सकते · · असम्भव है।"—बड़े जोर से उसने चीखकर और घबड़ाकर कहा।

उसी आपसी लगाव से परीशान होकर मैंने—"लेकिन सुनो तो।"

वह जैसे गरजकर बोली—" ·मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकती · मजाक नहीं है · · तुमने मेरी बड़ी बेइज्जती की · · मैं तुम्हें हरगिज नहीं छोड़ूँगी। तुम मेरे हो ···· यह देखो।' यह कहकर उसने चिट्ठी की इबारत पर उँगली रक्खी।

मैंने उसकी तरह ध्यान से देखा। उसके शब्दों में न केवल पीड़ा का हास था, बल्कि एक बल था। · · उसके शब्दों में इतना बल था, कि मुझे दिल में कहना पड़ा—ऐ औरत, तेरा नाम भेदपूर्ण है।

लेकिन शायद वह गलती पर थी, जो इस तरह तेजी और दृढता के साथ कह रही थी, कि तुम्हे हरगिज नही छोड़ूँगी। मैंने बहुत ही नरमी और गभीरता से उसे विश्वास दिलाकर कहा—"मै तुमसे अपनी कहानी कहना चाहता हूँ। जरा इतमिनान से सुनो और स्वय फैसला करो—स्वय फैसला करना।"

मतलब इस प्रकार मैंने उसे रोका और अपनी कहानी शुरू की। गुलाब जामुन वाली घटना से मैंने अपनी कहानी आरम्भ की, और तब से लेकर अब तक सभी घटनाये, स्वप्न की बाते सहित, अक्षर-अक्षर उसे सुना दी। उसने सारी कहानी बड़े ध्यान से सुनी और खास कर स्वप्न के उस भाग को, जिसमे मैंने बताया, कि मैने अपनी बीबी को तुम्हारे भेस में स्वप्न मे देखा। मैंने स्वप्न की घटना को इस तरह बिस्तार के साथ बताया, कि वह तल्लीन होकर सुनती रही और मैने देखा कि उसके चेहरे पर आश्चर्य झलक उठा। सक्षेप में यह कि उसने मेरी कहानी शुरू से अन्त तक बड़े ध्यान से सुनने के बाद बहुत ही गम्भीरता के साथ मेरी आँखों में आँख डाल कर देखा · बहुत ध्यान से और फिर जैसे कोई हुक्म देता है, एक विचित्र आशा और अन्धकार सूचक स्वर में कहा—

"तुम उसको छोड दो। तुम्हारे दिल में मेरे लिये जगह अब भी है। तुम उसको छोड दो ( कुछ तेज होकर ) अभी छोड दो · अभी।" उसके ये शब्द! मुझे ऐसा मालूम हुआ, कि जैसे किसी ने मेरे दिल पर बिजली गिरा दी हो! मुझे बहुत ही बुरा लगा! उन शब्दो को सुनकर तो मेरा दिल ही हिल गया और मैंने बुरा मानकर कहा—"मैं उसे नहीं छोड़ सकता।"

मेरे इस कड़े शब्द ने उसे बुरी तरह घायल कर दिया और चोट खाकर उसने पीड़ा भरे शब्दों में कहा—क्यों नहीं छोड सकते ? ... हाँ, मैं जानती हूँ तुम्हारे यहाँ निकाह मे दिये हुये रुपये का झगड़ा होता है ... भगवान की सौगन्ध, मैं दे दूँगी ... मैं दे दूँगी !

इन बेकार की बातों को सुनकर मैं जल-भुन गया और फिर बुरा मानकर कड़े स्वर में कहा—मेहरबानी करके ऐसी बातें मत करो। मैं उसे हरगिज नहीं छोड सकता।

"और मैं तुम्हें नहीं छोड सकती"—उसने चीखकर कहा और मेरा हाथ इस तरह पकड़ा, कि मैं सचमुच चोंक पड़ा ... उसने बड़े जोर के साथ फिर उसी तरह कहा—"मै तुम्हे नहीं छोड़ सकती ... नहीं जाने दूँगी !"

मेरा हाथ उसकी पकड में था ! वह मजबूती से मेरा हाथ पकड़े हुये प्रसन्न आँखों से मुझे देख रही थी ! क्या मे हिम्मत कर सकता था, कि हाथ छुड़ा लूँ या कह सकूँ, कि भला तुम मुझे कैसे नहीं छोडोगी ? कभी नहीं ! असम्भव था !

मैं बेहद घबडाया। अपने को सँभालते हुये मैंने कहा—बच्चों की सी बातें न करो। हम दोनों समझदार हैं। गुस्से या जल्दबाजी से कोई नतीजा नहीं निकल सकता। घटनाएँ फिर घटनाएँ हैं। उन्हें देखते हुए हमे कुछ समझौता करना चाहिये तथा समझ से काम लेना चाहिये। सुलह और मेलजोल से काम लेना चाहिये। जल्दी और तेजी से कोई फायदा नहीं होगा।

वह बोली—सुलह और मेलजोल !

मैंने कहा—हाँ !

"समझौता !"—उसने कुछ रुककर कहा—मेरी बुद्धि ठिकाने नहीं है, लेकिन हाँ, मै तैयार हूँ। तुम बताओ उपाय! तुम बताओ, अब मुझे क्या करना चाहिये ?"

मैंने कहा—"तुमको यह करना चाहिये, कि मेरे कुसर माफ कर दो। निस्सन्देह मुझसे अपराध हुआ ?"

"मैने माफ कर दिया"—वह बोली—"लेकिन फिर उसके बाद क्या हो ?"

मैंने कुछ प्रसन्न होकर कहा—तुमने माफ कर दिया! मै तुम्हारा कृतज्ञ हूँ! उम्र भर एहसान न भूलूँगा! तुम मुझे अपना सबसे अच्छा दोस्त समझो। दोस्ती के वही पुराने सम्बन्ध रक्खो! मै विश्वास दिलाता हूँ, कि मै तुम्हारा सदा सच्चा और बात निभाने वाला दोस्त साबित हूँगा।

"अरे! अरे··· तुम क्या बक रहे हो !"—मिस सिंह आश्चर्य चकित होकर बोली—"दोस्ती! ···शायद तुम्हें नहीं मालूम कि मुझे अङ्गरेजों की हर चीज से घृणा है! केवल उनके मजहब को छोड़कर! इसलिये इस दोस्ती की मशा मेरी समझ में नहीं आती! और फिर हमारा तुम्हारा वायदा दोस्ती का तो था नहीं। यह देखो ?"

उसने फिर चिट्ठी की इबारत मेरे सामने की।

मैंने कहा—मैं तुम्हारा सबसे अच्छा दोस्त रहूँगा!

वह बोली—फिर वही घृणित अङ्गरेजी मुहाविरा! यही मतलब है न कि एक स्वार्थी दोस्त से अधिक तुम मेरे लिये कुछ और नहीं हो सकते ? · और इस वायदे को क्या करूँ जो तुम्हारी इस चिट्ठी मे मौजूद है · मैं फिर कहती हूँ, कि म हिन्दुस्तानी हूँ · ·

बिलकुल हिन्दुस्तानी · ·· अङ्गरेजिन नहीं हूँ और न मेरे यहाँ यह होता है, कि आज एक की, कल दूसरे की क्या तुम्हारा यह मतलब है, कि मैं तुम्हारे वायदों को भूलकर किसी और से बचन-बद्ध होने की चिन्ता करूँ!

उधर वह जवाब का प्रतीक्षालु हुई और इधर मै बहुत ही ढङ्ग के साथ कहने को हुआ, कि हाँ, यही अच्छा होगा, लेकिन पूर्व इसके कि मै कुछ कहूँ, उसे मेरे दिल की बात मालूम हो गई! वह आँखें फाड़ कर एक साथ ही चौंक पड़ी, और बोली—"हैं! हैं! ·· · खुदा के लिये! खबरदार, बिना सोचे-समझे कोई शब्द मुँह से न निकालो! वैसे ही क्या तुमने मुझे कम अपमानित किया है, जो अब !"

मैं कहते कहते रुक गया! मेरे मौन पर वह बोली—"अच्छा तुम एक बात बताओ!"

"वह क्या ?"

"सच-सच कहना! जब तुम मुझसे मिले हो तो जानते थे, कि प्रेम और मुहब्बत क्या चीज है ?"

मैंने सच-सच कहा—बिल्कुल नहीं!

वह बेफिक्र होकर बोली—यही मेरा हाल था। मेरे लिये ससार के पुरुष साधारण आदमी थे। अच्छा, अब एक बात और बताओ··· लेकिन सच-सच यह बताओ, कि तुम्हें उम्र भर में सबसे पहले किस लड़की से प्रेम हुआ ?

या मेरे भगवान! मै इस सवाल से कुछ परीशान-सा हो गया! मुँह से सच निकलना मुश्किल था! झूठ बोल नहीं सकता था। मुझे परीशानी में देखकर, कुछ सफलता के स्वर में वह आँखें फाड़कर

बोली—तुम झूठ नहीं बोलोगे ! तुम झूठे नहीं हो ! बताओ सच-सच · बोलो · बोलो · ·जल्दी ;

मैंने लाचार होकर आँखे झुकाकर कहा—तुम्हें !

जैसे वह चौककर उछल पडी, और उसने प्रसन्न होकर सफलता के स्वर मे कहा—बस, बस !! मैं अब किसी दूसरे की तरफ देख भी नहीं सकती । मेरे लिये यह पाप है अपराध है । मेरे खान्दान में कभी ऐसा नहीं हुआ । मै हिन्दुस्तानी हूं और पातिव्रता-पोषक हूं । म शरीफ हूँ । बस, बस !!

मैंने परीशान होकर कहा—मिस सिंह यह बुद्धिमानी की बातें नहीं हैं ! समझौते और निपटारे की बाते करो । इसमे कोई लाभ नहीं, कि मेरा और अपना दिल दुखाओ ।

"तुम्हारा दिल दुखता है · ·मुझे तकलीफ में देखकर ।" उसने विचित्र ढङ्ग से मुझसे पूछा !

क्यों नहीं ?—मैने कहा—मै किसी तरह तुम्हारा दिल दुखाना नही चाहता !

वह प्रसन्न होकर बोली—"तुम सच्चे हो ! तुम्हें मुझसे मुहब्बत है ।· ·अब तुम यह बताओ, कि मैं तुम्हारी बीबी से कब मिलूँ ? मैं उनसे मिलना चाहती हूँ !"

मैंने घबड़ाकर कहा—क्या करोगी उनसे मिलकर ?

वह बोली—"तुम मुझे नही रोक सकते · हरगिज नहीं रोक सकते ! तुम समझौते के लिये कहते हो । इसलिये मुझे अधिकार है, कि जो जी में आये, मैं उनसे बातें करूँ । तुमसे कुछ मतलब नहीं । मुझे बताओ कि वे कब मिल सकती हैं ।"

मैंने बहाना किया कि तबीयत खराब है, उस पर जवाब में उसने कहा—"मैं दो दिन में उन्हें अच्छा कर दूँगी।" मैंने कहा कि मैं घर जाकर पूँछकर तुम्हें बताऊँगा, कि कब मिल सकती हैं ? वह मान गई। बहुत कुछ मैंने खोद-खोदकर पूछा, कि मुझे बताओ तो आखिर मेरी बीबी से क्या बातें करोगी, लेकिन उसे न बताना था, और न बताया। यह कहा, कि "तुम्हें इससे कुछ मतलब नहीं ! जो मेरे मन आयेगा, बातें करूँगी !" मैं बिदा होकर सोचता हुआ घर पहुँचा।

## मुकाबिले का इम्तहान

शायद आप जानते ही होंगे कि मुकाबिले के इम्तहान से क्या मतलब है ? ऐसे इम्तहान बिलकुल न्याय के ही आधार पर होते हैं। अगरेजी में इस तरह के इम्तहानों को "कौम्पटेटिव एकजामिनेशन" कहते हैं।

× × × .

मे घर पर आया, तो घरवाली को अजीब परीशानी की हालत में पाया। बुरा हाल था बेचारी का। मैंने उसे धीरज बँधाया। सारी बातें अच्छी तरह समझाया और यह कहा, कि तू क्यों अपनी जान परेशान किये देती है ? मैं सोलह आने तेरा हूँ, और तू मेरी। मौत आ जाय तो दूसरी बात है, नहीं तो मेरी दृढता और सचाई में हरगिज फर्क न पड़ेगा। आखिर तू क्यों घबड़ा रही है ? संक्षेप मे यह, कि उसे अच्छी तरह विश्वास दिलाया और ढाढस बँधाया। फिर दुबारा समझाया, कि इस समय साहस और धैर्य से काम लेना चाहिये। अगर गुस्से मे या

शोर से काम लिया तो बड़ी गड़बड़ी हो जायगी ! इसके बाद मैंने उससे कहा, कि मिस सिंह मिलना चाहती है। वह चौंक कर बोली—क्या लड़ेगी मुझसे ?

मैंने कहा—तू बेवकूफ है तो क्या वह भी बेवकूफ है? लड़ेगी नहीं, बल्कि कुछ बातें करेगी। शायद यही कहेगी कि तू मुझे छोड़ दे, तो जैसी तेरी खुशी। जैसा जी में आये, जवाब देना।

यह सुन कर बड़बड़ाती रही और मैंने उसे अच्छी तरह समझा दिया, कि तुम लड़ना मत, बल्कि खूब सोच-समझ कर जवाब देना।

इसके तीसरे दिन बाद मैंने मिस सिंह को चिट्ठी लिखकर भेज दी, कि मेरी बीवी अब अच्छी तरह है, और तैयार है, जब जी में आये, आकर मिल लो !

× × ×

मिस सिंह मेरी बीबी से मिलने आई ! अकेले में उसने घंटे भर मेरी बीबी से बातें कीं और फिर चुपचाप बिना मुझसे मिले हुए या बात किये हुये चली गई।

मैं जो बीवी के पास आया, तो उसे बेजान पाया। बुरी तरह वहह रो रही थी। और किस तरह उसने मुझसे कहा, कि "मै बिना तुम्हारे जीवित नही रह सकती।"

मैने अपने प्यारी बीबी को गले से लगा लिया और कहा, कि मैं स्वय तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता। इसके जवाब मे उसने रो कर बताया, कि यही मिस सिंह कह गई है, कि वह मेरे बिना जीवित नहीं रह सकती। मानो अब असल बात यह थी, तीनो मर रहे थे या मरने की धमकियाँ दे रहे थे। बीवी बिना मेरे जीवित नहीं रह

सकती, और मैं बिना बीबी के जीवित नहीं रह सकता और मिस सिंह बिना मेरे जीवित नहीं रह सकती। अर्थात् सब इस तरह आपस में कुछ सबन्ध में बँध गये।

मिस सिंह की साफ-साफ बातें मालूम हुई। मेरी बीबी से, वह सौत के प्रेम पूर्ण और पवित्र सम्बन्ध को कायम करने की सभावनाओं पर बहस करने आई थी। यह भी अनुमान लगाने आई थी कि वह स्वय अधिक बेवकूफ है, या मेरी बीबी। उसे मालूम हुआ, कि मेरी बीबी उसे कहीं अधिक बेवकूफ है, अर्थात् मुझे बेहद चाहती है। फिर उसके बाद उसने अपनी कहानी सुनाई और मेरी बीबी से न्याय माँगा। इसके बाद जवाब में मेरी बीबी ने उससे हाथ जोड़कर खुशामद के साथ कहा—"भगवान के लिए तुम मेरी और मेरे पति की जान छोड़ दो। और माफ कर दो।" सक्षेप में यह, कि मिस सिंह की बेहद खुशामद की और मिस सिंह ने इसके जवाब में स्वय मेरी बीबी की खुशामद की, कि "बहन, तू ही मान जा।" जब इससे काम न चला, तो मिस सिंह ने मेरी बीबी के सामने एक और सलाह रक्खी। उसने कहा, कि जब तुम किसी तरह मानती ही नहीं हो, तो आओ हम तुम दोनों मिल कर जहर पीले और झगड़ा खतम हो जाय। मतलब यह था वह मुकाबिले का इम्तहान, जिसमें मेरी बीबी फेल होगई। उसने मिस सिंह से कह दिया, कि "ना बहन, मे जहर-वहर नहीं पीती-पिलाती। तुम चाहे जहर पिओ, या जो जी मे आये, करो, लेकिन मुझे माफ करो। मुझे यह इम्तहान मजूर नहीं है।

मतलब कि मेरी बीबी ने तो इम्तहान में बैठने से ही इन्कार कर दिया और मिस सिंह उससे यह कह कर चलती बनी, कि "अगर तुम्हें

इस इम्तहान की जरूरत नही, तो क्या परवाह है ? मैं स्वय ही इस इम्तहान मे शामिल हूँगी और प्रथम आऊँगी !

अर्थात् मतलब यह, कि वह मेरी बीबी से साफ-साफ कह गई थी, कि मै जान दे दूँगी। यह सुनकर अब मेरे दिल का और भी बुरा हाल हुआ। क्योंकि मैं जानता था, कि मिस सिंह न केवल दृढ स्वभाव वाली औरत है, बल्कि वह उनमे से है, जो कहे तो सचमुच वही कर दिखाये।

× × ×

मैं इसी उधेड़बुन में था कि क्या होगा अब! मतलब कि इसी चिन्ता मे था, कि मिस सिंह का आदमी चिट्ठी लेकर आया और जबानी भी कहा, कि आपको बुलाया है जल्द !

बीबी ने जो यह सुना, तो वह सचमुच जबर्दस्ती रोकने लगी। कहने लगी, ऐसी औरत के पास न जाओ, जो जान देने और जान लेने वाली बन रही है। यद्यपि उसका डरना एक सीमा तक उसके पक्ष में उचित था, और मैं भी मानता था कि आश्चर्य नही, जो मिस सिंह कुछ कर डाले, लेकिन मै ऐसा भी डरपोक नही हूँ, जो उस डर के मारे न जाता। जिस तरह भी हो सका, बीबी को समझा बुझाकर रोती हुई छोडकर चल पड़ा !

# अल्टीमेटम

मैं मिस सिंह के यहाँ पहुँचा। चिक उठाकर कमरे के भीतर गया और सचमुच आश्चर्य-चकित होकर जैसे खड़ा का खड़ा रह गया।

इस समय वह किस तरह खूबसूरत और आँखो को अपनी ओर खींचने वाली बनी हुई थी। उसके घने, काले बाल पहले ही की तरह बाईं ओर को झुके हुये पीछे चले गये थे। खूबसूरत आँखों की पलकें किस तरह झपक रही थीं। चेहरे पर सलोनेपन के साथ जवानी की पवित्र ज्योति बरस रही थी। वह ज्योति, जो एक पवित्र और अछूती कुमारी का जन्मजात भाग है। फिर इस समय आश्चर्य तो मुझे इस पर आया, कि उसके चेहरे पर एक हल्की सी खुशी और सफलता की जैसे ज्योति-सी बिखरी हुई थी। जिसकी चमक से उसका नवजवान और खूबसूरत चेहरा एक सुन्दर फूला-सा मालूम हो रहा था।

मुझे देखते ही प्रेम से भरी हुई एक स्फूर्ति-सी उसके चेहरे पर आई। सलाम का जवाब बड़े इतमीनान से उसने दिया। बढ़कर उसने स्वागत किया, और वह भी बड़े उत्साह के साथ। फिर बढ़कर उस दरवाजे को बन्द करना चाहा, जिससे मैं भीतर आया था। यद्यपि बाहरी सभी दरवाजे असाधारण ढङ्ग से पहले ही से बन्द थे। मैं मानता हूँ कि मैं कुछ घबड़ा-सा गया और मैंने कहा—"क्यों बन्द करती हो?"

उसने मेरे चेहरे को देखा। मेरी घबड़ाहट को देखा और कदाचित् घृणा से भरी हुई मुसकुराहट नरमी से इस प्रकार कहा, जैसे कि वह फरियाद कर रही थी। उसने कहा—तुम एक कमज़ोर लड़की से डरते हो।

और फिर उससे जो अब भी तुम्हें अपना प्रिय मंगेतर मानती है; बल्कि पति ! वह जिसने भगवान के सामने तुम्हें अपना पति माना है !

मै क्या बताऊँ, कि मै लज्जा के मारे जमीन में गड़ गया और लज्जित होकर आँखें नीची कर लीं, लेकिन मैं मानता हूँ, कि फिर भी मैं कुछ घबडाया हुआ था।

उसने दरवाजा बन्द किया, और स्वय वह एक कुर्सी पर बैठ गई। मै भी बैठ गया। थोड़ी देर तक चुप रही। फिर उसने मुझसे कहा— मैंने जो कुछ भी सोचा है, ईश्वर ने चाहा तो दृढता के साथ उस पर अटल रहूँगी। और यह कहते हुये उसने मेरे हाथ में एक पत्र दे दिया।

मैंने काँपते हुये हाथों से लिफाफा लिया और पत्र निकालकर पढा। बहुत ही संक्षिप्त, किन्तु अर्थ से भरा हुआ पत्र था। ऐसा था, कि मैं सन्नाटे में आ गया। मेरे पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। यह पत्र जिले के हाकिम के नाम था, और इसमें बहुत ही सफाई और सच्चाई के साथ लिखा था, कि मैं बहुत ही सोच विचार कर, चेतना की हालत में 'प्रोसिक एसिड' का एक ड्राम पीकर इसलिये आत्महत्या करती हूँ, कि मुझसे मिस्टर ( मेरा नाम ) ने विवाह का पक्का वादा किया था, लेकिन अब उन्होंने एक दूसरी लड़की के साथ कर लिया और अब मै अपने दिल से लाचार होकर अपनी प्रसन्नता से अपने जीवन की समाप्ति स्वय अपने हाथों से करती हूँ !

मेरे हाथ से घबडाहट और कँपकँपी के मारे पत्र छूट गया। क्योंकि मैंने उसके हाथ में एक शीशी देखी, जिसका काग खुला हुआ था, और मै जानता था, कि उसमें भयानक जहर है। वह जहर, जिसके गले के नीचे उतरते ही आदमी शीघ्र मर जाता है।

बदहवास होकर मैंने हाथ पकडा, और हाँफकर मैने कहा—भगवान के लिये • ••।

उसने बड़ी गम्भीरता से कहा—मेरा जीवन स्वय मेरे ऊपर एक बोझ है। मैं इस ससार से असफल और बिना इच्छाओं की पूर्ति के जा रही हूँ। तुम्हारी और तुम्हारी बीवी के सुखों में हरगिज बाधा बनना नहीं चाहती। हाँ, तुमसे जरूर इतना चाहूँगी, कि मेरी मौत तुम्हारे सामने हो। यही कारण है, कि मैंने ऐसा जहर चुना है, कि तुम भाग भी न सकोगे और मैं मर चुकी हूँगी। मेरी इच्छा केवल एक है, और वह यह, कि मुझे कभी याद मत करना।

मैंने देखा, कि सहसा उसका चेहरा जैसे कठोर हो गया! लोहे की सी एक दृढ़ता उसके चेहरे पर प्रगट होकर रह गई। मैंने घबडाकर कहा—जरा समझ से काम लो।

"अगर समझ से मुझे काम लेना मजूर न होता तो क्या अब तक खड़ी-खड़ी बातें कर रही होती! अब तक तो मेरी लाश ठडी हो चुकी होती। मै समझदारी और बुद्धि से काम लेने के लिये तैयार हूँ लेकिन हाँ, तुम नहीं मानोगे। बोलो किस शर्त पर या सुलह पर तैयार हो?

मैंने कहा—बिलकुल तैयार हूँ, बल्कि कब से कह रहा हूँ।

वह बोली—तो मैं भी तैयार हूँ। तुम दो बीवियाँ रख सकते हो? तुम अपनी प्यारी बीवी के साथ रहना, और मै अलग रहूँगी। तुम्हें मालूम है, कि मै जमीन्दारों के खान्दान की हूँ और मै स्वय भी नौकर हूँ, पैसा कौड़ी मुझे नहीं चाहिये। यह बहुत ही मुलायम शर्त है। अगर तुम्हें यह भी स्वीकार नहीं है तो मै सोच चुकी हूँ •और याद

रक्खो, जहाँ कहीं भी मैं तुम्हें खड़ा देखूँगी, वहीं तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हारी आँखों के सामने ही मैं अपना खातमा कर लूँगी !"

मैं भला क्या जवाब देता ? सन्नाटे में मौन था। उसके स्वर और कथन के ढङ्ग में एक ऐसा जोर था, कि कुछ कहा नहीं जा सकता।

उसने कहा—बोलो··· ··जल्दी बोलो ! मेरी जान लेकर शेष जिन्दगी आराम से बिताना चाहते हो, या दो बीवियों का नर्क चाहते हो ?

मैंने कहा, कि तुम शीशी अलग रख दो, फिर मैं जवाब दूँगा ! उसने दूसरी तरफ मेज के कोने पर शीशी रख दी। उसका शीशी का रखना था, कि मैंने एक झटके के साथ मेज को धक्का दिया। इधर शीशी गिरी, और उधर मैंने वह पत्र टुकड़े-टुकड़े कर डाला। उसने लपककर शीशी उठाई और मुझसे कहा—यह करना चाहते हो !··· तुम्हें मालूम नहीं, कि··· · यह देखो ·····शीशी में अब भी इतना जहर बाकी है, जो दस आदमियों के लिये काफी है······और मेरे पास अभी इसकी दो शीशियाँ और हैं।

मैंने बेहद खुशामद से कहा—मिस सिंह, ईश्वर के लिये तुम मुझे माफ कर दो · मैं लाचार हूँ। क्या लाभ इस प्रकार के विवाह से, कि मैं स्वयं नहीं चाहता ! तुम्हें उनसे नफरत हो जानी चाहिये ! मैं बहुत बुरा हूँ·· मेरी बीवी मर जायगी अगर मैं तुम्हारी शर्त मान लूँ · किसी तरह नहीं बचेगी······सूखकर काँटा हो जायगी · ··· घुल घुलकर मर जायगी ···· उसे तपेदिक हो जायगा !

मिस सिंह ने कहा—फिर एक तो मरेगी ही ! या मैं, और या वह ! और अब तुम्हारी इच्छा है, जिसे चाहो मरने दो ! रही उसके तपेदिक

होने की बात तो मैं जिम्मेदार हूँ। अब तुम जल्दी बताओ · जल्दी बोलो।

मैंने कहा—मैं हरगिज तुम्हारी जान लेना नहीं चाहता, और साथ ही अपनी बीवी भी मुझे बेहद प्यारी है। ईश्वर तुम्हें सुबुद्धि दे।

मिस सिंह बोली—मेरे प्यारे मँगेतर · मेरे प्यारे पति तुम मुझे यह बताओ कि तुम मेरे सवाल का जवाब क्यों नहीं देते तुम मुझे अभी जवाब दो। · · अभी, अभी! तुम मुझसे निकाह करोगे, या मेरी जान लेना चाहते हो?

"मैं तुम्हारी जान तो किसी हालत में लेना नहीं चाहता, यह तो ते समझो। अब रह गया निकाह का मामिला, तो तुम इसके लिये दो महीने की मुहलत दो!"

वह मुसकुरा कर बोली—तुम समझते होगे, कि मैं जोश के भावों से प्रभावित होकर यह सब कुछ रही हूँ और कुछ समय बीत जाने पर यह खटक न रहेगी। अगर तुम्हारा यह विचार है, तो तुम भूलते हो। रह गया उलझन का सवाल, तो मैं उसे स्वीकार करती हूँ। क्योंकि आखिरकार जान सबको प्यारी है। लेकिन मुहलत केवल चार दिन की देती हूँ। आज मङ्गल है, और आज का दिन मैंने छोड़ा। कल्ह से चार दिन पूरे सोचने के लिये ले लो। शनीचर की रात के बारह बजे तक मुझे जवाब दे दो। क्योंकि मैं इतवार को, जो एक पवित्र दिन है, मरना पसन्द करती हूँ। यह याद रक्खो, कि अगर तुमने मेरे साथ कोई चालाकी की तो बेकार है। क्योंकि जान तो मै अपनी दे दूँगी। अधिक से अधिक यह होगा कि तुम्हारे सामने मेरी मौत न होगी। इसके लिये लाचारी है। अत मैं मुहलत देती हूँ। इस बीच में तुम अच्छी तरह आगा-पीछा सोच लो। मुझे सन्देह हो रहा है, कि शायद तुम यहाँ से भाग जाओगे? ऐसी हालत में मैं शनीचर के दिन रात में बारह बजे आत्महत्या कर लूँगी मैं फिर तुमसे यही कहती हूँ, कि मरने के बाद, ईश्वर के लिये तुम मुझे याद मत करना। नहीं तो मुझे कब्र में भी चैन न मिलेगी, और ।

उसने इतना कहा, कि उसकी आवाज भारी हो गई और वह रुवासी-सी होगई। मुँह मोडकर कुर्सी पर बैठ गई, और रूमाल से अपना मुँह पोंछकर रोते हुये कहा—जाइये, खुदा हाफिज!
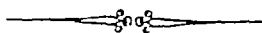
## अब मैं क्या करूँ ?

घर आया तो बीबी का बुरा हाल था। आँसू पोंछकर उसने हाल पूछा। मैंने, जो कुछ बीता था, ज्यों का त्यों सुना दिया। वह सारी कहानी सुनते ही हैरान और परेशान होगई और फिर जो रोना शुरू किया, तो गश आगया। हालत बुरी होगई? अपनी बीबी की सवधिनी का तो अब तक मैंने हाल ही नहीं बताया! उन्होंने मेरी जान कैसी परीशानी में डाल रक्खी थी, कि कह नहीं सकता। बेहोशी के बाद बीबी की हालत और भी अधिक खराब होगई! मेरी हालत क्या हुई और है, इसका अनुमान आप इससे लगा लीजिये कि अगर बीबी आँखों से रोती है, तो मेरा दिल रोता है। वह कहती है, कि अगर तुमने मिस सिंह से विवाह कर लिया तो मैं मर जाऊँगी, और उधर मिस सिंह का अल्टीमेटम!

मेहरबानी करके मुझे जल्द सलाह दीजिये, कि अब मैं क्या करूँ? एक तो केवल इस विचार से जान देने को तैयार है, कि मै मिस सिंह से विवाह कर लूँगा, और दूसरी है, कि जहर की शीशी दिखाकर अपना खून करने की धमकी दे रही है! मतलब कि बहुत ही चिन्ता और सोच में हूँ, कि ऐसे ऐसे समय में क्या करना चाहिये?

शुक्रवार का दिन बीत चुका है·· सनीचर का दिन ढल रहा है·· बीबी को गश पर गश आ रहा है! वह रो रही है, और उधर मेरा दिल रो रहा है।·· मेहरबानी करके जल्द राय दीजिये, कि अब क्या करूँ? बस।

"एक अहमक"

ता० अगस्त १९२५ ई०